फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 74 संख्याः 332 प्रभात जयपुर, बुधवार 3 जुलाई, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

How do Crazy Rich Indians holiday?

Rich Indians rent Ronaldo's yacht or ask Coldplay to sing their playlist.

A JAZZY EVENING IN JAIPUR

A Single Human Ancestor

We all used to have brown eyes. Then, something strange happened around 10,000 years ago.

'वर्ल्ड बैंक की कुल ''पेड अप'' रकम 22 अरब डॉलर है'

पर, दूसरी ओर एलन मस्क को जो व्यक्तिगत ''कम्पनसेशन'' (वेतन आदि) मिला वह 46 अरब डॉलर था

- पर, चौंकाने वाला तथ्य यह है कि, एलन मस्क ने इस ''कम्पनसेशन'' पर ज़ीरो डॉलर टैक्स दिया।
- यह अजीबो-गरीब स्थिति इसलिए है क्योंकि एलन मस्क को यह ''कम्पनसेशन'' स्टॉक (शेयर) के रूप में मिला है।
- और वर्तमान व्यवस्था के अनुसार, जब तक मस्क अपने इस स्टॉक (शेयर) को बाजार में बेच कर, पैसे नहीं अर्जित करते, इस ''कम्पनसेशन'' पर टैक्स नहीं लग सकता।
- ''सुपर रिच'' (अति धनाढ्य), स्टॉक के रूप में ''कम्पनसेशन'' लेते हैं, पर, वो एक डॉलर भी टैक्स के रूप में नहीं देते।
- इन ''सुपर रिच'' की मुनाफे में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जैसे-जैसे उनके शेयर्स की ''वैल्यू'' बढ़ती है। पर, इस वृद्धि पर उनको कोई टैक्स नहीं देना होता। उनकी इस ''आय'' पर अब अर्थशास्त्रियों की निगाह है, क्योंकि अगर इसमें टैक्स लगे तो, इतना पैसा मिल सकता है कि, उससे विकासशील देशों को और पैसा उपलब्ध हो जायेगा, उनके अपने इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजैक्ट्स समय से पूरे हो सकेंगे।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 जुलाई। वैश्विक वित्तीय संरचना और आर्थिक विकास की फण्डिंग में सुपर रिच (अति धनाढ्य) लोगों पर कर लगाना, अन्तर्राष्ट्रीय विचार-विमर्शों में प्रमुख बनता जा रहा है।

बर्लिन के हैनरिश बल्शटिफ्टों द्वारा हाल ही में आयोजित एक बहुराष्ट्रीय विचार-विमर्श में भारतीय प्रतिभागी एवं आर.बी.आई. के पूर्व गवर्नर राकेश मोहन ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि विश्व बैंक की प्रदत्त पूंजी जहां 22 बिलियन डॉलर है, वहीं एलन मस्क का पिछले वर्ष का मुआवजा ही 46 बिलियन डॉलर रहा।

एलन मस्क और दुनिया में उनके जैसे धनाढ्य लोगों के पास विश्व की सबसे मूल्यवान कम्पनियों के शेयर्स के रुप में अकूत दौलत है। इन शेयर्स की कीमतें जैसे-जैसे बढ़ती है, उनका मुनाफा बढ़ता है, लेकिन जब तक इनका बेचान कर मुनाफा बुक ना कर लिया जाए, इन पर टैक्स नहीं लगाया जा सकता। यह टैक्स सिस्टम के व्यवस्थापकों और सार्वजनिक वित्त के विशेषज्ञों के साथ ही सरकारों के लिए एक अच्छा आकर्षण है। यदि विश्व बैंक की पूंजी में 10 बिलियन डॉलर जमा कर और बढ़ा दिया जाए तो उसकी उधार देने की क्षमता 50 बिलियन डॉलर तक बढ़ जाएगी, जिससे कम विकसित देशों के विकास को गति देने में विभिन्न बैंकों के लिए अधिक फण्ड्स उपलब्ध होंगे।

डॉ. मोहन ने कहा कि सुपर रिच लोगों पर 5 प्रतिशत तक का भी टैक्स लगाने से इतनी विशाल मात्रा में धनराशि आ जाएगी कि जिससे अत्यंत कम विकसित देशों के विकास में मदद मिल सकती है, लेकिन उन्होंने अपने इस प्रस्ताव की क्रियान्विती के मार्ग में आने वाली एक वास्तविक अड़चन को भी रेखांकित किया।

मस्क का वेतन मुख्यत: स्टॉक ऑप्शन्स के रूप में होता है। एलन मस्क जब तक इस स्टॉक ऑप्शन को बेचकर अपना मुनाफा ना कमा लें, तब तक उनकी विशालकाय सम्पत्ति पर टैक्स लगाने का कोई प्रावधान नहीं है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांस्टेबल का 24 साल पुराना निलम्बन रद्द

जयपुर, 2 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने हिरासत में मौत के मामले में सुप्रीम कोर्ट से बरी हुए कॉन्स्टेबल को राहत दी है। अदालत ने कॉन्स्टेबल को बर्खास्त करने के झालावाड़ एसपी के 19 अक्टूबर, 2000 और उप गृह सचिव के 27 जनवरी, 2003 के आदेश को रद्द कर दिया है। अदालत ने कॉन्स्टेबल को समस्त काल्पनिक परिलाभों के साथ पुनः सेवा में लेने के आदेश देते हुए उसे सेवा में लेने को कहा है। अदालत ने निर्देश दिए हैं कि

- राजस्थान हाई कोर्ट ने हिरासत में हुई मौत के केस में सुप्रीम कोर्ट से बरी हुए कांस्टेबल को राहत देकर उसकी बर्खास्तगी के 24 साल पुराने आदेश को रद्द कर उसे सभी सेवा लाभ देने के आदेश दिए।

कॉन्स्टेबल को सुप्रीम कोर्ट से बरी होने की तिथि 27 अप्रैल, 2016 के बाद से अब तक की अवधि का वास्तविक परिलाभ अदा किया जाए। जस्टिस गणेश राम मीणा की एकलपीठ ने यह आदेश राजेश कुमार की याचिका को स्वीकार करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता डॉ. विभूति भूषण शर्मा ने बताया कि झालावाड़ के गंगधार थाने में वर्ष 1999 में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

धार्मिक आयोजन में भगदड़ से 116 लोग मरे हाथरस में

अखिलेश यादव व अन्य विपक्षी नेताओं ने इसे शर्मनाक व दुःखद घटना बताया

- विपक्षी नेताओं का कहना है कि, दुःख की बात है कि, इतने बड़े आयोजन में सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की सरकार ने।
- सोशल मीडिया पर भी योगी आदित्यनाथ से सवाल किया जा रहा है कि क्या बुलडोज़र बाबा, साकार हरि उर्फ भोले बाबा के आश्रम पर बुलडोज़र चलाएंगे।
- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भगदड़ में मरे लोगों के परिजनों को दो लाख रुपए और घायलों को 50,000 की सहायता स्वीकृत की। मुख्यमंत्री योगी बुधवार को घटनास्थल का दौरा करेंगे।

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 जुलाई। हाथरस में एक 'सत्संग' के समापन अवसर पर हुई भगदड़ की घटना में लगभग 116 लोगों की दुखद मृत्यु हो गई। भाजपा के लिए इससे अधिक अनुचित समय पर यह घटना नहीं हो सकती थी, क्योंकि उत्तर प्रदेश में पार्टी को चुनावों में हुए भारी नुकसान के ज़ख्म अभी भरे नहीं हैं।

यह भगदड़ की दुर्घटना हाथरस के फुलराई गाँव में हुई है। यहां पर भोले बाबा धार्मिक समागम आयोजित किया गया था। मरने वालों में महिलाएं एवं बच्चे ज्यादा हैं। हादसे में 100 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं।

समाजवादी पार्टी के पिछले शासनकाल के दौरान भी भगदड़ में मृत्यु होने की खबर है और ऐसी ही घटना अस्सी के दशक में कांग्रेस शासित सरकार में भी हुई थी। हालांकि, हाथरस की त्रासदी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के इस दावे पर गहरा दाग लगा दिया कि वे कुशल प्रशासन व्यवस्था उपलब्ध करा रहे हैं। बुलडोजर बाबा के नाम से प्रसिद्ध मुख्यमंत्री से सोशल मीडिया पर प्रश्न पूछा जा रहा है कि क्या योगी सरकार ''साकार हरि उर्फ भोले बाबा'' के आश्रम को गिराने के लिए बुलडोज़र का इस्तेमाल करेगी, जहां पर समागम का आयोजन हुआ था?

चश्मदीदों ने बताया कि, कार्यक्रम स्थल पर जितनी जगह थी उससे कहीं ज्यादा लोग वहां जमा थे। भगदड़ के बाद लोग एक-दूसरे के ऊपर से चढ़कर आगे बढ़ते चले गये। घटनास्थल पर कीचड़ जमा होने के कारण कई लाशें कीचड़ में दब गईं।

सूत्रों के अनुसार प्रवचन खत्म होने के बाद भीड़ नारायण साकार हरि बाबा के पैर छूने के लिए बाबा की ओर दौड़ी और एक स्थान पर फिसलन होने के कारण संतुलन बिगड़ जाने से लोग एक के ऊपर एक गिरते चले गये।

मुख्यमंत्री आदित्यनाथ बुधवार को घटनास्थल का दौरा करेंगे हालांकि राज्य सरकार ने घटना में मारे गए लोगों के निकटतम रिश्तेदारों को मुआवजे के बतौर 2लाख रुपये देने तथा घटना में घायलों को इलाज के लिए 50,000 रुपये देने की घोषणा की है। इसके बावजूद राजनेताओं ने प्रदेश प्रशासन की इस घटना को लेकर तीखी आलोचना की है कि वह इस घटना को रोकने में विफल साबित हुआ है।

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सरकार पर निशाना साधा और कहा कि जब सरकार को यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राज्यपाल ने मु.मंत्री ममता बनर्जी पर मानहानि का केस दर्ज किया हाई कोर्ट में

मु.मंत्री का खेमा कुछ ढीला पड़ा मुकदमा दायर होने के बाद

- तृणमूल कांग्रेस के प्रवक्ता ने कहा कि, ममता बनर्जी प्रदेश की गृह मंत्री भी हैं, और उनके पास एक महिला कर्मचारी की शिकायत आई थी, उसी शिकायत के संदर्भ में उन्होंने राजभवन में महिलाएं सुरक्षित न होने के बारे में टिप्पणी की थी।
- ढीला पड़ने से पहले तृणमूल के कार्यकर्ता व नेता बड़े आक्रामक हो रहे थे। राजभवन व राज्यपाल के आचरण के बारे में, व चटखारे लेकर, विस्तार से सुना रहे थे कि, कैसे राज्यपाल ने महिला कर्मचारी से यौन शोषण जैसा आचरण किया था।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 जुलाई। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी.वी. आनन्द बोस ने आज एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ कलकत्ता हाईकोर्ट में मानहानि का केस दायर कर दिया।

राज्यपाल ने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि राज्य की मुख्यमंत्री उनकी संवैधानिक सहयोगी हैं और इस संबंध को एक कानूनी दर्जा प्राप्त है, लेकिन फिर भी उन्होंने राज्यपाल को लेकर अपमानजनक टिप्पणियां की हैं और राज्यपाल को मानहानि का केस दायर करने का पूरा अधिकार है।

कलकत्ता हाईकोर्ट में दायर मानहानि केस की खबर पर प्रतिक्रिया देते हुए तृणमूल कांग्रेस प्रवक्ता कुणाल घोष लगता है, बैक फुट पर आ गए हैं। उन्होंने दबे लहजे में कहा कि शिकायतें पहले मुख्यमंत्री तक पहुंचीं और फिर उन्होंने उस संदर्भ में कुछ टिप्पणियां कर दीं।

ममता बनर्जी ने सार्वजनिक रुप से कहा था कि राज्यपाल से राजभवन जाकर मिलने का साहस उनमें नहीं है और यदि जरुरी हुआ तो उनसे खुले में मिलेंगी। उनके कहने का आशय यह था कि राजभवन के भीतर वे अपनी मान-मर्यादा को लेकर भयभीत हैं। उनकी टिप्पणी में इस प्रकार का संदर्भ भी था। राज्य पुलिस ने कहा कि उन्हें एक महिला श्रमिक से यह शिकायत प्राप्त हुई थी कि राजभवन परिसर में राज्यपाल के पैर छूने के बाद उसका पीछे से आलिंगन किया गया।

महिला की शिकायत थी कि राजभवन में राज्यपाल ने जब उससे यह कहा कि वह उनसे आकर मिले, तो ऐसा करने पर उसकी गरिमा का हनन किया गया। एक संक्षिप्त मुलाकात के बाद जब वह वापस जाने लगी, तब राज्यपाल ने उसका आलिंगन किया।

राज्य पुलिस ने उसके बाद राजभवन के कई अन्य स्टाफकर्मियों और कुछ अधिकारियों को पूछताछ के लिए बुलाया। राज्यपाल ने इस प्रकरण में किसी भी तरह की जाँच और राजभवन के स्टाफकर्मियों से पूछताछ करने पर रोक लगा दी थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ए.सी.बी. ने हाई कोर्ट को बताया, मेयर मुनेश दोषी

जयपुर, 2 जुलाई। जयपुर शहर की हेरिटेज नगर निगम मेयर मुनेश गुर्जर व उनके पति सुशील गुर्जर सहित अन्य के खिलाफ भ्रष्टाचार से जुड़े मामले में एसीबी ने अदालती आदेश की पालना में मंगलवार को हाईकोर्ट में तथ्यात्मक

- ए.सी.बी. ने हाई कोर्ट में मेयर मुनेश व उनके पति सुशील गुर्जर के भ्रष्टाचार के मामले की प्रारंभिक जाँच रिपोर्ट हाई कोर्ट को सौंप दी है। रिपोर्ट में प्रारंभिक जाँच में मेयर मुनेश, उनके पति व अन्य के खिलाफ जुर्म प्रमाणित माना गया है।

रिपोर्ट पेश की है, जिसे रिकॉर्ड पर लेते हुए अदालत ने मामले की सुनवाई छह सप्ताह बाद तय की है। जस्टिस नरेन्द्र सिंह की एकलपीठ ने यह आदेश सुधांशु सिंह की आपराधिक याचिका पर दिए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल ने ओम बिड़ला को पत्र लिखकर निराशा जताई, जिस तरह से उनके भाषण को सदन की कार्यवाही से निकाला गया

राहुल गांधी ने यह भी लिखा पत्र में कि, लोकसभा की कार्यवाही के रूल 380 के तहत, स्पीकर को अधिकार है कि, किसी भी सांसद के भाषण को कार्यवाही से निकलवा सकते हैं, अगर भाषण आपत्तिजनक है।

- राहुल गांधी ने अपने पत्र में यह भी लिखा कि, उनके भाषण में कोई आपत्तिजनक बात नहीं थी, अतः रूल 380 उन पर लागू नहीं होता।
- उन्होंने यह भी लिखा कि, किसी सांसद के भाषण के सदन की कार्यवाही से निकालने से, संसद की प्रजातंत्रीय व्यवस्था पर आघात होता है तथा साथ ही सांसद की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन है।
- राहुल गांधी ने यह भी लिखा कि, रूल 380 को पक्षपाती तरीके से लागू किया गया है। अनुराग ठाकुर के भाषण में कई असत्य आरोप लगाये गये हैं, जिनका कोई आधार नहीं है, पर, उनके भाषण का केवल एक शब्द कार्यवाही से निकाला गया, पर, उनके (राहुल गांधी के) भाषण का काफी बड़ा हिस्सा, लगभग आधे से ज्यादा, सदन की कार्यवाही से निकला गया।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 जुलाई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला को लिखे एक पत्र में लोकसभा में विपक्ष के नेता व कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने इस बात को लेकर चिन्ता प्रकट की है कि सोमवार को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान उनके द्वारा दिए गए भाषण में से कुछ महत्वपूर्ण अंशों को सदन की कार्यवाही के रिकॉर्ड से हटा दिया गया है।

इस कार्यवाही पर दु:ख और निराशा प्रकट करते हुए गांधी ने कहा कि जिस तरीके से उनकी टिप्पणियों को अधिकारिक कार्यवाही से हटाया गया है उससे यह संकेत मिलता है कि इस तरह की कार्यवाही संसदीय लोकतंत्र के सिद्धांतों का तथा निर्वाचित जनप्रतिनिधि के अधिकारों का हनन होता है।

संसदीय परम्पराओं व प्रक्रियाओं के विषय विशेषज्ञों व वरिष्ठ जानकारों को इस बात से आश्चर्य हुआ है कि लोकसभा अध्यक्ष सदन के पहले दिन से ही पक्षपात पूर्ण भूमिका निभा रहे है।

इससे यह बिल्कुल साफ है कि मोदी सरकार विपक्ष के साथ जंग की मुद्रा में है और वह विपक्ष के प्रति अपने अड़ियल रवैये को बदलने के लिए तैयार नहीं है परन्तु सदन के पीठासीन अधिकारी से अपेक्षा की जाती है कि वे एक संयमित नियंत्रक की भूमिका को अदा करें तथा ईमानदारी से मध्यस्थता करें परन्तु बिड़ला इसके ठीक विपरीत आचरण कर रहे है।

विपक्ष के नेता ने माना कि आसन को यह अधिकार है कि वह लोकसभा में कामकाज का संचालन व प्रक्रिया के नियम 380 के अनुसार कुछ टिप्पणियां रिकॉर्ड से हटा सकते हैं, राहुल ने इस पर तर्क दिया कि उनके भाषण से हटाया गया अंश तथाकथित नियम का उल्लंघन नहीं करता है।

गांधी ने लिखा कि ''मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भाषण का जो भाग विचारणीय था उसे निष्कासन की आड़ में कार्यवाही के रिकॉर्ड से हटा दिया गया।''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दो हजार के 97.87 प्रतिशत नोट रिज़र्व बैंक के पास वापस आए

नयी दिल्ली, 2 जुलाई (वार्ता)। रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया ने कहा है कि, 2000 रुपये के 97.87 प्रतिशत नोट उसके पास वापस आ गए हैं। ये नोट वैध मुद्रा बने रहेंगे।

रिजर्व बैंक ने एक विज्ञिप्त में कहा कि 19 मई को कारोबार की समाप्ति पर

- रिजर्व बैंक ने एक विज्ञप्ति में कहा कि 19 मई को कारोबार की समाप्ति पर 2000 रुपये के बैंक नोटों का कुल मूल्य 3.56 लाख करोड़ रुपये था। जिसमें से 97.87 प्रतिशत नोट आर. बी. आई. को पुनः मिल चुके हैं।

2000 रुपये के बैंक नोटों का कुल मूल्य 3.56 लाख करोड़ रुपये था। अब 28 जून को कारोबार की समाप्ति कुल 7581 करोड़ रुपये के 2000 रुपये के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जयपुर में एयरोसिटी, कोटा में ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट बनेगा

मुख्यमंत्री भजनलाल की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल ने महत्वपूर्ण निर्णय लिये

- किशनगढ़, झालावाड़, भीलवाड़ा में फ्लांइग स्कूल खुलेंगे।
- अक्षय ऊर्जा के लिये भूमि आवंटन नियमों में संशोधन।
- गहलोत सरकार के गाँधी वाटिका अधिनियम को समाप्त करने के लिये विधेयक लाया जायेगा।

जयपुर, 2 जुलाई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में मंगलवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित मंत्रिमण्डल की बैठक में कई मुद्दों पर फैसले लिए गए, जिनमें प्रदेश में विमानन क्षेत्र में आधारभूत ढांचे का विकास, बिजली क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दृष्टि से नियमों में संशोधन और गांधी दर्शन संग्रहालय के संचालन से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय शामिल हैं। उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचन्द्र बैरवा, उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ एवं संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए मंत्रिमंडल में लिए गए निर्णयों की जानकारी दी।

उप मुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमचन्द्र बैरवा ने बताया कि दानदाताओं को सम्मानित करने एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से चूरू जिले के राजकीय महाविद्यालय, साहवा का नामकरण मोहनी देवी चाचान राजकीय महाविद्यालय, साहवा, बाड़मेर जिले के राजकीय महाविद्यालय, धोरीमन्ना का नामकरण शांति देवी उदयराज गांधी राजकीय महाविद्यालय, धौरीमन्ना एवं बीकानेर जिले के राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीडूंगरगढ़ का नामकरण राजकीय सदू देवी पारख कन्या महाविद्यालय, श्रीडूंगरगढ़ करने की स्वीकृति मंत्रिमंडल ने दी है।

उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने बताया कि राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में अक्षय ऊर्जा नीति, 2023 एवं राजस्थान भू-राजस्व (अक्षय ऊर्जा पर आधारित विद्युत संयत्रों की स्थापना हेतु राजकीय भूमि का आवंटन) नियम, 2007 के प्रावधानों में संशोधन किये जाने संबंधी प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। उन्होंने बताया कि अब तक राज्य सरकार की ओर से विद्युत क्षेत्र में करीब सवा दो लाख करोड़ रुपए के एमओयू किए जा चुके हैं। अब इन संशोधनों से प्रदेश में बिजली क्षेत्र में 2 लाख करोड़ के नए निवेश का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्होंने कहा कि राज्य में उपलब्ध सौर विकिरण का समुचित उपयोग करने हेतु आवंटन नियमों में प्रासंगिक बदलाव किया गया है जिससे सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए भूमि आवंटन डीएलसी दर के 7.5 प्रतिशत पर किया जा सकेगा। साथ ही, अब 2 हैक्टेयर भूमि पर एक मेगावाट की दर से सौर ऊर्जा उत्पादन हो सकेगा।

कर्नल राठौड़ ने बताया कि प्रदेश में क्षेत्रीय हवाई संपर्क में सुधार करने और पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नागरिक विमानन नीति 2024 को मंत्रिमंडल ने मंजूरी प्रदान की है। यह नीति विमानन प्रशिक्षण सुविधाओं, विमानन रखरखाव सेवाओं को बढ़ाने और एयरोस्पेस गतिविधियों को विकसित करने पर केन्द्रित है।

इसके अंतर्गत किशनगढ़, झालावाड़ और भीलवाड़ा में फ्लाइंग स्कूल खोले जाएंगे और कोटा में ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट बनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि, जयपुर में एयरोसिटी बनाई जाएगी, जिसमें होटल, रेस्त्रां सहित विभिन्न आधारभूत सुविधाएं विकसित की जाएंगी। प्रदेश के विभिन्न हवाई अड्डों पर कार्गो सुविधा प्रारम्भ की जाएगी।

संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने पत्रकार वार्ता में बताया कि गांधी वाटिका न्यास, जयपुर अधिनियम-2023 को समाप्त करने के लिए विधानसभा में विधेयक लाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि 2023 में लाए गए अधिनियम की विभिन्न धाराओं में उपाध्यक्ष को असीमित वित्तीय शक्तियां दी गई थीं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि गांधी दर्शन संग्रहालय का संचालन जारी रहेगा तथा अन्य विभागों के अधीन संचालित संग्रहालयों का संचालन संबंधित विभाग द्वारा ही किया जा रहा है, ऐसी स्थिति में गांधी दर्शन संग्रहालय के संचालन एवं प्रशासनिक क्रियान्वयन हेतु पृथक गांधी वाटिका न्यास की आवश्यकता नहीं है।

6 आई.ए.एस. अफसरों का तबादला

जयपुर, 2 जुलाई (कासं)। राजस्थान सरकार ने मंगलवार को भारतीय प्रशासनिक सेवा के 6 अधिकारियों के तबादले किए हैं। आदेश के मुताबिक प्रवीण गुप्ता को मुख्य

- नवीन महाजन को राज्य का मुख्य निर्वाचन अधिकारी बनाया गया है तथा पूर्व मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता को पी.डब्ल्यू.डी. में भेज दिया गया है।

निर्वाचन अधिकारी के पद से हटाकर सार्वजनिक निर्माण विभाग (पी.डब्ल्यू.डी.) में प्रमुख शासन सचिव के पद पर लगाया है। संदीप वर्मा को पी.डब्ल्यू.डी. से हटाकर राजस्थान राज्य भंडारण निगम में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का जिम्मा दिया गया है। नवीन महाजन को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नहीं है बल्कि स्वयं को अज्ञानी जानना ही उसका विशेषाधिकार है। –राधाकृष्णन

आज़ादी का अमृतकाल आ गया मगर असमानता नहीं मिटी

संविधान में समानता और न्याय को स्वतंत्र भारत का आदर्श बना देने के बाद भी समता वाले राज्य और समाज की रचना अब भी दिवास्वप्न ही बनी हुई है। सबको बराबरी का हक़ और संपन्नता में सबकी बराबर भागीदारी की पोल तो सरकारी आंकडे ही खोलते हैं। ये आंकड़े बताते हैं कि जहां गरीबी और असमानता व्यापक रूप से मौजूद है वहीं एक छोटा सा तबका धन-धान्य में खेल रहा है। भारत में सिर्फ दस प्रतिशत लोगों के पास देश की आधे से भी ज्यादा 57 प्रतिशत संपत्ति है जबकि देश की आधी आबादी सिर्फ 13 प्रतिशत संपत्ति पर गुजारा करने को मजबूर है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि राजनैतिक दलों की प्राथमिकता केवल सत्ता पाना रह गया है। सदियों से चले आ रहे सामंती व्यवहार वाले समाज को बदल कर उसे लोकतान्त्रिक मूल्यों से पोषित करने का काम राजनेताओं और राजनीति ने बहुत पहले ही छोड़ दिया। दुनिया में पहली बार राजनीति को पवित्र बनाने का प्रयत्न करने वाले महात्मा गांधी ने इसीलिए यह तज़बीज दी थी कि कांग्रेस को अपने को बदल कर ज़मीनी स्तर पर समाज को बदलने के काम करने में लग जाना चाहिये। वे जानते थे कि एक बराबरी वाला समाज बनाने के लिए समाज सेवा करने वालों को धरती पर जड़ों में काम करके लोगों के दिलों को बदलना होगा। बदलना भी जोर जबरदस्ती से नहीं बल्कि प्रेम से। लेकिन ब्रितानवी शासन की रुखसत के बाद जब गणतांत्रिक भारत बना तब संविधान की किताब तो हम भारत के लोगों के हाथ में आ गई मगर आगे की राह दिखाने के लिए गांधी न रहे और राजनीति भटकती ही चली गई। यह विडंबना ही है कि संवैधानिक की बेहतरीन व्यवस्थाओं के बावजूद सामाजिक और आर्थिक समानता वाला समाज देश के अमृतकाल के बाद भी नहीं बन सका है। अवसरों तथा आर्थिक असमानता तो सर्वत्र नज़र आती है। राजनीति से सेवा का भाव तिरोहित हो गया है। आज राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर लोकतान्त्रिक संस्थाओं का जैसा स्वरूप बन गया है वह राजनीतिक अर्थव्यवस्था की प्रक्रिया का ही परिणाम हैं। जब यह कहा जाता है कि देश में लोकतंत्र कमजोर हो रहा है तब उसका आशय संविधान प्रदत्त लोकतांत्रिक संस्थाओं के क्षरण से होता है जिनमें संसद तथा विधानसभाएं भी शामिल है। लोकसभा तथा राजस्थान विधान सभा का पिछला पूरा कार्यकाल सदनों के उपाध्यक्ष का चुनाव किये बिना बीत गया, किसी के कोई फर्क नहीं पड़ा। कहने को तो लोकतंत्र संविधान की किताब से चलता है मगर असल में वह उसके नियंताओं की नीयत से चलता है। लोकतंत्र को तानाशाही हथकंडों से नहीं चलाया जा सकता। वह अत्यंत मुलायम सहमति से चलता है। लोकतंत्र से हमने सत्तावादी राजतंत्र जैसी पुरानी सामंती व्यवस्थाओं से आजादी पाने का हक़ पाया है। संविधान ने अपने अनुच्छेद 15 के जरिए भारत के लोगों को बुनियादी अधिकार दिए हैं जिसमें सब नागरिकों के बीच समानता की उद्घोषणा है। लेकिन समस्या आती है प्रतिस्पर्धी राजनीति में वर्ग, जाति और सामाजिक-धार्मिक समुदायों से जो राजनीति में घुन की तरह लग गए हैं। इन सारे वर्गों में उनके आंतरिक स्वरूप में भी भेदभाव वाले कड़े पदानुक्रम मौजूद हैं। न केवल बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समूहों के बीच, बल्कि कमजोर समुदाय के भीतर भी पदानुक्रम असमानता है जो संवैधानिक प्रावधानों से नहीं सामाजिक अभियानों से ही हटाई जा सकती है, मगर राजनेताओं ने अपने हित साधने के लिए चुनावों में इस सामाजिक भेद का उपयोग करते हुए उसे अनौपचारिक रूप से संस्थागत बना रखा हैं। समतावादी समाज की रचना में राजनेताओं की कोई रुचि नहीं नहीं नज़र आती। इससे समस्त वैधानिक व्यवस्थाओं के बावजूद अंत्योदय की बात किताबों में पढ़ने तक सीमित रह जाती है और व्यवहार में नहीं आती।

संविधान राज्य से अपेक्षा करता है कि वह सबके साथ समता से व्यवहार करेगा। किन्तु विडंबना यह है कि राज्य ने खुद वर्गों के पैमाने बना दिए हैं। जैसे वह एक वर्ग सरकारी कर्मियों के जीवन यापन के लिए अलग पैमाना तथा दूसरे वर्गों के लिए अलग पैमाना रखता है। देश की 70 प्रतिशत जनता गरीब है, यह प्रधानमंत्री भी मानते हैं। कोई पूछे कि ऐसे में सरकारी कर्मचारियों, निर्वाचित जनप्रतिनिधियों तथा कॉर्पोरेट जगत के लोगों की प्रतिव्यक्ति आय गरीबों की प्रतिव्यक्ति आय से कितनी गुना अधिक है और क्यों है? मानव विकास के संकेतक लगातार इस आर्थिक असमानता की तरफ हमारा ध्यान खींचते हैं लेकिन दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने तथा उच्च आर्थिक विकास दर के बावजूद असमानता की यह खाई बनी हुई है। नई बाज़ारोन्मुख अर्थव्यवस्था में देश के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूह अपने-अपने लिए कुछ लाभ प्राप्त करने और उन्हें सुरक्षित रखने के प्रयत्न में ही लगे नज़र आते हैं। यह भी सामने दिखता है कि राजनीतिक लामबंदी के माध्यम से राजनेता अपने-अपने समुदायों के नाम पर खुद अपने और अपने परिवारों के हितों की रक्षा करने की जुगत में लगे रह कर गैरसमतावादी समाज को पुष्ट करने में लगे रहे हैं। जातियों के समूहों को भी इसी में अपना हित लगने लगता है, भले ही मलाई उन जातियों के नेता ले उड़ें। नागरिक समाज के संगठन भी इसी बहती गंगा में डुबकी लगा रहे हैं। इस खेल का सैद्धांतिक ढांचा ऐसा है कि जिनके पास अधिक शक्ति है वे लाभ का अनुपातहीन हिस्सा हासिल कर लेते हैं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि आज भी भारतीय समाज में राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असमानताएं बनी हुई हैं। जिनके पास सत्ता और धन की ताकत है सत्ता की संरचनाएं उनके अनुकूल होती चली जाती हैं। इसीलिए सभी लोग सत्ता के गलियारे में अपनी जगह बनाने की जुगत में लगे रहते हैं। स्पष्ट रूप से, वर्तमान संस्थानों की कार्यप्रणाली आर्थिक शक्ति के असमान वितरण और राजनीतिक शक्ति तक आम जन की असमान पहुंच से संचालित होती है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक हैसियत में भी असमानता अपनी जड़ें जमा लेती है। इसने एक दुष्चक्र पैदा कर दिया है। असमान शक्ति संरचना संस्थानों की प्रकृति और कार्यप्रणाली और उनकी नीतियों को प्रभावित करती है। यह स्थितियां देश की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में गरीब की लोकतांत्रिक भागीदारी को बाधित करती हैं।

भारत में सिर्फ दस प्रतिशत लोगों के पास देश की आधे से भी ज्यादा 57 प्रतिशत संपत्ति है जबकि देश की आधी आबादी सिर्फ 13 प्रतिशत संपत्ति पर गुजारा करने को मजबूर है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि राजनैतिक दलों की प्राथमिकता केवल सत्ता पाना रह गया है। सदियों से चले आ रहे सामंती व्यवहार वाले समाज को बदल कर उसे लोकतान्त्रिक मूल्यों से पोषित करने का काम राजनेताओं और राजनीति ने बहुत पहले ही छोड़ दिया।

लोकतंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है, जिसमें कोई भी बालिग नागरिक निर्वाचन में खड़ा हो सकता है या खड़े हुए व्यक्तियों में से किसी एक को अपनी स्वेच्छा से मत देकर अपना प्रतिनिधि चुन सकता है। इसे लोकतंत्र में नागरिक की शक्ति का प्रयोग कहते हैं। नागरिक जब मतदान करता है तो वह अपना शासक नहीं चुन रहा होता है, अपना प्रतिनिधि चुन रहा होता है जिससे वह अपेक्षा होती है कि वह संसद या विधान सभाओं में जाकर नागरिक जो चाहते हैं वह बात करे। आज़ादी के बाद गणतांत्रिक व्यवस्था में ऐसा नहीं हो पाया है। निर्वाचित प्रतिनिधि निर्वाचित होकर शासक बन बैठता है और अपेक्षा करता है कि नागरिक उसके हिसाब से व्यवहार करे। यह लोकतंत्र के शीर्षासन की स्थिति है। इस देश का कोई नागरिक नहीं चाहता कि उसका निर्वाचित प्रतिनिधि सदनों की कार्यवाही बाधित करे, वहां शोर मचाए या धरना दे। देश का नागरिक चाहता है कि उसका प्रतिनिधि विधि निर्माता के रूप में प्रत्येक बहस में गंभीर भागीदारी करे और सदनों में नागरिकों के जीवन से जुड़े मुद्दों के हल के लिए हां पक्ष और ना पक्ष के बीच मोटी सहमति हो, न कि झगड़ा हो। कोई उलझा हुआ मुद्दा हो तो निर्वाचित प्रतिनिधि नागरिकों के पास आये और जानें कि आम अवाम क्या चाहता है। मगर यहां सवाल स्वाभाविक ही उठ खड़ा होता है कि निर्वाचन की संविधान सम्मत व्यवस्था के बाहर प्रबुद्ध नागरिक समाज के केंद्र कहां हैं? भारतीय समाज धर्मों, जातियों और पंथों में बिखरा हुआ है। निर्वाचन प्रणाली में इस बिखराव का चतुर राजनेता लाभ उठाते हैं और एक सुंदर लोकतंत्र सपना ही बना रह जाता है। इस बिखराव से निर्वाचित राजनेताओं पर नागरिकों का अंकुश नहीं रह पाता। चुनाव के लिए प्रत्याशी चुनने में भी नागरिकों की कोई भूमिका नहीं होती। जनतान्त्रिक समाज की आदर्श व्यवस्था तो यह होती है कि नागरिक ही अपने प्रत्याशी चुनें और फिर बहुमत से उनमें से किसी एक को सदनों में भेजे। मगर प्रत्याशियों के चयन का काम राजनैतिक दल करते हैं और नागरिकों को उन्हीं के चयन पर मतदान करना होता है। जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति की ललकार के बाद सभ्य समाजों ने ऐसे थोड़े बहुत प्रयास जरूर किये कि नागरिक अपने प्रत्याशी खुद चुनें। मगर दलविहीन राजनीति का यह प्रयोग सम्पूर्ण क्रांति की भांति असफ़ल रहा। इसके लिए जिस प्रकार की ज़मीन तैयार करने की जरूरत होती है वैसा करने वाला कोई सशक्त संगठन नहीं बन पाया। जेपी आंदोलन से निकल कर राजनीति में गये युवाओं में से भी अनेक बाद में जाकर बुरे राजनेता साबित हुए। पिछले दो दशकों में ऐसे आंदोलन भी उभरे जिनसे लोगों को लगा कि नई सुबह आने ही वाली है, मगर उन्हें निराश ही हाथ लगी। लोकतंत्र की सफलता के लिए आम अवाम का भी संजीदा और समझदार होना अपेक्षित होता है। हमारे देश में अवाम की वैसी शिक्षा कभी हो नहीं पाई। जनता को लोकतान्त्रिक व्यवस्था के लिए जागरूक करने में राजनीतिक दलों व उनके कार्यकर्ताओं की प्रमुख भूमिका होती है। ऐसा नेतृत्व का उभरना तभी संभव है जब आमजन लोकतन्त्र और राजनीति के प्रति उदासीनता त्याग कर आभासी सोशल मीडिया पर आलोचनाओं और बहसों से आगे बढ़कर ज़मीनी स्तर पर काम करे और राज्य के संचालकों से दृढ़ता से सवाल करे और जवाब मांगे।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

विश्वविद्यालय वैश्विक चुनौतियों को स्वीकार करते हुए रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों का निर्माण करें : राज्यपाल

कोटा विश्वविद्यालय का 10वां दीक्षांत समारोह आयोजित

कोटा, (निसं)। राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा है कि विश्वविद्यालय वैश्विक चुनौतियों को स्वीकार करते हुए रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों का निर्माण करें। उन्होंने विश्वविद्यालयों को कौशल विकास से संबंधित शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए 'विकसित भारत 2047' की संकल्पना को साकार करने का आव्हान किया।

राज्यपाल मंगलवार को कोटा विश्वविद्यालय के 10वें दीक्षांत समारोह में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्या वाचस्पति अभ्यर्थियों को गोल्ड मेडल एवं उपाधियां प्रदान करने के बाद संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में कन्या छात्रावास, धनवन्तरी भवन एवं बॉस्केबॉल, वॉलीबॉल, टेनिस कोर्ट का लोकार्पण भी किया। राज्यपाल ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि नव-जीवन का प्रारंभ है। यह वह अवसर है जब विद्यार्थी प्राप्त शिक्षा का राष्ट्र और समाज के उत्थान में उपयोग करने के लिए तैयार होता है। दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने साक्षी जैन को कुलाधिपति पदक, पूजा साहू को कुलपति पदक जबकि 60 छात्र-छात्राओं स्वर्ण पदक एवं 49 विद्यावाचस्पति उपाधियां प्रदान की। कोटा विश्वविद्यालय की ओर से कुल 88 हजार 692 उपाधियां प्रदान की गई हैं। इनमें 43 हजार 677 छात्र (49 प्रतिशत) एवं 45 हजार 15 छात्राएं (51 प्रतिशत) शामिल हैं। राज्यपाल ने 51 फीसदी छात्राओं के उपाधि हासिल करने एवं शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने पर खुशी जताते हुए कहा कि बेटियों को अवसर प्रदान किए जाएं तो वे किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। छात्राएं अपनी प्रतिभा का समुचित सदुपयोग कर निरंतर आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने आव्हान किया कि छात्र-छात्राएं सामूहिक सहयोग से विकसित भारत का संकल्प पूरा करें। उन्होंने कहा कि इस समय हमारा देश अपने अमृत काल में है।

राज्यपाल कलराज मिश्र ने कोटा विश्वविद्यालय में 60 छात्र-छात्राओं को स्वर्ण पदक एवं 49 विद्यावाचस्पति उपाधियां प्रदान की।

जी-20 की अध्यक्षता भारत को मिली है और इस कार्यकाल ने भारत को एक महाशक्ति के रूप में उभारा है। भारत इस समय विश्व की 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। भारत के भविष्य को गढ़ ने के सबके प्रयास एक नए भारत की नींव का निर्माण करने वाले है। मुझे विश्वास है कि 2047 में भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में समुचित विश्व का नेतृत्व करेगा।

राज्यपाल ने कहा कि नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति कौशल विकास आधारित शिक्षा पर केन्द्रित है। यह रोजगारोन्मुखी होने के साथ चरित्र-निर्माण, ज्ञान-विज्ञान व आध्यात्मिक विकास के साथ देश और समाज की सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा और संरक्षण से जुड़ी है। कोटा विश्वविद्यालय सहित प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत क्रेडिट आधारित सेमेस्टर प्रणाली लागू करने तथा इस ग्रेडिंग प्रणाली में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के साथ-साथ नैतिक मूल्य आधारित कौशल विकास से संबंधित पाठ्यक्रमों पर विशेष ध्यान देने की उन्होंने सराहना की।

उन्होंने कहा कि कोटा विश्वविद्यालय ने स्वयंपाठी विद्यार्थियों के लिए सतत् मूल्यांकन को जोड़कर प्रदेश में एक अनूठी पहल की है। समारोह की शुरूआत में राज्यपाल ने संविधान की उद्देशिका एवं मूल कर्तव्यों का वाचन किया। दीक्षान्त भाषण में वनस्थली विद्यापीठ की कुलपति प्रो. ईना आदित्य शास्त्री ने कहा कि शिक्षा का ध्येय मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना नहीं है। इसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य का चारित्रिक निर्माण तथा ज्ञान के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का विकास है। विश्वविद्यालय की कुलपति, प्रो नीलिमा सिंह ने विश्वविद्यालय प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की शुरूआत में कुलपति प्रो.नीलिमा सिंह ने राज्यपाल का स्वागत किया। अंत में कुलसचिव प्रो.रीना दाधिच ने धन्यवाद ज्ञापित किया। दीक्षान्त समारोह में वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति प्रो.एसके सिंह, कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.अभय कुमार व्यास सहित कला, समाज विज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा, विधि संकाय व जीव विज्ञान के अधिष्ठाता उपस्थित थे।

ग्वार की अवैध खेती से वन्यजीवों के संरक्षण में आई बाधा

जैसलमेर, (नि.सं.)। जैसलमेर जिले में वन विभाग की जमीन पर अतीकर्मियों द्वारा ग्वार की खेती कर के अरबों रूपये कमाने के दौरान वन्यजीवों के जीवन पर भारी संकट आया उस दौरान ग्वार के भाव 6 गुना बढ कर 3सौ रुपए प्रति किलोग्राम हो जाने से स्वार्थी लोगों ने वन विभाग के कर्मचारियों से मिल कर वन्यजीवों की जमीन को भी नही बक्सा सरकारी जमीन पर वन्यजीवों के शत्रु बन कर कानून को अपने हाथ में लेकर गोडावण व अन्य जीवों के सरंक्षण को धता बताते हुए कृत्य करने वालों को कोई आंच नहीं आई।

हालांकि वन्य एरिया में लगी हाइटेंशन लाइनें भी गोडावण की मौत के लिए जिम्मेदार है। जिसे लेकर वन्यजीव प्रेमियों द्वारा कई बार विरोध भी जताया जा चुका है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने इन हाइटेंशन लाइनों को अंडरठाउंड करने को लेकर कई बार पाबंद भी किया है। लेकिन इसके बावजूद अब तक हाइटेंशन लाइनों को अंडरग्राउंड नहीं किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने गोडावण व अन्य जीवों के सरंक्षण के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन करके जैसलमेर भेजा। सुप्रीम कोर्ट ने इस समिति का गठन कर उन्हें वन्यजीवों के संरक्षण के उपायों के साथ ही ओवरहेड व अंडरग्राउंड केबल व दायरे का निर्धारण करने का काम सौंपा। 30 जून को समिति के पदाधिकारी जैसलमेर पहुंचे । उन्होंने सोमवार को फील्ड विजिट कर अपनी रिपोर्ट तैयार की।

गौरतलब है कि अब तक हाइटेंशन लाइन से टकराने पर करीब 9 गोडावणों की मौत हो चुकी है। 2021 में पर्यावरणविद और वन्यजीव विशेषज्ञ एमके रंजीत ने एक रिट याचिका पेश कर समिति के गठन की बात की थी। उन्होंने ऊर्जा संयंत्रों के पास हाइटेंशन वाले तारों से टकराने पर वन्यजीवों व गोडावण की मौत पर प्रकाश डाला था। जिस पर मामले में संज्ञान लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने इस साल मार्च में सात सदस्यीय कमेटी बनाने का निर्देश दिया था।जैसलमेर के डीएनपी एरिया के आस पास सोलर प्लांट आ गए हैं। जिससे नए जीएसएस का निर्माण किया जा रहा है। इन्हीं जीएसएस तक बिजली आपूर्ति करने के लिए हाइटेंशन लाइनें बिछाई गई है। डीएनपी क्षेत्र में कुछ जगह अंडरग्राउंड केबल करना असंभव है।

ऐसे में उन जगहों को चिन्हित कर वहां बर्ड डायवर्टर लगाएं जाएं। हालांकि कुछ जगह बर्ड डायवर्टर लगाए जा चुके हैं। लेकिन कुछ जगह अंडरग्राउंड केबल भी बिछाई जा सकती है। वन्यजीवों के लिहाज से हाइटेंशन लाइन उनकी उड़ान में बाधा बन रही है। वहीं जैसलमेर के लिहाज से सोलर प्लांट भी काफी महत्वपूर्ण है।

सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून के निदेशक राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड के सदस्य डॉ हरिशंकर सिंह, पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ निरंजनकुमार वासु, पूर्व मुख्य वन्यजीव वार्ड और महाराष्ट्र प्रधान मुख्य वन संरक्षक बी मजूमदार, कार्बेट फाउंडेशन उपनिदेशक डॉ देवेश गढ़वी, ऊर्जा विभाग के नवीन और नवीनीकरण संयुक्त सचिव ललित बोहरा तथा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के संयुक्त सचिव को जैसलमेर भेजा है। इनके साथ केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण के सदस्य अशोककुमार राजपुर व सेंट्रल ट्रांसमिशन यूटिलिटी ऑफ इंडिया के मुख्य परिचालन अधिकारी पीसी गर्ग को विशेष आमंत्रित सदस्य बना कर भेजा है। गोडावण संरक्षण के लिए गठित विशेषज्ञ टीम ने मुख्य रूप से बिजली लाइनों पर स्थापित बर्ड डायवर्टर की गुणवत्ता को चेक किया साथ ही बर्ड डायवर्टर के लिए उच्च मानक तय किया। इसके अलावा यह भी देखा कि फील्ड में लगे सभी बर्ड डायवर्टर अपनी मानकों पर खरे उतर रहे है या नहीं। समिति ने बर्ड डायवर्टर के साथ ही अंडरग्राउंड केबल का भी निरीक्षण किया।

जिले के वरिष्ठ नागरिक कमल ने बताया कि ज्यादातर सर्वे करने वाली टीमों में आने वाले यहाँ मौज मस्ती करके चले जाते है इस बार सुप्रीम कोर्ट द्वारा बनाई गई टीम आई है तो वन्यजीवो के हित में कुछ समाधान होने की उम्मीद की जा सकती है।

डीएफओ डीएनपी आशीष व्यास ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार गठित हुई कमेटी के सदस्यों ने जैसलमेर पहुंच कर दो दिन तक फील्ड विजिट किया। हाइटेंशन लाइनों को अंडरग्राउंड करवाने की बात कहते हुए कमेटी के सदस्यों ने गोडावण संरक्षण की रिपोर्ट बनाई है।

छबड़ा से कडैयानोहर को जोड़ने वाली संपर्क सड़क का हाल बेहाल, आवागमन बाधित

छबड़ा (निसं)। आज भी ग्रामीण अंचलों में सड़क की समस्या महत्वपूर्ण समस्या बनी हुई है।

छबड़ा से कडैयानोहर को जोड़ने वाली संपर्क सड़क का हाल खस्ता होने के कारण लोग जान जोखिम में डालकर वाहन चलाने को मजबूर हैं।

छबड़ा से कडैयानोहर को जोड़ने वाली सम्पर्क सड़क क्षतिग्रस्त होने के कारण खांकरा, कडैयानोहर, कुण्डी, पटना, लोधपुरिया, अमीनपुरा, खेरखेड़ानाथूराम, युसुफपुरा आदि गांव के ग्रामीणों को आवागमन में काफी परेशानी झेलनी पड़ रही हैं और यह समस्या वर्षा के दिनों ओर अधिक बढ़ जाती है। इस क्षतिग्रस्त सड़क पर से वाहन लेकर चलना तो दूर की बात है पैदल चलना भी मुसीबत से कम नहीं है। कहीं-कहीं तो इस सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे हो चुके हैं। राहगीर इस रास्ते से जान जोखिम में डालकर गुजरने को मजबूर हैं। सड़क का खस्ताहाल रोजाना हादसों को न्यौता दे रहा है। सड़क जर्जर होने के कारण षिक्षक, ग्रामीण कमर दर्द से पीड़ित होने लगे हैं।

स्कूल आने-जाने वाले बच्चों को परेशानी:- ग्रामीणों के अनुसार बारिश के सीजन में स्कूल आते-जाते समय इस क्षतिग्रस्त सड़क से गुजरने वाले विद्यार्थी कीचड़ में फिसल कर अनेकों बार गिर चुके हैं। उनकी यूनीफार्म तक खराब हो जाती हैं। मार्ग में पानी जमा होने व दलदल की वजह से विद्यार्थी स्कूल नहीं जा पाते, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो जाती हैं। ग्रामीणों का कहना है कि वर्षा का मौसम उनके लिए वनवास जैसा हैं। ना साइकिल चल पाती हैं ना दोपहिया वाहन।

छबड़ा से कडैयानोहर को जोड़ने वाली संपर्क सड़क का हाल खस्ता होने के कारण लोग जान जोखिम में डालकर वाहन चलाने को मजबूर है।

मरीज चिकित्सालय तक नहीं पहुंच पाते:- ग्रामीणों का कहना है कि अगर कोई बीमार हो जाएं तो गांव तक एम्बुलेंस नहीं आ पाती। मुख्यालय तक पहुंचने में काफी परेशानियों का सामना करना पडता हैं। बरसात में जहरीले जीव जंतुओं का डर हमेशा बना रहता हैं। इसके अलावा आसपास के गांवों की आबादी भी इस खराब सड़क की वजह से परेशानी झेल रही है। यह सड़क गांव के लोगों के लिए मुख्य सड़क है। सड़क क्षतिग्रस्त होने के कारण जरा सी बरसात में यह मार्ग न केवल कीचड़ में तब्दील हो जाता, बल्कि सामान्य मौसम में भी ऊबड खाबड़ के हालात बने रहते हैं। बारिश की वजह से कई स्थानों पर जलभराव जैसी नौबत बन जाती है।

राशिफल बुधवार 3 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, रोहिणी नक्षत्र रात्रि 4:07 तक, शूल योग प्रातः 9:01 तक, तैतिल करण प्रातः 7:11 तक, चन्द्रमा वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात है। आज प्रदोष व्रत, रोहिणी व्रत (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:06 तक, शुभ 10:48 से 12:30 तक, चर 3:56 से 5:18 तक, लाभ 5:18 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:20

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य के संबंध में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कर्क
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सभी को मिलेगा बराबर मौका, नियमों व मर्यादाओं से चलेगा सदन : देवनानी

विधानसभा में सर्वदलीय बैठक में अध्यक्ष का लंच ब्रेक का सुझाव, सभी दलों की सहमति

जयपुर। सोलहवीं राजस्थान विधान सभा के द्वितीय सत्र की बैठकें बुधवार से आरम्भ होंगी। इससे पहले मंगलवार को विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने विधान सभा में सर्वदलीय बैठक बुलाई। देवनानी की राजस्थान विधान सभा में सदन चलाने के लिए सर्वदलीय बैठक का आयोजन एक ऐतिहासिक पहल है। देवनानी ने सदन को शांतिपूर्ण चलाने के लिए सभी दलों से सहयोग की अपील की है।

इस दौरान कई सुझाव आए उनमें से बैठक में सदन में पहले से चल रही पर्चीं पर बोलने की व्यवस्था को फिर से लागू किये जाने। समितियों की रिपोर्ट पर बहस कराये जाने, महत्वपूर्ण मुद्दों को शून्यकाल से पहले अध्यक्ष के ध्यान में लाने और अधिकारियों की उपस्थिति को सुनिश्चित किये जाने के सुझाव भी आये।

विधानसभा के सत्र की बैठक से पहले मंगलवार को अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की अध्यक्षता में सर्वदलीय बैठक बुलाई गई। बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली सहित अन्य दलों के नेता मौजूद थे।

देवनानी ने कहा कि सदन की कार्यवाही को आम जनता देखती है। प्रदेश की जनता से चुनकर आये जनप्रतिनिधिगण अपने आचरण और व्यवहार को जन आकांक्षाओं के अनुकूल प्रस्तुत करें, ताकि विधान सभा का नाम रोशन हो सके। देवनानी ने कहा है कि विधान सभा सदन नियमों व मर्यादाओं से चलेगा। उन्होंने सभी दलों से सदन को शांतिपूर्वक चलाने में सहयोग करने और सार्थक बहस में अपनी बात समय सीमा में रखने के लिए कहा। विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सर्वदलीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सदन में सार्थक चर्चा होनी चाहिए। सभी सदस्यों को बोलने का मौका मिलेगा। विधान सभा का सदन अधिक से अधिक दिन चले इसके लिए सभी दलों के सभी सदस्यों को सकारात्मक सोच रखनी होगी। उन्होंने कहा कि सदन को चलाने की जिम्मेदारी सोलहवीं विधान सभा के सभी नवनिर्वाचित सदस्यों की है।

देवनानी ने बैठक में मध्यान्ह भोजन अन्तराल के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि लोक सभा की तर्ज पर विधान सभा में भी भोजन अन्तराल का निश्चित समय तय किया जा सकता है। इससे एक ही समय पर सभी विधायक भोजन कर सकेंगे और उसके बाद पुन: सदन में सभी सदस्य कार्यवाही में भाग ले सकेंगे। देवनानी के इस प्रस्ताव पर बैठक में मौजूद सभी दल के प्रतिनिधियों ने इसे अच्छी पहल बताते हुए सहमति व्यक्त की। अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बताया कि प्रथम सत्र के 2054 प्रश्नों में से 92 प्रतिशत प्रश्नों के जवाब विधान सभा को प्राप्त हो गये है। अब 177 प्रश्नों के जवाब आना शेष है। देवनानी ने कहा कि यह शुभ लक्षण है। शेष रहे प्रश्नों के जवाब भी विधान सभा को शीघ्र प्राप्त होने की उम्मीद है। बैठक में तय किया गया कि नया सत्र आरम्भ होने से पहले गत सत्र के सभी प्रश्नों के जवाब विधान सभा को आवश्यक रूप से प्राप्त हो जाने चाहिए।

विधान सभा अध्यक्ष देवनानी ने कहा कि सभी दलों को चर्चा के लिए नियमानुसार समय आवंटित किया जायेगा। समय सीमा में ही सदस्य अधिक से अधिक अपनी बात रखें। उन्होंने कहा कि यह दलों के नेताओं कि जिम्मेदारी होगी कि उनके दल का सदस्य सदन में अपनी बात को आवंटित समय में ही रखने का प्रयास करे। देवनानी ने कहा कि सभी सदस्यगण शालीनता से मुद्दे उठायें। देवनानी ने कहा कि यह सदन जनहित के मुद्दों पर चर्चा करने का पवित्र स्थल है। इस स्थल की गरिमा को बनाएँ रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। जनहित के मुद्दों पर सार्थक चर्चा होगी। इसके लिए यदि सदन को देर तक चलाने की आवश्यकता होगी तो सदन को देर तक चलाया जायेगा। उन्होंने कहा कि समस्याओं का हल बातचीत से होता है। सदन में समस्याओं के निस्तारण का प्रयास होगा। यहां पर सदस्यों की बातों को गम्भीरता से लिया जायेगा। उनके द्वारा उठाई गई समस्याओं का निस्तारण भी कराया जायेगा।

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने आश्वस्त किया कि प्रतिपक्ष सदन संचालन में सहयोग करेगा। प्रतिपक्ष के सदस्य सदन में मर्यादापूर्ण व्यवहार से अपनी बात रखेंगे। उन्होंने कहा कि सदन में रखी गयी बातों को सरकार गंभीरता से ले। सदन चलाने की जिम्मेदारी पक्ष के साथ प्रतिपक्ष की भी है।

संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि विधान सभा में अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की यह ऐतिहासिक पहल है। सदन संचालन में इसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम दिखाई देंगे। उन्होंने बैठक में उपस्थित होने वाले पक्ष व प्रतिपक्ष के नेता का आभार ज्ञापित किया।

बैठक में सरकारी मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग, बसपा के मनोज कुमार, भारत आदिवासी पार्टी के थावर चन्द और रालोद के डॉ. सुभाष गर्ग भी मौजूद थे।

राहुल गांधी और कांग्रेस का चरित्र हिंदु विरोधी : भजनलाल शर्मा

- 'हिंदुओं को हिंसक, असत्यवादी और नफरती कहकर एक समुदाय विशेष को खुश करना चाह रहे राहुल गांधी'
- 'नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को नहीं है सदन की परंपरा और नियमों की जानकारी'

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भाजपा प्रदेश कार्यालय में पत्रकारों को संबोधित करते हुए लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा हिंदु धर्म और हिंदुओं पर की गई घृणास्पद टिप्पणी पर पलटवार किया। इस दौरान मंच पर उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा, भाजपा प्रदेश सह-प्रभारी विजया राहटकर, भाजपा प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी, प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ और प्रदेश प्रवक्ता लक्ष्मीकांत भारद्वाज मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राहुल गांधी ने देश के बहुसंख्यक हिंदु समाज को हिंसक, असत्यवादी और नफरती कहकर 125 करोड़ हिंदुओं का अपमान किया है। राहुल गांधी को देश की जनता ने रिजेक्ट कर दिया और लगातार तीसरी बार भी उनकी लॉंचिंग फेल रही। लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान नेता प्रतिपक्ष के रूप में राहुल गांधी का पहला भाषण ही झूठ निराशा और तथ्यहीन बातों से भरा हुआ था। अपने पूरे भाषण में राहुल गांधी ने अभिभाषण पर एक शब्द तक नहीं बोला, चर्चा के दौरान उन्होने केवल और केवल झूठ ही बोला। राहुल ने अपने भाषण में हिंदओं का घोर अपमान किया और हिंदु समाज को नफरती, हिंसक और झूठा बताया जो कि पूरी तरह निंदनीय और दयनीय है।

शर्मा ने कहा कि कांग्रेस की नीति रही है कि तुष्टिकरण की नीति अपनाकर वोटों का ध्रुवीकरण कर सके। कांग्रेस के नेता सदैव हिंदु समाज के खिलाफ बोलते रहे हैं। वर्ष 2010 में तत्कालीन गृहमंत्री पी. चिदंबरम ने और वर्ष 2013 में तत्कालीन गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने जयपुर में हिंदुओं को भगवा आतंकवादी बताया जिसके बाद उन्हे माफी मांगनी पड़ी थी। संसद में बार बार ईश्वर के चित्रों को सामने रखना और इस पर राजनीति करना एक नेता प्रतिपक्ष को शोभा नहीं देता। भजनलाल शर्मा ने कहा कि राहुल गांधी को यह नहीं पता कि हिंदु कौन है? हिंदु वसुधैव कुटुंबकम की भावना रखने वाला और सर्वे भवंतु सुखिन सर्वे संतु निरामया की कामना करने वाला होता है। जीव प्रकृति जड़ चेतन में ब्रहम का साक्षात्कार करने वाला धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सदभाव हो, विश्व का कल्याण हो ऐसे मंत्र को जीने वाला हिंदु प्राण मात्र में ईश्वर का वास देखता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राहुल गांधी संसद में भगवान शिव की तस्वीर दिखा रहे थे जिसे वे तो महज पांच-सात साल से ही देखने लगे हैं। जबकि हिंदु परिवार में जन्मा बच्चा जन्म से लेकर मृत्यु तक भगवान शिव की तस्वीर को अपने सीने में बसाकर रखता है, इसलिए किसी भी हिंदु को उनसे प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं है। राहुल गांधी ने तो सांसद पद की शपथ तक बिना ईश्वर के ली थी, अपनी ओछी राजनीति और एक वर्ग विशेष को खुश करने के लिये हिंदुओं को गाली देना राहुल गांधी और कांग्रेस की आदत बन चुकी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राहुल गांधी के अग्निवीर योजना पर की गई टिप्पणी पर पलटवार करते हुए कहा कि अग्निवीर योजना में शहीदों को मुआवजा नहीं मिलने की बात कहकर राहुल गांधी ने अग्निवीर सैनिकों का अपमान किया है। संसद में अग्निवीर योजना पर राहुल गांधी के झूठ की पोल खोलते हुए रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि अग्निवीर शहीद के परिजनों को एक करोड़ रूपये की राशि दी जाती है। राहुल गांधी विपक्ष के नेता तो बन गये, लेकिन उन्हे सदन की परंपरा और नियमों की जानकारी नहीं है, इसलिए उन्होने लोकसभा अध्यक्ष पर भी गैर जिम्मेदाराना टिप्पणी की जो कि लोकतंत्र में बेहद गलत और दु:खद है। राहुल ने किसानों और अयोध्या पर भी झूठ बोला इससे ऐसा लगता है कि राहुल गांधी ने झूठ की दुकान खोल रखी है।

'गौ तस्करी में जब्त वाहनों को लंबे समय तक नहीं छोड़ने पर पुनर्विचार किया जाए'

जयपुर। हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से कहा है कि वह गौ तस्करी के मामले में जब्त वाहनों को लंबे समय तक नहीं छोड़ने पर पुनर्विचार करे। इन वाहनों को छोड़ने के बदले कलक्टर पूरी राशि जमा शर्त रखते हैं। अदालत ने कहा कि इन वाहनों को लंबे समय तक थाने में रखने से न केवल वाहन मालिक को नुकसान होता है, प्रदेश को राजस्व की हानि भी होती है। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश रामेश्वर व अन्य की चार याचिकाओं पर दिए।

अदालत ने गौ तस्करी कानून के तहत कलक्टर को सुनवाई के लिए सक्षम माना, लेकिन ऐसे वाहनों को लंबे समय तक जब्त रहने से राजस्व को होने वाले नुकसान के आधार पर राज्य सरकार से कानून पर पुनर्विचार करने को कहा है। याचिकाओं में भरतपुर, झालावाड़ और ब्यावर में कलक्टरों के गौ तस्करी में जब्त वाहनों को नहीं छोड़ने को चुनौती दी थी। कलक्टरों ने राजस्थान दुधारू पशु अधिनियम, 1995 के प्रावधानों का हवाला देकर वाहन मालिकों के वाहन की कीमत जमा कराने पर ही वाहन छोड़ने की शर्त लगा दी थी। याचिकाओं में कहा गया कि वन अधिनियम में भी वाहन जब्त करने का प्रावधान है, लेकिन वन अधिकारी की अपील पर किए गए निर्णय को रिवीजन के जरिए न्यायालय में चुनौती देने का प्रावधान है।

सोने की शुद्धता और मानकों की जानकारी के लिए चलेगा अभियान

जयपुर, (का.सं.)। सोने एवं सोने से बने आभूषणों में शुद्धता-मानकों में गड़बड़ी की सूचना/शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए उपभोक्ताओं के सार्वकालिक हितों को सुरक्षित करने के लिए उपभोक्ता मामले विभाग के मंत्री सुमित गोदारा ने भारतीय मानक ब्यूरो और उपभोक्ता मामले विभाग को समन्वय के साथ काम करते हुए राज्य व्यापी उपभोक्ता जागृति अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं।

उपभोक्ता मामले मंत्री गोदारा ने कहा कि आम उपभोक्ता सोने की शुद्धता, गुणवत्ता, मानक एवं हॉलमार्किंग से अनभिज्ञ होने के कारण सोने और उससे बने आभूषणों की खरीद में बड़े स्तर पर शोषण का शिकार हो रहा है। इसे रोकने के लिए प्रचार-प्रसार के विभिन्न माध्यमों से यथा इलेक्ट्रोनिक, प्रिन्ट-सोशियल मीडिया पर व्यापक अभियान चलाया जाना आवश्यक है।

गोदारा के निर्देशों के पश्चात उपभोक्ता मामले विभाग एवं भारतीय मानक ब्यूरों द्वारा कार्य योजना बनायी जा रही है। इसी क्रम में दोनों विभागों के संयुक्त तत्वावधान में 9 जुलाई को एक राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इसी क्रम में उपभोक्ता मामले विभाग के प्रमुख शासन सचिव भास्कर ए सावंत तथा भारतीय मानक ब्यूरो की क्षेत्रीय निदेशक, कनिका कालिया ने संयुक्त रूप से बताया कि भारत सरकार ने सोने के आभूषणों पर वर्ष 2021 से हॉलमार्क लागू कर दिया है। इससे हॉलमार्क किये हुए आभूषण ही जेवरातियों द्वारा बेचे जा सकते हैं। हॉलमार्किंग शुद्धता की गारंटी देता है। प्रमुख शासन सचिव, भास्कर ए सावंत ने जानकारी देते हुए बताया कि हॉलमार्किंग वाले आभूषणों को खरीदते समय भारतीय मानक ब्यूरो का लोगो और केरेट के साथ 6 अंको का अल्फान्यूमेरिक कोड अवश्य जांचे।

भारतीय मानक ब्यूरो की निदेशक, कालिया ने बताया कि उपभोक्ता स्वर्ण आभूषण खरीदते समय बीआईएस के रजिस्ट्रेशन की जांच करने के साथ उसका पक्का बिल अवश्य लें। उन्होंने बताया कि उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए सोने की शुद्धता की जांच किये जाने हेतु राज्य में 92 हॉलमार्किंग सेन्टर है। प्रमुख शासन सचिव, भास्कर ए सावंत ने बताया कि उपभोक्ताओं से संबंधित किसी भी प्रकार की शिकायत राज्य उपभोक्ता हेल्पलाइन नम्बर 1800-180-6030 पर पंजीकृत करायी जा सकती है।

फर्जी लैब टेस्टिंग रिपोर्ट देने वाले आरोपी को जमानत नहीं

जयपुर, (का.सं.)। अतिरिक्त सत्र न्यायालय क्रम- एक, महानगर द्वितीय ने विदेशी महिला को हीरे के स्थान पर सस्ता पत्थर बेचने से जुड़े मामले में फर्जी लैब रिपोर्ट देने वाले आरोपी नंदकिशोर वाल्मीकि की जमानत अर्जी को खारिज कर दिया है। अदालत ने कहा कि आरोपी ने बिना नापतोल और बिना उचित मशीनों से जांच के बिना फर्जी लैब टेस्टिंग रिपोर्ट जारी की। जिसके चलते विदेशी महिला को करीब 4.50 करोड रुपए की हानि हुई है। ऐसे में उसे जमानत का लाभ नहीं दिया जा सकता।

जमानत अर्जी में कहा गया कि प्रार्थी को मामले में झूठा फंसाया गया है। एफआईआर में उसका नाम भी नहीं है। प्रार्थी द्वारा जो डायमंड को जांचा गया था, वह सही था और प्रार्थी ने उसमें किसी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं की थी। ऐसे में उसे जमानत पर यह किया जाए। इसका विरोध करते हुए सरकारी वकील ने कहा कि आरोपी ने अन्य आरोपियों से मिलीभगत कर फर्जी लैब टेस्टिंग रिपोर्ट जारी की है।

भाजपा विधायक दल की बैठक में एकजुट रहने की रणनीति बनी

- बैठक में कई मुद्दों पर बनीं सहमति

जयपुर। विधानसभा सत्र शुरू होने से एक दिन पहले मंगलवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री हाऊस में भाजपा विधायक दल की बैठक हुई। बैठक में कई मुद्दों पर सहमति बनी।

बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सभी विधायको को सदन में एकजुट रहने, विपक्ष के आरोपों का करारा जवाब देने, विधायको को तैयारी के साथ सदन में आने, सरकार की अब तक की उपलब्धियों पर अपडेट रहने, मंत्रियों के जवाब के वक्त सदन में उनका साथ देने, तथ्यों के साथ अपनी बात रखने और विधानसभा में फिर से शुरू हुई पर्ची से मुद्दे उठाने की व्यवस्था में ज्यादा से ज्यादा अपनी भागीदारी करने के निर्देश दिए हैं। वहीं सत्र के दौरान हां पक्ष लॉबी में हर मंगलवार को विधायक दल की बैठक आयोजित करने का भी फैसला किया गया है। विधायक दल की बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने और एनडीए की सरकार आने पर उनका अभिनंदन प्रस्ताव भी पारित किया गया। बैठक के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सभी विधायकों, मंत्रियों को मुख्यमंत्री हाऊस में डिनर भी दिया। बैठक में भाजपा के चुनाव प्रभारी रहे विनय सहस्त्रबुद्धे, सहप्रभारी विजया राहटकर भी मौजूद रहीं। वहीं पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे, उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ीलाल मीणा प्रदेश के बाहर दौरे और निजी कारणों से बैठक में नहीं आ सके।

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम कमला चौधरी जन्म दिनांक 01.04.1960 से बदलकर कमला देवी जन्म दिनांक 05.06.1960 पत्नी श्री चंद चौधरी रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावे निवासी आर-11, सेक्टर-2, विद्याधर नगर, जयपुर

मैं धनराज मीना पुत्र स्व. श्री लल्लू राम मीना निवासी ग्राम कोरडा कलां, गुमानपुरा, दौसा। मैंने मेरा नाम धनराज मीना से बदलकर धनराज कोरडा रख लिया है भविष्य में मुझे धनराज कोरडा के नाम से जाना जावें।

(My old Name) Shankhala Ankit Gopal lal S/o Gopal form Svami Vivekanand Conoli Gunawati Makrana change (New Name) Ankit S/o Gopal

I have changed my name from Ujjwal Jain to Ujjawal Jain r/o 13, vishnupuri tonk road durgapura Jaipur.

I Chhotu Ram S/o Shree Chatararam R/o Village-Bijaura, Teh-Kuchaman City, Dist. Didwana Kuchaman, Rajasthan have changed My Name from Chotu Ram Balai to Chotu Ram in my passort for all future purposes.

खोया पाया

मेरे मकान 15/73 मालवीय नगर के मूल डोकोमेंट अलॉटमेंट लेटर एवं अन्य मालवीय नगर जयपुर में कहीं गिर गये है। मिलने पर सूचित करें- 7042828210 परमजीत कौर।

मेरे प्लॉट जी-20 कनक वाटिका विस्तार गांव शिवदासपुरा, तहसील चाकसू, टोंक रोड जयपुर का मूल सोसायटी पट्टा जयपुर में कहीं गिर गया है। मिलने पर सूचित करें-हमेश भागचंद सेठ मो. 9929996000

दी जयपुर वालमिकी गृह निर्माण सहकारी समिति की योजना दधीची नगर के प्लाट नम्बर ए-135 के मूल साईड प्लान व रसीद कहीं गुम हो गई है मिलने पर सूचित करें उचित ईनाम देय है-गीता देवी-9414889978

दी जयपुर वालमिकी गृह निर्माण सहकारी समिति की योजना दधीची नगर के प्लाट नम्बर सी-181 के मूल समिति द्वारा जारी साईड प्लान कहीं गुम हो गया है मिलने पर सूचित करें उचित ईनाम देय है-गीता देवी-914889978

मेरे प्लॉट नंबर 85 ऋषभ वाटिका सांगानेर जयपुर का मूल पट्टा हसनपुर-ए-गृह निर्माण सहकारी समिति का मूल पट्टा व रसीद साईड प्लान कहीं खो गए है मिलने पर सूचित करें- श्रीमती पोनी देवी-9602234584

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है मेरी अभिभाष्या सुश्री डौली (पुराना नाम) पुत्री स्वर्गीय श्री केशव सिंह रावत, निवासी प्लॉट नम्बर ए-2 मधुवन कॉलोनी, किसान मार्ग, टोंक रोड, जयपुर ने आज से लगभग पास वर्ष पूर्व अपना नाम परिवर्तन करके अपना नया नाम सुश्री सीमा रावत पुत्री केशव सिंह रावत रख लिया था। परन्तु भूलवश मेरी अभिभाष्या ने परिवर्तित नये नाम को सर्व साधारण को सूचित नहीं कर पायी थी। अत मेरी अभिभाष्या नये नाम अर्थात सुश्री सीमा रावत पुत्र श्री केशव सिंह रावत के नाम से जाना जावे तथा किसी सरकारी या गैर सरकारी अभिलेखों में मेरी अभिभाष्या का पुराना नाम (डौली पुत्री श्री केशव सिंह रावत) अंकित हो उसे नये नाम सुश्री सीमा राव पुत्री श्री केशव सिंह रावत पढा जावें। मेरी अभिभाष्या यह उद्घोषणा पूर्ण होशोहवास सत्य भाव एवं ईश्वर को साक्षी मानकर कर रही है और इसमें कोई भी संदेहास्पद एवं मिथ्या तथ्य सम्मिलित नहीं है। ईश्वर मेरी अभिभाष्या की सहायता करें।
जयपुर (विनोद गौड़) एडवोकेट
दिनांक-02.07.2024 मो. 9829684533

नगर निगम ग्रेटर, जयपुर
(पं. दीनदयाल उपाध्याय भवन, लालकोठी, टोंक रोड, जयपुर) आयोजना प्रकोष्ठ
क्रमांक : एफ-13 () उप.आयोजना/जननि/2024/36 दिनांक : 16.04.2024
सार्वजनिक विज्ञप्ति
विषय :- राजस्थान नगर पालिका (भू-उपयोग परिवर्तन) नियम 2010 के नियम 4 (1) के अन्तर्गत आपत्तियां/सुझाव आमंत्रित करने हेतु विज्ञप्ति।
नगर निगम, जयपुर में निम्न वर्णित भूखण्ड धारक ने कॉलम 4 में वर्णित मास्टर विकास योजना 2025 (जयपुर रीजन) में निर्धारित भू-उपयोग का कॉलम 5 में वर्णित भू-उपयोग हेतु आवेदन किया है जिसका ब्यौरा निम्नानुसार है।

क्र. सं.	आवेदक का नाम, भूखण्ड संख्या योजना का नाम	भूखण्ड का क्षेत्रफल व उपयोग	मास्टर प्लान (2025) अनुसार भू-उपयोग	आवेदक द्वारा चाहा गया भू-उपयोग
1	2	3	4	5
1.	श्री तुषार शर्मा पुत्र श्री सतीश चन्द्र शर्मा भू.सं. 10 व 11, नन्द विहार (मायल नगर गृ.नि.स.लि.), जयपुर	633.28 व.ग. (आवासीय)	मिश्रित	मिश्रित

यदि किसी व्यक्ति/संस्था को उपरोक्त भू-उपयोग परिवर्तन के संबंध में कोई आपत्ति/सुझाव हो तो इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 15 दिन की अवधि तक अपनी आपत्ति/सुझाव कारणों सहित नगर निगम ग्रेटर जयपुर के आयोजना शाखा में प्रस्तुत कर सकते हैं।
रूकमणी रियाड़ (IAS), आयुक्त नगर निगम ग्रेटर, जयपुर

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)
मुकदमा नम्बर 52/2024
चूंकि कि डा. रामेश्वर दयाल शर्मा कार्यवाहक प्रन्यासी ने पंजीकृत प्रन्यास डा दयाल संस्थान ट्रस्ट जेएमसी/3, दयाल हॉस्पीटल, पुरानाघाट, खानियां आगरा रोड, जयपुर जिसका पंजीयन कमांक 103 जयपुर 2010 है के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अंतर्गत प्रन्यास की बैठक कर प्रन्यास में प्रन्यासियो के त्याग पत्र देने के कारण उनका नाम प्रन्यास विलेख से हटाने व नवीन प्रन्यासियो को मनोनीत कर उनके नाम प्रन्यास विलेख में जोड़ने, प्रन्यास में किये गये संशोधनों को प्रन्यास अभिलेख में दर्ज रिकार्ड कराने का निवेदन कर जांच किये जाने के लिए प्रपत्र-8 में आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुए परिवर्तन / संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 2/7/24 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी गया।
आइदा तारीख पेशी 6/8/24
3127 / 2/7/24 आकाश रंजन (आर.ए.एस.)
सहायक आयुक्त (प्रथम), देवस्थान विभाग, जयपुर

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 49/2024
(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि श्री जगदीश शर्मा प्रन्यासी प्रन्यास श्री रामप्रताप सांवरिया बालाजी सेवा ट्रस्ट आर.जी. 37 आवासीय कॉलोनी रामचन्द्रपुरा औद्योगिक क्षेत्र, तहसील सांगानेर जयपुर जिसका पंजीयन क्रमांक 58 जयपुर 2022 है के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अन्तर्गत प्रन्यास में अस्थायी न्यासी श्रीमती मनभर देवी शर्मा में अनुपस्थित रहने एवं त्याग पत्र दिये जाने के कारण उनके नाम प्रन्यास विलेख से हटाने तथा न वीन प्रन्यासियों श्री रामप्रवेश दास महाराज श्री हरिशंकर दास महाराज श्री सरयुदास महाराज एवं श्री रामदर्शन दीक्षीत की नियुक्ति कर नवीन पदाधिकारियों/प्रन्यासियों की नियुक्ति कर नवीन सदस्यों के नामों को कार्यालय रिकार्ड में दर्ज अभिलेख कराने का निवेदन कर जां किये जाने के लिए प्रपत्र-8 में आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुये परिवर्तन/संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 27.06.2024 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 31.07.2024
मोहर अदालत
आकाश रंजन (आर.ए.एस.)
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 179/2024
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि शोभा सोनी पुत्री श्री राजन कुमार सोनी निवासी 136 कृष्णा कॉलोनी, रामगढ मोड, जयपुर-302002 ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत आशाये फाउण्डेशन प्रयास पता- मकान नं. 3, वार्ड नं.1, अम्बिकेश्वर मंदिर के पीछे, सागर रोड, आमेर जिला जयपुर-302028 ने राजस्थान के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच प्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 24.05.2024 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 29.07.2024
मोहर अदालत
आकाश रंजन (आर.ए.एस.)
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)
व्यवहार मिश्रित (मुत्तफरिक) वाद सं. 232/24
विषय- उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र।
प्रार्थी नाम दिनकर किशोर नेगी पुत्र आनन्द सिंह नेगी जाति राजपूत निवासी प्लाट नं. 434 टी स्टेट बंजारावाला देहरादूर उत्तराखण्ड हाल निवासी 1/6 खण्डेलवाल टॉवर विद्याधर नगर सेक्टर नं. 1 जयपुर विवाद स्थान-
मृतक श्रीमती अनामिका नेगी की सम्पत्ति के विषय में।
पेशी दिनांक- 06.07.2024
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम श्रीमती अनामिका नेगी पुत्री दिनकर किशोर नेगी जाति राजपूत निवासी 1/6 खण्डेलवाल टॉवर, एसएफ सं.-1, विद्याधर नगर, जयपुर का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र, प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, प्रदान किया जावें।
अतः उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 06 माह 07 सन् 2024 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।
आज दिनांक 24 माह 05 सन् 2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।
मोहर अदालत
आज्ञा से-वरिष्ठ मुंसरिम
जिला एवं सैशन न्यायालय
जयपुर महानगर-द्वितीय

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)
व्यवहार मिश्रित (मुत्तफरिक) वाद सं. 03/24
विषय- उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र।
प्रार्थी पंकज माथुर पुत्र स्व. रघुराज बिहारी माथुर जाति... विवाद स्थान प्लाट संख्या 14, कल्याण नगर-5 नये बगले के पीछे टोंक रोड सांगानेर जयपुर-302011
मृतक स्वर्गीय उमा माथुर की सम्पत्ति के विषय में।
पेशी दिनांक- 19.07.2024
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम स्वर्गीय उमा माथुर पत्नि श्री रघुराज बिहारी माथुर जाति... निवासी प्लाट संख्या 14, कल्याण नगर-5 नये बगले के पीछे, टोंक रोड, सांगानेर जयपुर-302011 का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र, प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, प्रदान किया जावें।
अतः उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 19 माह 07 सन् 2024 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।
आज दिनांक 02 माह 07 सन् 2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।
मोहर अदालत
आज्ञा से-शरिस्तेदार
अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश
संख्या 10, जयपुर महानगर प्रथम
सांगानेर

आम सूचना मेरे मुवक्किलान जगदीश प्रसाद शर्मा पुत्र स्वर्गीय श्यामलाल शर्मा व आशा शर्मा पत्नी जगदीश प्रसाद शर्मा निवासी 49 हनुमान वाटिका, तहसील बस्सी, आगरा रोड, बगराना, कानोता जयपुर का पुत्र बादल शर्मा व पुत्र वधू ज्योति शर्मा वर्तमान में मेरे मुवक्किलान के कहने सुनने में नहीं है लडाई झगडा करते हैं झूठे केस में फंसाने की धमकी देते है ना फरमानी करते है इस कारण उपरोक्त बेटे बहु को अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल करते हैं भविष्य में कोई भी दीगर व्यक्ति, संस्था, बैंक आदि कोई भी लेनदेन करता है तो वह स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरे मुवक्किलान की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।
विष्णु कुमार अग्रवाल, एडवोकेट
(राजस्थान हाई कोर्ट जयपुर) मो. 9414241135

कार्यालय उप आवासन आयुक्त वृत-प्रथम
राजस्थान आवासन मंडल, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक: 1606 आम सूचना दिनांक: 22.05.2024
राजस्थान आवासन मंडल की प्रताप नगर योजना में आवास/फ्लैट संख्या 68/89 (MIG-B), का आवंटन श्री महावीर प्रसाद यादव पुत्र श्री भगवाना राम यादव को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 4128 दिं. 31.05.1994 को जारी किया गया था। उनके पक्ष में पंजीयन पत्रों निष्पादन दिनांक 24.03.2022 को उपपंजीयक (अष्टम) जयपुर के यहां पंजीकृत करवाया गया। श्री महावीर प्रसाद यादव द्वारा 1. श्री मोहन सेतिया पुत्र स्व. श्री बसंत लाल सेतिया 2. श्री मुकेश कुमार गुप्ता पुत्र श्री लल्लू प्रसाद गुप्ता एवं 3. श्रीमती सीमा देवी पत्नी श्री अशोक कुमार गोयल को दिनांक 03.05.2023 को मुख्त्यारनामा आम धारक नियुक्त किया गया। 1. श्री मोहन सेतिया पुत्र स्व. श्री बसंत लाल सेतिया 2. श्री मुकेश कुमार गुप्ता पुत्र श्री लल्लू प्रसाद गुप्ता एवं 3. श्रीमती सीमा देवी पत्नी श्री अशोक कुमार गोयल द्वारा मुख्त्यारआम की हैसियत से पंजीयन पश्चात् उक्त आवास का विक्रय कर श्री आशीष पाराशर पुत्र श्री अरूण कुमार शर्मा को दिनांक 10.11.2023 विक्रय पत्र उप पंजीयक सांगानेर- प्रथम जयपुर में पंजीकृत करवाया गया। श्री आशीष पाराशर पुत्र श्री अरूण कुमार शर्मा द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास में अपना नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कराने बाबत आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/ पक्षकार को कोई आपत्ती हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है, श्री आशीष पाराशर पुत्र श्री अरूण कुमार शर्मा का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
संपदा प्रबंधक, वृत्त प्रथम, राज. आ. मण्डल, जयपुर

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 53/2024
(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि श्री देवराज सिंह अध्यक्ष पंजीकृत प्रन्यास मंदिर श्री भैरू जी महाराज ट्रस्ट ग्राम तामडिया तहसील चाकसू जिला जयपुर ने जिसका पंजीयन क्रमांक 31 जयपुर 2009 के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अन्तर्गत प्रन्यास के चुनाव करा चयनित नवीन सदस्यों के नाम न्यास विधान रिकार्ड में दर्ज अभिलेख कराने का निवेदन कर जांच किये जाने के लिए प्रपत्र-8 में आवेदन-पत्र दिया है।
अतएवं धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुये परिवर्तन/संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 02.07.2024 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 06.08.2024
मोहर अदालत
आकाश रंजन (आर.ए.एस.)
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 230/2024
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि श्री अमित कुमार गुप्ता पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता निवासी प्लॉट नं. ए-30 सोनी का बाग, अल्का सिनेमा के पीछे, मुरलीपुरा, सीकर रोड जयपुर ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत जीवन लक्ष्य फाउण्डेशन प्रन्यास पता प्लॉट नं. ए-30 सोनी का बाग अल्का सिनेमा के पीछे, सीकर रोड जयपुर के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 01.07.2024 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 04.09.2024
मोहर अदालत
आकाश रंजन (आर.ए.एस.)
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

कार्यालय ग्राम पंचायत श्री राम की नांगल प.स. सांगानेर, जयपुर
क्रमांकः ग्रा.प./39 ई- निविदा सूचना संख्या 02/2024-25 दिनांकः- 01.07.2024
ग्राम पंचायत श्रीराम की नांगल में निर्माण कार्यो के लिए राजस्थान पंचायतीराज नियम 181 के तहत सक्षम क्षेणी में पंजीकृत संवदकों से निधारित प्रपत्र में प्रोक्योंमेंट प्रक्रिया वेबसाइट www.eproc.rajasthan.govपर ऑनलाइन निविदायें आर्मत्रित की जाती है विस्तृत विवरण www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड/अपलोड की जा सकती है।
NIB NO- PEZ2425A003 UBN NO- PEZ2425WSOB00006
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत श्री राम की नांगल — सरपंच ग्राम पंचायत श्री राम की नांगल

कार्यालय नगर निगम जयपुर हैरिटेज
(जलेबी चौंक, बडी चौपड़)
क्रमांकः-एफ-20( )/अधि. अभि. (वि.) हैरि./ननिज/24/318-320 दिनांकः- 26.06.2024
-: : ई-निविदा सूचना संख्या 7-9/2024-25 : :-
नगर निगम जयपुर हैरिटेज की ओर से विद्युत कार्य हेतु नगर निगम जयपुर में व अन्य विभागों में नये नियमों के अनुसार श्रेणीवार EWSD श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेन्डरिंग प्रक्रिया में ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती हैं।
निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेब साईट http:;//sppp.rajathan.gov.in & www.jaipurmcheritage.org पर निम्न UBN No. JMC2425WSOB00178 - JMC2425WSOB00180 पर देखा जा सकता हैं।
इच्छुक संवेदकों को ई-निविदा में भाग लेने हेतु वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक हैं।
राज.संवाद/सी/24/1546
अधिशाषी अभियन्ता (विद्युत) नगर निगम, जयपुर हैरिटेज

आवश्यकता
आवश्यकता है पार्ट टाइम कम्प्यूटर ऑपरेटर्स की जो हिन्दी में पेजमेकर, क्वार्क और वर्ड में काम कर सकें।
कार्य समयः सांय 8.00 से 12.00
सम्पर्क करेंः अमित
मोबाईल नं.: 7905717804
राष्ट्रदूत
चमेली वाला मार्केट, जयपुर

CAMBAY HOTELS & RESORTS
बोली लगाने के लिए आमंत्रण
गुजरात और राजस्थान में 5 प्रीमियर होटल संपत्तियों के होटल संचालन का प्रबंधन करने का अवसर
कंपनी 'नीसा लीजर लिमिटेड', वर्तमान में 'दिवाला और दिवालियापन संहिता, 2016' के प्रावधानों के तहत कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया से गुजर रही है, जिसे माननीय एनसीएलटी, अहमदाबाद पीठ के 26 अप्रैल 2019 के आदेश द्वारा शुरू किया गया था। श्री अमित जैन को माननीय एनसीएलटी, अहमदाबाद पीठ के 17 दिसंबर 2019 के आदेश द्वारा रिजॉल्यूशन प्रोफेशनल के रूप में नियुक्त किया गया था।
नीसा लीजर लिमिटेड के पास गुजरात और राजस्थान राज्यों में पांच होटल संपत्तियां हैं जो 'कैम्बे होटल्स एंड रिसॉर्ट्स' के ब्रांड नाम के तहत संचालित होती हैं। हम वर्तमान में इन पांच होटल संपत्तियों के संचालन का प्रबंधन करने के लिए अनुभवी ऑपरेटरों से बोलियां आमंत्रित कर रहे हैं।
हमारे होटल रणनीतिक रूप से स्थित हैं और सही प्रबंधन टीम के साथ विकास और लाभप्रदता की अपार संभावनाएं हैं।
इच्छुक पार्टियों से अनुरोध है कि वे संपत्तियों और बोली जमा करने की प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी के लिए cirp@neesaleisure.in पर लिखें।
अमित जैन
रिजॉल्यूशन प्रोफेशनल - नीसा लीजर लिमिटेड
आईपी पंजीकरण संख्या IBBI/IPA-001/IP-P01447/2018-2019/12196

कार्यालय ग्राम पंचायत पटवारी का बास, पंचायत समिति खण्डेला (सीकर) राज.
क्रमांक-ग्रा.प./सामग्री/निविदा/2024-25/37 दिनांक-28.06.2024
ई-उपापन निविदा सूचना संख्या 01/2024-25
ग्राम पंचायत पटवारी का बास पंचायत समिति खण्डेला वित्तीय वर्ष 2024-25 में महानरेगा योजना एवं अन्य सभी विकास योजनाओं में करवाये जाने वाले निर्माण कार्यो के लिए निर्माण सामग्री आपूर्ति हेतु खुली प्रतियोगी बोली के माध्यम से दर संविदा हेतु ई-उपापन द्वि-प्रकमी बोली आमंत्रित की जाती है। राजस्थान वेट अधिनियम 2003 एवं जी.एस.टी. अधिनियम 2017 के अन्तर्गत पंजीकृत/प्राधिकृत एवं अनुभवी विनिर्माता, थोक विक्रेता एवं अधिकृत डीलर्स एवं फर्मो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया से वेब साईड www.eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदायें वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिये मान्य होगी। उक्त निविदा से संबंधित विवरण वेब साईट http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।
उक्त कार्य के NIB CODE-PIT2425A0010 एवं कार्य के UBN NUMBER-PIT2425GLRC00015 है।
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत पटवारी का बास पं.स. खण्डेला (सीकर) — सरपंच ग्राम पंचायत पटवारी का बास पं.स. खण्डेला (सीकर)

ट्रेलर-पिकअप और जीप की टक्कर में दो की मौत, नौ जने घायल

चौमूं-रेनवाल मार्ग पर स्थित कानरपुरा बस स्टैंड पर हुआ हादसा

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। चौमूं-रेनवाल मार्ग पर स्थित कानरपुरा बस स्टैंड पर मंगलवार सुबह लगभग 7.30 बजे ट्रेलर-पिकअप और जीप की हुई भीषण टक्कर में 2 लोगों की मौत व 9 लोग घायल हो गये।

हादसा ओवरटेक करने के दौरान हुआ। हादसे की सूचना मिलते ही घटना स्थल पर कालाडेरा थाना पुलिस ने पहुंचकर घायलों को 108 एम्बुलेंस की सहायता से कालाडेरा समुदाय स्वास्थ्य केन्द्र पर भिजवाया गया। कालाडेरा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सकों के द्वारा उपचार के दौरान गम्भीर रूप से घायल 6 लोगों को जयपुर के लिए रेफर किया, वहीं 3 घायलों को उपचार के बाद डिस्चार्ज कर दिया।

कानरपुरा बस स्टैंड पर हुए हादसे में घायलों को कालाडेरा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में भर्ती कराया।

■ गंभीर घायल 6 लोगों को जयपुर रेफर किया, 3 को उपचार के बाद डिस्चार्ज किया

जानकारी के अनुसार पिकअप चौमूं मण्डी से सब्जी लेकर रेनवाल जा रही थी पिकअप में सिर्फ ड्राइवर था। वहीं जीप रेनवाल से सवारियों को लेकर चौमूं की तरफ आ रही थी चौमूं रेनवाल रोड पर स्थित कानरपुरा बस स्टैंड के पास जीप ड्राइवर नूरदीन मणियार ने सवारियां लेने के लिए ब्रेक लगाया इसी दौरान पीछे से आ रहे ट्रेलर ने जीप को ओवरटेक किया इसी दौरान सामने से आ रही पिकअप और ट्रेलर की भीषण भिड़ंत हो गई, बेकाबू ट्रेलर ने जीप को भी अपने चपेट में ले लिया जिसके बाद जीप पलट गई। जीप में सवार यात्री उछलकर सडक पर गिर गये और कई लोग बेहोश भी हो गए। घटना के बाद आसपास में अफरा तभरी का माहौल हो गया। मौके पर पहुंची कालाडेरा थाना पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों को साइड में करवाकर यातायात को सुचारू करवाया। वहीं जीप ड्राइवर नूरदीन मणियार पुत्र भोमाराम मणियार उम्र 48 वर्ष निवासी रेनवाल और यात्री रामगोपाल मीणा पुत्र मदन लाल मीणा उम्र 45 वर्ष की मौत हो गई पुलिस ने दोनों के शवों को चौमूं अस्पताल की मोचडी में रखवा कर परिजनों के आने के बाद पोस्टमार्टम करवा कर मृतकों के शवों को परिजनों को सौंप दिए। जिसके बाद परिजनों ने मृतकों के शवों का दाह संस्कार कर दिया गया। सड़क हादसे में घायल महेन्द्र मीणा पुत्र नारायण मीणा उम्र 32 वर्ष निवासी बाई का बास, कैलाश पुत्र भीमाराम उम्र 45 वर्ष निवासी सबलपुरा, सुरेन्द्र यादव हनुमान सहाय यादव उम्र 30 वर्ष निवासी सबलपुरा, हरिपुरी पुत्र जयरामपुरी उम्र 36 वर्ष निवासी जायल नागौर, मानसिंह पुत्र अर्जुन सिंह शेखावत उम्र 60 वर्ष निवासी मंडा भिंडा, पदमाराम पुत्र गिरधारी रैगर उम्र 45 वर्ष निवासी हरसोली, गुलाबचंद पुत्र सोहनलाल मीणा उम्र 40 वर्ष निवासी घिनोई, केसर पुत्र सत्यनारायण दरोगा उम्र 45 वर्ष निवासी सबलपुरा, रामानंद पुत्र देवाराम रैगर उम्र 46 वर्ष निवासी दातारामगढ़ सीकर के रहने वाले है तीनों वाहनों को कालाडेरा थाना पुलिस के द्वारा थाने पर लाया गया। गौरतलब है कि चौमूं - रेनवाल सड़क मार्ग की चौड़ाई कम होने व तेज रफ्तार व ओवर लोड वाहनों के चलने के कारण अक्सर ये हादसे होते है।

हादसे में श्रमिक की मौत

उदयपुर, (कासं)। डबोक थाना क्षैत्र में स्थित सिमेंट फेक्ट्री में काम करते समय बॉयलर से गिरने पर श्रमिक की मौत हो गई। इसकी सूचना मिलने पर मुआवजें की मांग को लेकर परिजनों ने हंगामा किया। पुलिस ने समझाईश कर मामला शांत किया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार सोमवार रात में डबोक थाना क्षैत्र डबोक मावली रोड़ नाहरमगरा बजाज नगर पर स्थित उदयपुर सिमेंट फेक्ट्री में काम करते समय श्रमिक मेडता निवासी गजेन्द्र गमेती (20) पुत्र भेरूलाल की मौत हो गई। गजेन्द्र फेक्ट्री में सेम्पल बॉय के पद पर काम करता था। सोमवार रात में वह ड्यूटी पर था। इसी दौरान वह 200 फिट उचाई पर स्थित चिमनी पर सेम्पल लेने के लिए गया था। जहां संतुलन बिगडने पर वह निचे गिर पड़ा। इसको देख साथी श्रमिक उसे उपचार के लिए चिकित्सालय ले कर पहुंचे। जहां उसकी मौत हो गई।

आरएएस मुख्य परीक्षा 20 व 21 जुलाई को

अजमेर, (कासं)। आरपीएससी की ओर से राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएं संयुक्त प्रतियोगी (मुख्य) परीक्षा 2023 का आयोजन 20 और 21 जुलाई को पांच जिला मुख्यालयों अजमेर, जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर जिला मुख्यालय पर होगा। आयोग के सचिव रामनिवास मेहता ने बताया कि परीक्षा 905 पदों के लिए होगी, इसमें राज्य सेवाओं के लिए 424 और अधीनस्थ सेवाओं के लिए 481 पद शामिल है।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता एवं परियोजना प्रबंधक वाटरशेड सेल कम डाटा सेन्टर जिला परिषद जालोर

क्रमांक-एफ()/निविदा/OFFICE EXP/2024-25/332-339 दिनांक- 26.06.2024

NOTCE INVITING BID
NIT NO. 01-02/2024-25

Bids for Hiring men with machine of estimated Value INR 14.00 Lacks And hiring of Office vehicles of estimated value INR 2.65 Lacks invited from interested bidders Up to 2.00 PM 05.07.2024, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https//eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/) of the state.

S.No.	NIT NO.	NIB NO.	UBN NO.
1	NIT-1/2024-25 - Hiring men with machine	WSC2425A0088	WSC2425SSRC00169
2	NIT-2/24-25 - Hiring of Office vehicles	WSC2425A0090	WSC2425SSRC00172

(Arun Kumar Ameta)
SE & PMWCDC, ZILA PARISHAD, JALORE
DDO CODE NO. 28606

DIPR/C/5144/2024

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर
टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001
दुरभाष स. 0294-2421255, 2420013, Helpline no.0294-2426262 वेबसाइट- www-udaipurmc.org

क्रमांक : निविजा/2024-25/ई -04 दिनांक :- 29.06.2024

(ई-भुगतान) बोली आमन्त्रण सूचना संख्या - ई 04/2024-25

नगर निगम कार्यालय उदयपुर द्वारा विभिन्न विकास कार्यो हेतु कुल राशि रु0 30.00 लाख के कुल 01 कार्यो हेतु इच्छुक निविदादाताओं से निर्धारित निविदा प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया के तहत निविदा आमंत्रित की जाती है निविदा के कार्यो की प्रारम्भ तिथि 01.07.2024 समय प्रातःकाल 11.00 बजे से एवं अंतिम तिथि 05.07.2024 समय प्रातःकाल 11.00 बजे तक एवं भौतिक रूप से डिमाण्ड ड्राफ्ट जमा कराने का अंतिम दिनांक 05.07.2024 को समय दोपहर 12.00 बजे तक का रहेगा तथा निविदा खुलने की तिथी 05.07.2024 समय दोपहर 02.00 बजे तक रहेगी। निविदा से संबंधित अन्य समस्त विवरण इंटरनेट साईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है।
UBN No. UNP2425WSOB00026

राज.संवाद/सी/24/1581 अधीक्षण अभियन्ता, नगर निगम, उदयपुर

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर

क्रमांक : HA/CN/2024-25/1103 दिनांक :- 28.06.2024

(ई-भुगतान) बोली आमन्त्रण सूचना संख्या - ई 02/2024-25 (स्वास्थ्य शाखा)

उदयपुर शहर के जोन चतुर्थ से कचरा संग्रहण एवं परिवहन के कार्य के लिए इच्छुक व पात्र निविदादाताओं से ई-प्रोक्युरमेन्ट प्रकिया द्वारा ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रारम्भ तिथि 30.06.2024 एवं अंतिम तिथि 22.07.2024 तथा निविदा खुलने की तिथी 23.07.2024 रहेगी तथा कार्य की प्री-बीड मिटिगं दिनांक 10.07.2024 समय 3.00 PM बजे आयोजित की जायेगी। कार्य की 02 वर्ष (दो वर्ष) हेतु अनुमानित लागत 127.33 लाख रू0 है। निविदा से संबंधित अन्य समस्त विवरण इंटरनेट साईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है। UBN No. UNP2425WSOB00025

राज.संवाद/सी/24/1577 आयुक्त, नगर निगम, उदयपुर

289 किलो घी, 133 किलो पॉम ऑयल किया सीज

जालोर शहर के निकट सारणेश्वर डेयरी पर खादय सुरक्षा टीम ने दुध व घी के सेम्पल भरे गये।

जालोर, (कासं)। खाद्य सुरक्षा आयुक्त इकबाल खान एवं जिला कलेक्टर पूजा पार्थ के निर्देशानुसार आमजन को शुद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाने एवं खाद्य पदार्थो में मिलावट पर अंकुश लगाने के लिए शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा दल जालोर द्वारा मेडा उपरला में कार्यवाही की गई।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रमाशंकर भारती ने बताया कि खाद्य सुरक्षा अधिकारी हनवन्त सिंह के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा टीम द्वारा सोमवार दोपहर पश्चात को सारणेश्वर मिल्क डेयरी फार्म मेडा उपरला का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान खाद्य का अवलोकन किया गया एवम् भैंस का दूध, खुला घी, मिल्क क्रीम तथा पॉम ऑयल के जांच के लिए 5 नमूने लिए गए। साथ ही डेयरी पर पॉम ऑयल के 9 डिब्बे पाए जाने एवं पॉम ऑयल से घी बनाने की संदिग्धता की आशंका पर 289 किलो घी एवं 133 किलो पॉम ऑयल को मौके पर ही सीज क्या गया। लिए गए सभी नमूने जांच हेतु जन स्वास्थ्य प्रयोगशाला जोधपुर भिजवाएं गए है, जांच रिपोर्ट आने पर अग्रिम कार्यवाही की जायेंगी।

सेवारत चिकित्सक संघ ने पूर्व मंत्री राजेंद्र गुढ़ा के खिलाफ मोर्चा खोला

झुंझुनूं, (निसं)। पूर्व विधायक एवं पूर्व मंत्री राजेंद्र गुढ़ा द्वारा सरकारी चिकित्सकों के लिए अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल करने पर मंगलवार को अखिल राजस्थान सेवारत चिकित्सक संघ जिला झुंझुनूं इकाई ने जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल को सीएम के नाम ज्ञापन देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की। जिस पर जिला कलेक्टर ने ज्ञापन सीएम तक भेजकर कार्यवाही का आश्वासन दिया है।

ज्ञापन में बताया गया है कि पूर्व विधायक राजेंद्र गुढ़ा ने 28 जून को बीडीके अस्पताल में धरना लगाकर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के जिला स्तर के सबसे उच्च पद मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवं अन्य चिकित्सकों के लिए अमर्यादित, अशोभनीय और अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते हुए चिकित्सकों के आत्म सम्मान को गहरी ठेस पहुंचाई है। जिससे पूरा चिकित्सकीय समुदाय की भावनाएं आहत हुई है। ज्ञापन में बताया गया है कि चिकित्सक निरंतर आमजन की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।

बीडीके अस्पताल की ओपीडी प्रतिदिन लगभग 3000 से ऊपर रहती है। बीडीके अस्पताल में प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के ऑपरेशन किए जाते हैं एवं 15 से 20 प्रतिदिन संस्थागत प्रसव कराएं जाते हैं। इसके अलावा जिलेभर में चिकित्सकों द्वारा प्रतिदिन हजारों मरीजों को चिकित्सा सेवाएं प्रदान की जाती है। चिकित्सक दिन रात आमजन की सेवा में लगे हुए हैं। फिर भी चिकित्सकों के प्रति अभद्र भाषा का प्रयोग पूर्व विधायक द्वारा किया जाना चिकित्सकों के मनोबल को कमजोर करता है। जिससे न केवल जिले के बल्कि पूरे प्रदेशभर के चिकित्सकों एवं चिकित्सकीय सेवा से जुड़े लोगों के लोगों में आक्रोश व्याप्त है।

सरकारी चिकित्सकों ने कलेक्टर चिन्मयी गोपाल को सीएम के नाम ज्ञापन दिया।

■ चिकित्सकों के लिए अमर्यादित बोलने पर कानूनी कार्रवाई की मांग को लेकर सीएम के नाम ज्ञापन सौंपा

ज्ञापन में चिकित्सकों के खिलाफ की गई अभद्र टिप्पणी और अस्पताल में धरना प्रदर्शन से अशांति फैलाने एवं मरीज के इलाज में व्यवधान करने पर विधि सम्मत कानूनी कार्रवाई की मांग की गई है। साथ ही मांग की गई है कि प्रशासन द्वारा अस्पताल में मरीजों की सेवा को मध्य नजर रखते हुए धरना प्रदर्शन नहीं होने दिया जाए। ताकि अस्पताल की सेवाएं निर्बाध रूप से मरीज को उपलब्ध कराई जा सके। राजकीय अस्पतालों में पोस्टमार्टम के लिए साथ आने वाले लोगों को भी धरना प्रदर्शन से रोका जाए। इससे मरीजों की सेवाएं बाधित होती है।

तीन दिन तक कार्रवाई नहीं होने की स्थिति में चिकित्सकीय कार्य का बहिष्कार किया जाएगा। जिसकी समस्त जिम्मेदारी राज्य सरकार की होगी। ज्ञापन देने उपचार प्रदेश अध्यक्ष डॉ. कमलचंद सैनी, आईएमए अध्यक्ष डॉ. लालचंद ढाका, अरिशदा जिलाध्यक्ष डॉ. एस. जब्बार, महासचिव डॉ. राजेंद्र ढाका, सीएमएचओ डॉ. छोटेलाल गुर्जर, आरसीएचओ डॉ. दयानंद सिंह, डिप्टी सीएमएचओ डॉ. भंवरलाल सर्वा, डिप्टी सीएमएचओ परिवार कल्याण डॉ. अभिषेकसिंह, डीपीसी डॉ. जितेंद्र सिंह, पीएमओ डॉ. संदीप पचार, ब्लॉक प्रतिनिधि डॉ. रेखा, डॉ. राहुल सुमन, डॉ. तेजपाल कटेवा, डॉ. प्रहलाद, डॉ. शैलेश कुमार, प्रवक्ता डॉ. कैलाश राहड़ सहित जिलेभर से सरकारी सेवारत एवं निजी चिकित्स्क पहुंचे।

राजस्थान पुलिस आधारभूत संरचना विकास निगम लिमिटेड, जयपुर।
(राजस्थान सरकार का उपक्रम)
CIN : U45201RJ2013SGC043014
756, पुलिस मुख्यालय, लालकोठी, जयपुर-302015 (राजस्थान)
फोन नं. 0141-2740784, ई-मेल rpidcl@rajasthan.gov.in

क्रमांकः-RPHCCL/NIT/469/919 दिनांक : 01.07.2024

निविदा सूचना संख्या-03/2024-25

राजस्थान पुलिस आधारभूत संरचना विकास निगम लिमिटेड, जयपुर के विभिन्न कार्यो के पर्यवेक्षण हेतु 08 कनिष्ठ अभियंता सिविल माह अगस्त 2024 से 11 माह तक की अवधि के लिए अनुबन्ध पर लेने हेतु योग्य सेवा प्रदाता/फर्मो से मुहर बंद निविदाएं (वित्त जी एण्ड टी) विभाग के परिपत्र दिनांक 30.04.2018 से प्राप्त दिशा-निर्देशानुसार) आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र राजस्थान पुलिस की वेबसाईट www.police.rajasthan.gov.in स्टेट पब्लिक प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल (SPPP) की वेबसाईट www.sppp.raj.nic.in एवं http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है। सशर्त निविदा मान्य नहीं होगी। निविदा का विवरण निम्नानुसार है :-

कार्य	08 कनिष्ठ अभियंता सिविल
निविदा प्रपत्र का मूल्य	500/-
निविदा अमानत राशि	46000/-
अनुमानित लागत	23.00 लाख
निविदा प्रपत्र उपलब्ध होने की दिनांक	दिनांक 01.07.2024 प्रातः 9.30 से 16.07.2024 सायं 4 बजे तक
निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	16.07.2024 सायं 6.00 बजे तक
निविदा खोले जाने की तिथि व समय	18.07.2024 3.00 PM तक
निविदा जमा कराने का स्थान	भरी हुई निविदा प्रपत्र इलेक्ट्रॉनिक फोरमेट में वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर अपलोड किया जाना है।

निविदा सम्बधित शर्तें एवं अन्य जानकारी राजस्थान पुलिस आधारभूत संरचना विकास निगम लिमिटेड, कार्यालय से कार्यालय समय में प्राप्त की जा सकती है। भविष्य में निविदाओं में संशोधन होने पर उपरोक्त वेबसाईटों पर ही प्रेषित किया जावेगा।

राज.संवाद/सी/24/1592 महाप्रबन्धक

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, खण्ड केकडी
बघेरा रोड पी.एच.ई.डी. कोलानी केकडी

क्रमांक-अअ/केकडी/2024-25/867-896 दिनांक-26.06.2024
E-mail: eep.pis.ajm.phed@rajasthan.gov.in

निविदा सूचना

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यो हेतु नियमानुसार सक्षम श्रेणी में राज्य सरकार/केन्द्र सरकार में पंजीकृत संवेदकों जो राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया द्वारा ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। इछुक संवेदकों द्वारा निविदा फॉर्म ऑन लाईन वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in से दिनांक 11.07.2024 तक सायं 6.00 बजे तक डाउनलोड की जाकर उसी दिन 6.00 बजे तक ऑन लाईन अपलोड की जा सकती है। धरोहर राशि, टेण्डर फीस व Tender Processing Fee (M.D. RISL) की की राशि ई-ग्रास के माध्यम से ऑन लाईन जमा करवाना है। कार्यालय में प्रथम लिफाफा दिनांक 12.07.2024 को सुबह 11.00 बजे खोला जावेगा।

ऑन लाईन निविदा प्रक्रिया में वे ही संवेदक भाग ले सकेंगे जिनके पास डिजिटल हस्ताक्षर होने के साथ ही उक्त वेबसाईट पर पंजीकृत होंगे। निविदा प्रपत्र www.sppp.rajasthan.gov.in साईट पर देखें जा सकते है। निविदा से संबंधित विवरण http://www.eproc.rajasthan.gov.in वेबसाइट पर देखे जा सकते है।

1	निविदा संख्या	28/2023-24 से 31/2023-24
2	कार्य का नाम	खण्ड केकडी के अधीन विभिन्न सिविल कार्य।
3	अनुमानित लागत	161.16 लाख
4	धरोहर लागत	322320.00
5	निविदा डाउनलोड करने की अन्तिम तिथी	11.07.2024 को 6.00 बजे तक
6	निविदा खोलने की तिथी (प्रथम लिफाफा खोलने की तिथि)	12.07.2024 को सुबह 11.00 बजे

निविदा को एस.पी.पी. पोर्टल पर आई.डी. नम्बर निम्नानुसार है।

NIB CODE	PHE2425A0985
NIT NO.	UBN Number
20/24-25	PHE2425WSOB02145
21/24-25	PHE2425WSOB02146
22/24-25	PHE2425WSOB02147
23/24-25	PHE2425WSOB02148

अधिशाषी अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग
खण्ड केकडी

DIPR/C/5141/2024

आयुष्मान कार्ड वितरण करने में श्रीगंगानगर सिरमौर

स्वास्थ्य कर्मी कर रहे कार्ड वितरण, विभाग कर रहा ई-केवाईसी, जिला प्रथम स्थान पर

श्रीगंगानगर, (कासं)। राज्य सरकार की अतिमहत्वाकांक्षी मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत पंजीकृत सामाजिक आर्थिक जनगणना 2011 के जिले में एक लाख 90 हजार 661 पात्र परिवारों को चिकित्सा विभाग की ओर से आयुष्मान कार्ड वितरण किए जा रहे हैं, जिसमें उत्कृष्ट कार्य करते हुए जिला प्रथम स्थान पर रहा है। जिला कलेक्टर लोकबंधु के निर्देशों पर सीएमएचओ डॉ. अजय सिंगला के नेतृत्व में डीपीसी डॉ. सुनील बिश्नोई व आशा प्रभारी रायसिंह सहारण सहित सभी स्टाफ और आशा सहयोगिनियों का इसमें अहम योगदान रहा है।

कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सुनील बिश्नोई ने बताया कि सामाजिक आर्थिक जनगणना 2011 के तहत श्रीगंगानगर जिले के 190661 पात्र परिवारों की ईकेवाईसी एवं आयुष्मान कार्ड वितरण का कार्य स्वास्थ्य विभाग के फिल्ड स्तरीय कार्मिक कर रहे हैं। राज्य सरकार की इस महत्वकांक्षी योजना का लाभ सभी पात्र परिवारों को मिले, इसके लिए विभाग की ओर से ई केवाईसी का कार्य लगातार किया जा रहा है और कार्ड भी वितरण किए जा रहे हैं। इसमें विभागीय टीम ने उत्कृष्ट कार्य करते हुए राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। विभाग की ओर से अब तक करीब 73 फीसदी लोगों तक कार्ड पहुंचा दिया है, जो राज्य में सर्वाधिक है। टीम में आचार संहिता हटने के बाद विगत माह के 20 दिन में ही करीब 73 हजार से अधिक कार्ड वितरण कर यह उपलब्धि हासिल की है। वहीं शेष कार्ड वितरण करने का कार्य जारी है, जो इसी माह वितरण कर दिए जाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके चलते राज्यस्तरीय अधिकारियों ने जिला टीम की सराहना की है।

सीओआईईसी विनोद बिश्नोई ने बताया कि प्रिन्टेड आयुष्मान कार्ड निदेशालय से जिला मुख्यालय और यहां से खण्डस्तर पर भिजवाने के बाद खण्ड से ग्राम पंचायत स्तर तक कार्ड वितरण किए जा रहे हैं। आमजन अपने स्तर पर आधार के माध्यम से एप से या नजदीकी ईमित्र केंद्र पर जाकर भी यह कार्ड बना सकते हैं। कार्ड केवल सामाजिक आर्थिक जनगणना 2011 में पंजीकृत परिवारों का ही बनेगा। उन्होंने बताया कि जिन क्षेत्रों में 100 कार्ड वितरण किया जा चुका है वहां की आशा सहयोगिनियों को जिलास्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति, ''विशिष्ठ अ'' श्रेणी, प्रतापगढ़

क्रमांक/निविदा/2024-25/189-196 दिनांक : 27.06.2024

ई-निविदा सूचना 2024-26

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि इस मण्डी समिति में निम्न व्यवस्थाओं/सेंवाओंहेतु निम्नानुसार ई-निविदाएं आमन्त्रित की जाती है।

क्र. सं.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	बोली प्रतिभूति राशि	निविदा शुल्क	प्रोसेसिंग फीस	ऑन लाईन निविदा डाउनलोड एवं अपलोड करने की अन्तिम दिनांक एवं समय	ऑन लाईन निविदा खोलने की तिथि एवं समय
1	चौकीदारी व्यवस्था ठेंका	22.00	44000/-	500/-	500/-	27.06.2024 Time 01;00 P.M. to 08.07.2024 Time 05;00 P.M.	10.07.2024 Time 03;00 P.M.
2	सफाई व्यवस्था ठेका	13.00	26000/-	500/-	500/-		
3	ई-नाम परियोजना	13.00	26000/-	500/-	500/-		

(1) उक्त निविदा ई-निविदा प्रणाली के द्वारा ONLINE ही स्वीकार की जायेगी। (2) ONLINE निविदा हेतु बोली प्रतिभूति राशि एवं निविदा शुल्क केवल डी.डी./बैंकर चैक के रूप मे कृषि उपज मण्डी समिति, प्रतापगढ़ के पक्ष में तथा प्रोसेसिंग फीस का डी.डी./बैंकर चैक Managing Director RISL Jaipur के पक्ष में दिनांक 09.07.2024 को दोपहर 03.00 बजे तक भौतिक रूप से सचिव कृषि उपज मण्डी समिति प्रतापगढ़ के कार्यालय मे जमा करवाना होगा। जिसके अभाव में निविदा नहीं खोली जायेगी। (3) निविदा से संबन्धित विवरण इंटरनेट साईट eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in, http://agriculture.rajasthan.gov.in पर देखी एवं डाउनलोड की जा सकती है। (4) बोली प्रतिभूति राशि के बिना निविदा स्वीकार नहीं होगी। (5) निविदाओं हेतु गठित कमेटी द्वारा बिना कारण बताये निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार मण्डी समिति के पास सुरक्षित रहेगा। UBN-DAM2425SLOB00327, DAM2425SLOB00328, DAM2425SLOB00329

राज.संवाद/सी/24/1609 प्रशासक सचिव

लक्ष्मणगढ़ पुलिस थाने के हैडकांस्टेबल रिश्वत लेते ट्रैप

अलवर, (निसं)। एसीबी की टीम ने अलवर के लक्ष्मणगढ पुलिस थाने के हैड कांस्टेबल मुरारी लाल मीणा को 40 हजार रुपए रिश्वत लेने के आरोप में गिरफ्तार किया है।

आरोपी हैड कांस्टेबल ने मुकदमा दर्ज करने के एवज में रिश्वत ली। पुलिस ने हैड कांस्टेबल को अरेस्ट किया है। वहीं दलाल को भी पकडा है। एसीबी को शिकायत मिली की एक मारपीट के मामले में रिश्वत मांगी गई थी जिस पर एसीबी ने कार्यवाही करते हुए अंजाम तक पहुंचा दिया। इस प्रकरण में एक दुकानदार की भूमिका संदिग्ध बताई गई है जिसकी जांच चल रही है।

कार्यालय नगरपालिका रावतभाटा, जिला-चित्तौडगढ़ (राज.)

क्रमांक/नपारा/स्टोर/निविदा/2024-25/221 दिनांक :- 26/06/2024

ई-निविदा सूचना संख्या- 01/2024-25

नगरपालिका रावतभाटा द्वारा कार्य की प्रकृति अनुसार सक्षम व्यक्ति/संस्था/कम्पनी/संवेदक से वित्तीय वर्ष 2024-25 मे निम्नांकित कार्य के लिए 03 वर्ष की दर अनुबंध पर उनके निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा फॉर्म एवं ई-निविदा से संबंधित विवरण व शर्ते वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in पर देखी व प्राप्त की जा सकती है। उक्त निविदा का NIB Code :- DLB2425AB0593 है। कार्य का UBN NO. :- DLB2425WSOB01887 है।

राज.संवाद/सी/24/1606 अध्यक्ष अधिशाषी अधिकारी

अवैध शराब से भरी कार जब्त

उदयपुर, (कासं)। शहर के हिरणमगरी थाना क्षैत्र में तलाशी अभियान के दौरान पकडे जाने के भय से चालक अवैध शराब से भरी कार छोड़ कर फरार हो गया।

जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर चलाए जा रहे तलाशी अभियान के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, पुलिस उप अधीक्षक छगन पुरोहित के सुपरविजन में हिरणमगरी थानाधिकारी के निर्देशन में हेडकांस्टेबल राजेन्द्रसिंह के नेतृत्व में कांस्टेबल अशोक कुमार,सतीश, रामधन,नन्दकिशोर सोमवार रात में रिको कलडवास क्षैत्र में गश्त कर रहे थे। इस दौरान पुलिस वाहन को देख चालक कार छोड़ कर भागा। जिसका पिछा किया लेकिन पहाड़ियों की तरफ फरार हो या।

तबीयत बिगड़ने से पांच दुधारू पशुओं की मौत

धौलपुर, (निसं)। धौलपुर जिले के कौलारी कस्बे में मंगलवार सुबह के समय घर के बाहर बंधी पांच दुधारू मवेशियों की अचानक देखते ही देखते तबियत बिगड़ी और सभी पशुओं ने एक साथ दम तोड़ दिया। घटना के बाद परिजनों में हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही मौके पर एकजुट हुए लोगों में घटना को लेकर चर्चा का विषय बना रहा। घटना के बाद पोस्टमार्टम कार्रवाई को लेकर लोगों ने काफी समय तक हंगामा किया। मुआवजा सहित उचित कार्यवाही की मांग को लेकर लोगों ने रोष जताया। तभी पुलिस की मौजूदगी में समझाइश करते हुए डॉक्टर मुकेश त्यागी की ओर से चिकित्सा टीम के साथ पोस्टमार्टम किया गया।

कौलारी निवासी फूल सिंह पुत्र रामजीलाल लोधा के घर के बाहर पशु बंधे हुए थे। पशुपालक की ओर से सभी पशुओं को भली भांति रोजाना की तरह चारा डाल दिया था। तभी अचानक थोड़ी देर बाद चारा खाते ही एक के बाद एक पशु जमीन पर गिरते गए, जिनकी मौत हो गई। पशुओं की मौत से पीड़ित का बड़ी तादात में नुकसान हो गया है। पशुओं की मौत को लेकर किसी जहरीला पदार्थ खाने का अनुमान लगाया जा रहा है। पीड़ित पशुपालक सहित अन्य लोगों ने पुलिस थाने पर पहुंचे घटना को लेकर शिकायत दी है तथा आवश्यक कार्रवाई की मांग की है। पुलिस की ओर से पशुओं का चिकित्सा टीम से पोस्टमार्टम कराते हुए घटना को लेकर जांच की जा रही है।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड जालोर
Tel: 02973-222272 E-mail:xenhed_jal@yahoo.in

क्रमांक-जालोर/निविदा/ /2024-25/632-37 दिनांक-26.06.2024

बिड आमंत्रण सूचना (NIB) संख्या 1-7/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यो हेतु लोक निर्माण और वित्तीय नियम के पार्ट-4 नियम 334 (ए) (iii) के तहत रू. 150.00 लाख तक निविदाओं हेतु केवल जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत एवं इससे अधिक लागत की निविदाओं हेतु जन स्वास्थ्य अभियात्रिकी विभाग में पंजीकृत निविदादाताओं हेतु नियमानुसार छूट के साथ एवं केन्द्र/राज्य सरकार के अधिकृत विभागों/संगठनों, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, रेल, डाक, दूर संार विभागों में उपयुक्त समकक्ष श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से पूर्ण धरोहर राशि के साथ ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया द्वारा निम्न ऑनलाईन बिड आमंत्रित की जाती है।-

बिड संख्या	NIB No. PHE2425A0992	अनुमानित लागत (लाखों में)	धरोहर राशि 2 प्रतिशत	बिड शुल्क (रूपये)	ई-प्रक्रिया शुल्क	कार्य पूर्ण करने की अवधि
01/2024-25	UBN NO.-PHE2425WSOB00661	25.00	50000/-	1000/-	1000/-	2 माह
02/2024-25	UBN NO.-PHE2425WSOB00662	21.00	42000/-	1000/-	1000/-	2 माह
03/2024-25	UBN NO.-PHE2425WSOB00663	25.00	50000/-	1000/-	1000/-	2 माह
04/2024-25	UBN NO.-PHE2425WSOB00664	29.50	59000/-	1000/-	1000/-	2 माह
05/2024-25	UBN NO.-PHE2425WSOB00665	29.00	58000/-	1000/-	1000/-	2 माह
06/2024-25	UBN NO.-PHE2425WSOB00666	28.00	56000/-	1000/-	1000/-	2 माह
07/2024-25	UBN NO.-PHE2425WSOB00667	39.60	79200/-	1000/-	1000/-	2 माह
ऑनलाईन बिड उपलब्ध होने की तिथि		28.06.2024				
ऑनलाईन बिड डाउनलोड/अपलोड करने की अन्तिम तिथि		12.07.2024 को 6.00 पी.एम.				
ऑनलाईन बिड खोलने की तिथि		15.07.2024 को 2.00 पी.एम.				

बिड से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट www.dipronline.org, sppp.raj.nic.in, www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

(जितेन्द्र त्रिवेदी)
अधिशाषी अभियंता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग,
खण्ड जालोर

DIPR/C/5196/2024

'राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम ने ''डी-बार'' कंपनी को क्यों दिया टैंडर?'

राजस्थान हाईकोर्ट ने ''कन्वेयर बेल्ट'' खरीद की टैंडर प्रक्रिया पर रोक लगाते हुए सभी पक्षकारों को नोटिस जारी किए

जयपुर (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लि. द्वारा विभिन्न पावर प्लांट्स में उपयोग के लिए ''कन्वेयर बेल्ट'' की खरीद के टैंडर प्रक्रिया पर रोक लगा दी है। विभाग ने इस टैंडर में एन.आर.सी. इंडस्ट्रीज़ प्रा. लि. के पक्ष में 10 जून 2024 को ''लेटर ऑफ इंटेंट'' जारी किया था। जिसके खिलाफ निविदा में भाग लेने वाली एक अन्य कंपनी सोमी कन्वेयर्स बेल्टिंग्स लि. ने अदालत में चुनौती दी थी। जस्टिस अशोक कुमार जैन ने सुनवाई के बाद टैंडर प्रक्रिया पर रोक लगाई।

इस मामले में याचिकाकर्ता की तरफ ने अधिवक्ता सुशील डागा, अनुराग कलावटिया और उनकी सहायक वकील पारूल सिंघल पैरवी के लिए पेश हुए थे।

मामले के तथ्यों के अनुसार, इस निविदा में भाग लेने के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि, जो फर्म इस टैंडर में भाग लेगी, वह पिछले 3 वित्तीय वर्ष से नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (एन.टी.पी.सी) से मान्यता प्राप्त होनी चाहिए। साथ ही पिछले 7 वर्षों से लगातार किसी सरकारी कंपनी अथवा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में रजिस्ट्रर्ड कंपनी को ''कन्वेयर बेल्ट'' बेचने वाली होनी चाहिए।

- **मामले के तथ्यों के अनुसार, इस निविदा में भाग लेने के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि, जो फर्म इस टैंडर में भाग लेगी, वह पिछले 3 वित्तीय वर्ष से नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन से मान्यता प्राप्त होनी चाहिए थी। साथ ही पिछले 7 वर्षों से लगातार किसी सरकारी कंपनी अथवा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में रजिस्ट्रर्ड कंपनी को ''कन्वेयर बेल्ट'' बेचने वाली होनी चाहिए।**
- **याचिकाकर्ता कंपनी सोमी कन्वेयर्स बेल्टिंग्स लि. ने अदालत को बताया कि, निविदा में शामिल हुई एन.आर.सी. इंडस्ट्रीज़ के दस्तावेजों में साफ जाहिर है कि एन.टी.पी.सी. ने इस कंपनी को 3 वर्ष के लिए ''डी-बार'' कर रखा है। इसके बावजूद विद्युत उत्पादन निगम ने कंपनी के पक्ष में ''लेटर ऑफ इंटेंट'' जारी कर दिया**

याचिकाकर्ता की ओर से अदालत में कहा गया कि, निविदा में एन.आर.सी. इंडस्ट्रीज़ प्रा. लि. के दस्तावेजों में साफ जाहिर है कि एन.टी.पी.सी. ने इस कंपनी को 3 वर्ष के लिए ''डी-बार'' कर रखा है। यानि कि यह कंपनी टैंडर प्रक्रिया में भाग नहीं ले सकती।

इसके बावजूद राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लि. के मुख्य अभियंता और प्रबंध निदेशक ने इस कंपनी पर मेहरबानी दिखाते हुए इसके पक्ष में ''लेटर ऑफ इंटेंट'' जारी कर दिया। अदालत ने इस प्रकरण की सुनवाई करते हुए सभी पक्षकारों को नोटिस जारी किया है। साथ ही 5 सप्ताह बाद इस प्रकरण की सुनवाई तय की है। हाईकोर्ट के इस आदेश की कॉपी मुख्य सचिव और वित्त विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव को भी भेजी जायेगी।

आदर्श नगर में ''तीन तलाक'' का मामला

जयपुर । आदर्श नगर इलाके में पीहर आए पति के द्वारा पत्नी को तीन तलाक देने का मामला सामने आया है। रिक्शा में बैठाकर आरोपी पति महिला को उसके घर लेकर आया। परिजनों के सामने तीन तलाक बोलकर छोड़ भागा। आदर्श नगर थाने में पीड़िता ने मुस्लिम महिला विवाह अधिकारों की सुरक्षा एक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज करवाई।

पुलिस ने बताया कि घाटगेट निवासी 24 साल की महिला ने तीन तलाक का मामला दर्ज करवाया है। करीब सालभर पहले उसका निकाह जयसिंहपुरा खोर निवासी युवक से हुआ था। आरोप है कि निकाह होने के बाद से ही आरोपी पति उसके साथ गाली-गलौच करता था। उसके विरोध करने पर आरोपी पति मारपीट भी करता था। गत 30 जून को दोपहर आरोपी पति रिक्शे में बैठाकर अपनी पत्नी को उसके पीहर लेकर आया। घर आने पर परिजनों से मिलने-जुलने के दौरान ही आरोपी पति ने तीन बार तलाक-तलाक-तलाक बोला। परिजनों के सामने तीन तलाक देकर आरोपी पति घर पर पत्नी को छोड़कर भाग निकला। आदर्श नगर थाने में परिजनों के साथ पहुंची पीड़ित पत्नी ने शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस ने आरोपी पति के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

राजस्थान यूनिवर्सिटी ने मृत छात्र के परिजनों को 12 लाख रु.सौंपे

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय के कॉमर्स कॉलेज में बी.बी.ए. द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत 19 वर्षीय छात्र चिन्मय गौड पुत्र संजय शर्मा, निवासी ब्रह्मपुरी की जवाहर सर्किल पर राजस्थान रोडवेज की बस से दुर्घटना होने पर मौत हो गई थी। कॉमर्स कॉलेज का यह छात्र अपनी बाइक पर सवार था, अचानक असावधानी के चलते सवाई माधोपुर डिपो की बस ने उसे पीछे से टक्कर मारी, जिससे छात्र चिन्मय गंभीर रूप से घायल हो गया था, बाद में जयपुरिया हॉस्पिटल में उपचार के दौरान उसकी मृत्यु हो गई।

राजस्थान विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर अल्पना कटेजा ने मंगलवार को छात्र के पिता संजय शर्मा को इस दुखद हादसे पर सांत्वना देते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय की ओर से 12 लाख रुपए की सहायता राशि का चैक प्रदान किया। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो.रामावतार शर्मा, चीफ प्रॉक्टर प्रो.आर.एन.शर्मा, जनसंपर्क अधिकारी डॉ.भूपेंद्र सिंह शेखावत भी उपस्थित थे।

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा मृत छात्र के मनोनीत परिजन को यह सहायता राजस्थान विश्वविद्यालय में देश में पहली बार लागू की गई छात्र दुर्घटना सहायता योजना के तहत प्रदान की गई है।

इस योजना के तहत विश्वविद्यालय के किसी भी छात्र के दुर्घटना में घायल हो कर किसी चिकित्सालय में 24 घंटे की अवधि तक चिकित्सा लेने पर एक लाख रुपए की सहायता और मृत्यु होने की स्थिति में छात्र के मनोनीत परिजन को 12 लाख रुपए की सहायता राशि प्रदान किए जाने का इस वर्ष प्रावधान है।

स्मार्टफोन का आई.एम.ई.आई. नंबर बदलने वाली शातिर गैंग पकड़ी

आरोपी रायसर प्लाजा में दुकान चलाते थे; गैंग उन फोन के नंबर को क्रेक करती, जो ग्राहक किस्त पर फोन लेते थे

जयपुर (कासं)। राजधानी की कोतवाली थाना पुलिस ने स्मार्ट फोन के लॉक तोड़ने के साथ उनके आईईएमआई नंबर को बदलने वाली गैंग के चार सदस्यों को पकड़ा है। पुलिस की प्रारम्भिक पूछताछ में सामने आया कि आरोपित उन फोन के नंबर को क्रेक करते थे, जो ग्राहक किस्त पर फोन लेते थे। पुलिस जानकारी में सामने आया कि यह लोग कबाड़ और एक्सचेंज वाले फोन से ये सारा डाटा चुराते थे।

- **आरोपितों ने जयपुर शहर और जयपुर ग्रामीण में भी अपने कस्टमर बना रखे थे।**
- **पुलिस ने कम्प्यूटर, डेस्कटाप, लॉक तोड़ने और आई.ई.एम.आई. नंबर क्रेक करने का सॉफ्टवेयर डिवाइस और 250 से ज्यादा मोबाइल जब्त किए है।**
- **पुलिस को आरोपितों के कब्जे से करीब 100 से अधिक बदले गए मोबाइल के आई.एम.ई.आई. नंबर का रिकॉर्ड ट्रेस आउट भी मिला है।**

पुलिस उपायुक्त जयपुर उत्तर राशि डोगरा डूडी ने बताया कि कोतवाली पुलिस ने रायसर प्लाजा में कार्रवाई करते स्मार्ट फोन के लॉक तोड़ने के साथ उनके आईईएमआई नंबर को बदलने वाली गैंग के अतुल गुप्ता (36) निवासी सूर्यनगर गोपालपुरा महेश नगर, लोकेश गर्ग उर्फ लालू (30) निवासी महावीर कॉलोनी विस्तार करतारपुरा महेश नगर हाल मांग्यावास मानसरोवर, गौतम सैनी उर्फ गोलू (38) निवासी रविन्द्र नगर जगतपुरा प्रतापनगर और महेश मुरजानी (53) निवासी सेक्टर-16 प्रताप नगर को गिरफ्तार किया है। चारों आरोपित रायसर प्लाजा में दुकान चलाते थे और इन लोगों ने आस-पास ग्रामीण इलाकों में भी अपना नेटवर्क फैला रखा था। पुलिस ने आरोपितों के कब्जे से कम्प्यूटर, डेस्कटाप, लॉक तोड़ने और आईईएमआई नंबर क्रेक करने का सॉफ्टवेयर डिवाइस और 250 से ज्यादा मोबाइल जब्त किए है। पुलिस को आरोपितों के कब्जे से करीब 100 से अधिक बदले गए मोबाइल के आईईएमआई नंबर का रिकॉर्ड ट्रेस आउट भी मिले है।

पूछताछ में आरोपितों ने बताया कि जो ग्राहक किस्त पर फोन लेते है और समय पर वे उसे चुका नहीं पाते हैं तो उनका फोन लॉक हो जाता है। ऐसे में ये लोग कम्प्यूटर सिस्टम से मोबाइल का लॉक तोड़ देते और फिर आईईएमआई नंबर बदल देते थे। इससे पहले कोतवाली थाना पुलिस को सूचना मिली कि रायसर प्लाजा में कुछ शॉपकीपर मोबाइल लॉक-अनलॉक करने और आईईएमआई नंबर क्रेक करने का काम कर रहते है। कोतवाली पुलिस ने डीएसटी नॉर्थ के साथ मिलकर रायसर प्लाजा में छापेमारी की। इनके पास कम्प्यूटर सिस्टम में (यूएमटी टूल, एमटीके-2, नया एएमटी, अनलॉक टूल-2, बोर्निया, जेड डब्यू एक्स) सॉफ्टवेयर इंस्टॉल था। जबकि 20-25 हजार रुपये कीमत का हार्डवेयर डिवाइस (हार्डवेयर टूल यू एफ एस, यू एफ आई, ई ए एस वाई जेटीएजी) का यूज करते थे। हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के जरिए ये पूरा काम होता था। आरोपितों ने बताया कि जिस मोबाइल का आईएमईआई नंबर बदलना होता उसे पहले कंप्यूटर से कनेक्ट करते थे। कम्प्यूटर से कनेक्ट करने के बाद इन सॉफ्टवेयर के जरिए पूरे फोन को रिस्टोर कर देते थे। इसके बाद जब इसमें मोबाइल की डिटेल मांगी जाती तो मॉडल नंबर और दूसरी जानकारी तो उसी फोन की रखते थे। लेकिन, जब आईईएमआई नंबर सॉफ्टवेयर मांगता तो ये किसी पुराने कबाड़ हुए या फिर एक्सचेंट में आए फोन के आईईएमआइ नंबर डाल कर उसे अपडेट कर देते थे। आरोपितों की दुकान से बड़ी संख्या में पुराने मोबाइल भी बरामद किए है।

जयपुर में 3200 किलो अचार-मुरब्बा जब्त, 1500 किलो नकली घी पकड़ा

जयपुर । प्रदेश में मिलावट के खिलाफ निरंतर अभियान चलाया जा रहा है। खाद्य सुरक्षा आयुक्त इकबाल खान के निर्देशन में मंगलवार को विभिन्न स्थानों पर कार्रवाई की गई।

अतिरिक्त आयुक्त पंकज ओझा ने बताया कि मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया में अपेक्स सर्किल के पास श्रीनाथ अचार फैक्ट्री पर खाद्य सुरक्षा दल द्वारा कार्रवाई की गई। यहां निरीक्षण के दौरान अनेक कमियां पाई गईं। फैक्ट्री में साफ-सफाई की स्थिति असंतोषजनक होने के साथ ही बिना निर्माण तिथि के केमिकल्स पाए गए।

फैक्ट्री में आंवला मुरब्बा के 18-18 किलो के 81 टिन तथा लाल मिर्च अचार के 15-15 किलो के 120 टिन मौके पर रखे हुए थे। विक्रेता ने बताया कि इन्हें हाथरस से खरीद कर लाया गया था, परंतु इन पर किसी प्रकार की कोई निर्माण तिथि, निर्माता का नाम आदि सूचना अंकित नहीं थी। खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के अंतर्गत नमूने लेने के बाद माल को सीज किया गया।

इसी प्रकार फैक्ट्री में लाल मिर्च पाउडर के 10 बैग मिले, जिनमें 500 किलो लाल मिर्च पाउडर रखा हुआ था, जो अचार बनाने के काम लिया जा रहा था। इस मिर्च पाउडर की गुणवत्ता में कमी का अंदेशा होने पर एक नमूना लेने के पश्चात लाल मिर्च पाउडर को भी सीज किया गया। मौके पर एक प्लास्टिक के ड्रम में लगभग 100 किलो कैर का अचार रखा हुआ था, जिसमें फफूंद लगी हुई थी। इसे मौके पर ही नष्ट करवाया गया। इसके अतिरिक्त मौके से वेजिटेबल सॉस एवं मिक्स अचार का भी एक-एक नमूना जांच के लिए लिया गया, जिनकी जांच रिपोर्ट प्राप्त होने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। मौके पर मिली कमियों पर धारा 32 के अंतर्गत नोटिस जारी किया गया है। इसकी पालना नहीं करने पर फूड लाइसेंस निरस्त करने की कार्रवाई की जाएगी।

इसी प्रकार दूसरी बड़ी कार्रवाई में 1500 किलो नकली घी पकड़ा गया। अतिरिक्त आयुक्त ने बताया कि गुप्त सूचना पर इंटरसिटी ट्रैवल्स, पोलो विक्ट्री पर खाद्य विभाग की टीम पहुंची। टीम में खाद्य सुरक्षा अधिकारी नरेश चेजारा एवं रतन गोदारा मौके पर पहुंचे तो पाया कि 1500 किलो नकली घी, जिसकी कीमत 290 रुपए किलो है, इंदौर में बनवाकर श्रीराम मिल्क फूड द्वारा जयपुर में झोटवाड़ा रोड स्थित पिंक सिटी टावर में मंगवाया गया था। इसे जयपुर शहर में बेचा जाना था। यह नकली घी ट्रैवल्स बसों से मंगवाया जा रहा था। नकली घी को सीज किया गया है।

श्रीराम मिल्क फूड द्वारा मिल्क क्रीम मदर चॉइस और मिल्क क्रीम के नाम से घी बनाया जा रहा था। श्रीराम मिल्क फॉर डेयरी इंडस्ट्रीज द्वारा इंदौर में घी बनाकर किसी और नाम की फर्म द्वारा झोटवाड़ा में ट्रेवल्स से लाकर बेचा जा रहा था।

पडौसी ने किया बच्चे से कुकर्म

जयपुर । रामगंज थाना इलाके में पडौसी युवक द्वारा काम के बहाने बुलाकर नाबालिग लड़के से कुकर्म करने का मामला सामने आया है। पुलिस को पीडित के पिता ने बताया कि 14 साल के बेटे को करीब 3 महीने पहले पडोसी ने काम के बहाने अपने घर बुलाया था। पडोसी ने डरा-धमकाकर बेटे के साथ कुकर्म किया। किसी को बताने पर मारने की धमकी दी। उसके बाद लगातार काम के बहाने अपने घर बुलाने लगा और गलत काम करता रहा। बेटे को तनाव में देखकर उससे दबाव डालकर कारण पूछा, तब बेटे ने आपबीती आपबीती सुनाई। आरोपी पडोसी की करतूत का पता चलने पर रामगंज थाने में उसके खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई गई। पुलिस ने पॉक्सो एक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

भाजयुमो ने राहुल गांधी का पुतला जलाया

जयपुर । भाजपा युवा मोर्चा की ओर से आज कांग्रेस प्रदेश कार्यालय के बाहर राहुल गांधी का पुतला फूंका और कांग्रेस के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। भाजपा युवा मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष अंकित गुर्जर चेची के नेतृत्व में मोर्चा कार्यकर्ताओं ने कांग्रेसी नेताओं से माफी मांगने की मांग की। भाजपा युवा मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष अंकित गुर्जर चेची ने कहा कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने हिन्दुओं को हिंसक बताया और हिन्दुओं का अपमान किया। कांग्रेस पार्टी की ओर से एक समुदाय विशेष के लोगों के लिए हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। ऐसे में राहुल गांधी को सार्वजनिक रूप से हिन्दुओं के खिलाफ दिए गए इस बयान को वापस लेते हुए माफी मांगनी चाहिए। राहुल गांधी के बयान के विरोध में भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं में आक्रोश देखने को मिला। कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी का पुतला फूंककर विरोध जताया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी हाय हाय, गर्व से कहो हम हिन्दू हैं, राहुल गांधी माफी मांगों जैसे नारे लगाए। इस दौरान जयपुर शहर अध्यक्ष सुरेंद्र सिंह पूरूवंशी, विक्रम चौधरी, कमल स्वामी, भुवनेश गुप्ता, भीमराज मीणा, भरत सिंह, सुरज घोडीवाल, राजवीर राठौड, विजेंद्र महावा, अमित चौधरी, अर्पित शर्मा, पवन शर्मा, दीपक शर्मा, लोहित सिंह, आशीष शर्मा, हर्षित तिवाड़ी सहित युवा मोर्चा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

हथियारों की सप्लाई के मामले में डकैत जगन गुर्जर जयपुर पुलिस के हत्थे चढ़ा

जगन अजमेर हाईसिक्योरिटी जेल में बंद भाई से मिलकर वापस लौट रहा था, इसी दौरान वैशाली नगर थाना पुलिस ने उसे पकड़ लिया

जयपुर । राजधानी की वैशाली नगर थाना पुलिस ने अवैध हथियार सप्लाई के मामले में डकैत जगन गुर्जर को गिरफ्तार किया है। जगन गुर्जर अजमेर हाईसिक्योरिटी जेल में बंद भाई से मिलकर वापस लौट रहा था, इसी दौरान पुलिस ने उसे पकड़ लिया। अब उससे पूछताछ शुरू की गई है।

पुलिस के अनुसार जगन गुर्जर को सोमवार देर शाम अजमेर रोड से डिटेन किया गया। अभी उससे वैशाली नगर थाने में पूछताछ की जा रही है। पुलिस का मानना है कि जयपुर शहर में हुए हथियार सप्लाई में उसका हाथ हो सकता है। पूछताछ में कोई इनपुट मिलता है तो जगन गुर्जर को गिरफ्तार किया जा सकता है।

एडिशनल पुलिस कमिश्नर कैलाश विश्नोई ने बताया कि जगन गुर्जर सोमवार को अजमेर हाई सिक्योरिटी जेल में बंद अपने भाई पान सिंह से मिलने गया था। अजमेर से वह जयपुर से होता हुआ धौलपुर निकल रहा था। इसी बीच पुलिस को इनपुट मिला तो वैशालीनगर थाना की पुलिस ने उसे डिटेन किया। जगन गुर्जर जयपुर में अवैध हथियारों की सप्लाई करता है। इसी को लेकर उससे पूछताछ की जा रही है। पूछताछ के बाद मंगलवार को उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। जगन गुर्जर से हथियारों की सप्लाई को लेकर कई अहम जानकारी सामने आई है। पूछताछ में मिली जानकारी की तस्दीक करवाई जा रही है। दरअसल, एक दिन पहले जयपुर की वैशाली नगर थाना पुलिस ने 9 बदमाशों को गिरफ्तार किया था। जब इन बदमाशों से पूछताछ की तो पता चला कि इसके लिए डकैत जगन गुर्जर ने हथियार दिए थे।

पुलिस को शक है कि जयपुर और शेखावाटी इलाकों में दहशत फैलाने के लिए डकैत जगन गुर्जर हथियार सप्लाई करता था। इसके लिए अजमेर हाई सिक्योरिटी जेल में बंद राजू ठेहट मर्डर केस के बदमाशों से डील की थी।

रंगदारी वसूली गैंग के बदमाश सोनू सिंह निवासी बनेड़ा, टोंक, लोकेश साहू उर्फ मोदी निवासी कुंडेरा, सवाई माधोपुर, गिरधारी मान निवासी अमरसर, शाहपुरा, हंसराज गुर्जर निवासी गोकुलपुरा, सीकर, जयसिंह निवासी अराई, अजमेर और कुलदीप वैष्णव निवासी किशनगढ़, अजमेर को अरेस्ट किया था।

इससे पहले चित्रकूट थाना पुलिस अजमेर हाई-सिक्योरिटी जेल में बंद विक्रम गुर्जर निवासी खंडेला सीकर, मुकेश जाट निवासी अमरसर शाहपुरा और कुलदीप चौधरी निवासी नीमकाथाना को चित्रकूट थाना पुलिस प्रोडक्शन वारंट पर लेकर पूछताछ कर रही थी। कुलदीप चौधरी आनंदपाल गैंग का खास मेंबर है। आनंदपाल को कोर्ट पेशी के दौरान भगाने में भी कुलदीप ने मदद की थी। बदमाश विक्रम और मुकेश राजू ड्रेहट मर्डर केस में शामिल हैं।

जब इन सभी 9 आरोपियों से पूछताछ की तो पता चला कि विक्रम और मुकेश ने सोनू और उनके गुर्गों को जेल में से हथियार उपलब्ध करवाए थे। जब इनसे हथियारों के बारे में जानकारी जुटाई तो पता चला कि डकैत जगन गुर्जर ने ही एक पिस्तौल और देसी कट्टा समेत कारतूस दिए थे।

जानकारी के अनुसार जगन गुर्जर धौलपुर के डांग के भवुतीपुरा का रहने वाला था। 1994 में उसे जीजा की हत्या हो गई थी। जिसके बाद 1994 में उसने पत्नी और भाइयों के साथ मिलकर डकैत गैंग बनाया। बता दें कि 12 जून को जगन ने धौलपुर जिले के करनपुर-सायका पुरा गांव में दो महिलाओं से मारपीट कर उन्हें निर्वस्त्र कर गांव में घुमाया था। 13 जून से पुलिस उसकी तलाश चल रही है।

चंबल में आतंक का पर्याय बने जगन गुर्जर पर राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के विभिन्न थानों में हत्या के प्रयास, लूट, फिरौती, अपहरण, नकबजनी, डकैती से जुड़े 100 से अधिक मामले दर्ज थे। उस पर 40 हजार का ईनाम भी घोषित किया गया था। 9 साल पहले अपनी बेटी की शादी करते समय कसम खाई थी कि वह अब जुर्म की दुनिया छोड़ देगा। इससे पहले वह तीन बार आत्मसमर्पण भी कर चुका। लेकिन उसने हर बार वापस जुर्म की राह पकड़ ली।

'लो फ्लोर' बस की टक्कर से महिला की दर्दनाक मौत

जयपुर। खोह नागोरियान इलाके में लो-फ्लोर बस की चपेट में आने से बाइक सवार एक महिला की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई, जबकि हादसे में महिला पति व बच्चा घायल हो गया। गुस्साए लोगों ने बस रुकाई और चालक के साथ जम कर मारपीट की, जिस के बाद चालक को पुलिस के हवाले कर दिया। स्थानीय लोग महिला को लेकर एसएमएस के ट्रोमा सेंटर पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित किया जिसके बाद शव को एसएमएस मोर्चरी में रखवा दिया है।

- **पति और बेटे के साथ बाइक पर जा रही थी; गोनेर रोड पर बस ने रौंदा**
- **गुस्साए लोगों ने बस रोकरकर चालक की जमकर पिटाई की**

पुलिस ने बताया कि गोनेर रोड के पास बाबाजी गेट के पास बस ने बाइक पर बैठी महिला को अपनी चपेट में लिया जिस से महिला का सिर बस के नीचे आ गया। इससे महिला की मौके पर मौत हो गई। महिला रिजवाना (28) बाइक पर अपने पति निशार आलाम(32) और बच्चे अलसफा (डेढ साल) के साथ घर जा रही थी।

इस दौरान पीछे से स्पीड में आ रही लो फ्लोर बस ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही तीनों नीचे गिरे। रिजवाना बीच सड़क पर गिरी। उसका सिर बस के पहियों के नीचे आ गया। बस उसे घसीटते हुए ले गई। मौके पर ही रिजवाना की मौत हो गई। हादसे के बाद बस ड्राइवर भागने की कोशिश कर रहा था। मौके पर मौजूद लोगों ने उसे पकड़ लिया और पिटाई कर दी। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने ड्राइवर मुकेश को डिटेन कर लिया। रिजवाना का शव एसएमएस हॉस्पिटल की मॉर्च्यूरी में रखवाया गया है। अलसफा के पैर में फ्रैक्चर है। निसार के सिर में चोट लगी है। दोनों एसएमएस हॉस्पिटल में एडमिट हैं। बस गोनेर से वाटिका जा रही थी। निसार वेल्डिंग का काम करता है। घटना के बाद गुस्साए लोगों ने बस रुकवाई और चालक को खोह नागोरियान थाना पुलिस के सुपुर्द किया। महिला का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों को सौंप दिया जाएगा।

देखा जाए तो जयपुर शहर में लो फ्लोर बस के संचालन और मेंटेनेंस की जिम्मेदारी जयपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड की है। इन बसों के स्टीयरिंग और ब्रेक फेल होने की पहले भी शिकायतें मिल चुकी हैं। प्रबंधन मेंटेनेंस में लापरवाही बरत रहा है। 5 दिन पहले ट्रांसपोर्ट नगर स्थित टनल के पास एक लो फ्लोर बस का स्टीयरिंग फेल हो गया था। हादसे में बस ने एक बाइक सवार के दोनों पैरों को कुचल दिया था।

सार-समाचार

आठवां उर्स मुबारक 4 जुलाई से

जयपुर । संसार चंद रोड स्थित मीर कुर्बान अली की दरगाह में हजरत सैय्यद महबूब उर रहमान नियाजी रह.के आठवें उर्स मुबारक की तैयारियां जोरों शोरों पर चल रही है 4 जुलाई से 6 जुलाई तक चलने वाले तीन दिन के उर्स में 4 तारीख को क्लासिकल म्यूजिक की महफिल सजेगी । जिसमें बॉलीवुड के सिंगर मो अमान के अलावा कई बॉलीवुड के मशहूर मारूफ गजल गायक जावेद हुसैन, सितार वादक,संतूर वादक और वायलन वादक अपनी प्रस्तुति पेश करेंगे। दरगाह के सज्जाद नशीन डॉक्टर सैयद हबीबुर रहमान नियाजी ने कहा कि हज़रत सैय्यद महबूब उर रहमान नियाजी रह.का यह आठवां उर्फ मुबारक है जो की इस बार बड़े धूमधाम से मनाया जाएगा 3 दिन तक चलने वाले उर्स में अलग-अलग दिन अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन होगा। देश भर से अकीदत मंद उर्स मुबारक में पहुंचेंगे । इस मौके पर बॉलीवुड के मशहूर मारूफ कव्वाल साबरी बंधु भी अपनी कव्वाली पेश करेंगे । इसके अलावा आखिरी दिन कुल की रस्म के साथ कुल का समापन होगा । नायाब सज्जादानशीन फैजु उर रहमान नियाजी ने कहा हजरत सैय्यद महबूब उर रहमान नियाजी रह.के उर्स की हर साल की तरह इस बार भी बड़े जोश के साथ तैयारी की जा रही हैं अकीदत मंद देश भर से आयेंगे और उनके ठहरने का अलग-अलग जगह पर इंतजाम भी करवाया हुआ है तीनों दिन चलने वाले कार्यक्रम में हजारों की तादाद में अकीदत मंद अपनी मुरादे पाएंगे और दुआएं की जाएगी उर्स 4-5 और 6 जुलाई को कुल की रस्म के साथ मुकम्मल होगा।

इकोलॉजिकल जोन में 12 मकान ध्वस्त

जयपुर । जयपुर विकास प्राधिकरण के प्रवर्तन दस्ते ने इकोलॉजिकल जोन में बसी ''द्वारकापुरी'' योजना में 12 अवैध विला को पूर्णत: ध्वस्त किया। यह कॉलोनी जे.डी.ए. की बिना अनुमति बसाई गई थी। मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन महेन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि जोन-10 स्थित इकोलोजिकल जोन में बाबा बालकनाथ आश्रम के पीछे गैर अनुमोदित योजना द्वारकापुरी में जेडीए की बिना अनुमति-स्वीकृति 12 अवैध विला का निर्माण कर लिया गया था। जे.डी.ए. प्रशासन ने धारा 32-33 के नोटिस जारी कर अवैध निर्माण हटाने के लिए पाबंद किया गया था। इसके बावजूद निर्माणकर्ता ने अवैध निर्माण नहीं हटाया। इस पर मंगलवार को जेडीए टीम ने यहां कार्रवाई की।

इंडक्शन प्रोग्राम में छात्रों का स्वागत

जयपुर । जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जयपुर में इंडक्शन प्रोग्राम में पीजीडीएम के 19वें बैच और पीजीडीएम-एसएम के 6वें बैच के छात्रों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर ग्रांट थॉर्नटन भारत एलएलपी के मुख्य लर्निंग अधिकारी अंकित झाम्ब मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि कैसे संवेदनशीलता और अनुशासन ने कम आत्म-सम्मान वाले व्यक्ति को अनुशासन और आत्मविश्वासी बनने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने छात्रों को हर चुनौती का सामना करने के लिए प्रेरित किया। एचएसबीसी के सहायक उपाध्यक्ष विजय सदानानी ने जयपुरिया के पूर्व छात्र होने के नाते अपने कॉलेज जीवन से कॉर्पोरेट जगत तक की व्यक्तिगत यात्रा साझा की। जयपुरिया के निदेशक डॉ. प्रभात पंकज ने भी संगठित शिक्षा के महत्व पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि साझा की। इंडक्शन प्रोग्राम में 300 पीजीडीएम छात्रों ने अपनी नई शैक्षिणक यात्रा शुरू की।

डॉक्टर्स-डे पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

जयपुर । डॉक्टर्स दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन जयपुर की एक होटल में हुआ। जहां चिकित्सकों ने केक काटकर ''डॉक्टर्स डे'' सेलिब्रेट किया। साथ ही शपथ ली कि ''जीवन में हम सब का एक ही लक्ष्य है, लोगों की जिंदगी बचाना।'' सांस्कृतिक कार्यक्रम में डॉक्टर्स ने 90 के दशक के गीत गाए और फिल्मी गानों पर डांस भी किया। डॉ. शिवांगी, डॉ. गौरव शर्मा, डॉ. हरीश वर्मा, डॉ. नवीन शर्मा, डॉ. लक्ष्मी, डॉ. विजयंत सोलंकी के साथ सभी डॉक्टर्स ने जनता की सेवा करने की शपथ भी ली।

वृद्धा के गले से चेन तोड़ी

जयपुर । गोविंद देव मंदिर परिसर में झांकी के दर्शन करने आई 60 साल की बुजुर्ग महिला की बदमाश सोने की चेन तोड़ ले गए। माणकचौक थाना पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार घटना 27 जून सुबह करीब 11 से 11:30 बजे की है। मंदिर में झांकी के दर्शन कर जब वृद्धा बाहर आई तो गले में चैन नहीं थी। इस पर वह चिल्लाई और लोगों को घटना के बारे में बताया। इस पर मंदिर में मौजूद लोगों ने घरवालों को फोन किया। वारदात के बाद बदमाशों की तलाश भी की लेकिन उनका कोई सुराग नहीं लगा। बुजुर्ग महिला ने माणक चौक थाने में मामला दर्ज करवाया गया है।

कार्यस्थल पर महिलाओं का सम्मान हो

जयपुर । राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन की ओर से मंगलवार को कार्यस्थल पर महिला उत्पीड़न संबंधी कानूनी प्रावधानों की जानकारी देने के लिए आमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के दौरान निगम स्तर पर कार्यरत समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीडन अधिनियम 2013 की विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यशाला में बताया गया कि महिला कार्मिक इस अधिनियम के तहत किस तरह लैंगिक उत्पीड़न को लेकर कानूनी प्रावधानों के तहत अपना बचाव एवं कार्रवाई कर सकती हैं। कार्यशाला में पुरूष कार्मिकों को इस अधिनियम के प्रावधानों की जानकारी देते हुए महिलाओं के साथ सम्मानजनक एवं शोभनीय व्यवहार किए जाने की अपेक्षा की गई। कार्यशाला में बताया गया कि महिला कार्मिक समाज का महत्वपूर्ण अंग हैं, अत: कार्यस्थल पर उनके साथ उचित एवं सम्मानजनक व्यवहार हम सबकी जिम्मेदारी है। उल्लेखनीय है कि इस कानून का उद्देश्य महिलाओं के लिए काम कार्य स्थल का माहौल सुरक्षित बनाकर उन्हें रोज़गार के समान अवसर उपलब्ध कराना है।

ARBiT
it happens here...

International Plastic Bag Free Day

Plastic pollution is a global catastrophe and sadly, it is a man-made one. Did you know that approximately 500 billion plastic bags are used on a global scale? Just think about how many of these bags will end up littered all over the planet. *International Plastic Bag Free Day* is dedicated to heightening awareness about these and very real and pressing issues brought about by this most popular of disposable carrying devices. We are reminded that those bags, that we pick up from the retailers, are used for an incredibly short time, usually under 25 minutes, and are then disposed of.

राष्ट्रदूत
WEDNESDAY
03 July 2024
A-B

#GENETICS

A Single Human Ancestor

We all used to have brown eyes. Then, something strange happened around 10,000 years ago.

In 2008, a study led by Hans Eiberg from the University of Copenhagen claimed that all blue eyes link back to a single ancestor, who lived between 6,000 and 10,000 years ago. The concept has continually cropped up in news stories and social media posts over the 15 years since the paper was released. Simply put, we remain enamoured. But where did the concept come from? That 2008 study was built on research that started in 1996, and it all focused on genetic exploration of the OCA2 gene.

The Mutation

The research shows that the *OCA2 gene* codes play a key role in the production of melanin, the pigment that colours hair, skin, and eyes. Eiberg's theory is that a mutation occurred between 6,000 and 10,000 years ago that switched on the ability for the gene to dilute brown eyes to blue.

"Originally, we all had brown eyes," he said in 2008. "But a genetic mutation, affecting the OCA2 gene in our chromosomes, resulted in the creation of a switch, which literally turned off the ability to produce brown eyes."

Every eye colour links directly to the volume of melanin in the iris. Green eyes, even more rare than blue, marks a reduced level of melanin, though not as reduced as blue eyes. It only takes a miniscule change to shift from brown to blue. "From this, we can conclude that all blue-eyed individuals are linked to the same ancestor," Eiberg says. "They have all inherited the same switch at exactly the same spot in their DNA."

The Combination

He refers to that 'switch' as a specific genetic mutation event, and believes that it only produced the first-ever blue-eyed human, thanks to the mutation of the regulating *HERC2 gene*. The combination is the only known way eyes can turn blue (in contrast, red hair can happen for one of nearly a dozen reasons). That mutation remained in place for the next generation, meaning the reduced production of melanin in the iris allowed for the continued dilution of brown to blue.

Since that multi-thousand-years-ago switch, the progression of blue-eyed humans has only pushed forward. Multiple research papers concluded that the first mutation was probably somewhere in Europe, likely during the Neolithic expansion. The blue-eyed march continued as populations dispersed.

Roughly 10 per cent of all humans have blue eyes, but that number varies wildly depending on regions, with Scandinavian countries having a higher propensity for blue eyes.

"Deemed a neutral mutation," Eiberg says, "the eye-colour example simply shows that nature is constantly shuffling the human genome, creating a genetic cocktail of human chromosomes and trying out different changes as it does so."

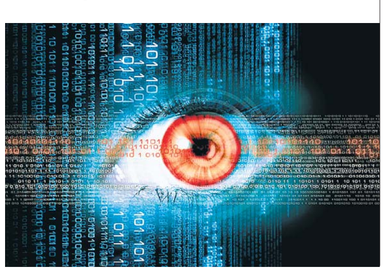

How do Crazy Rich Indians holiday?

Amit Kalsi of Experiential Travel Journeys has clients whose idea of a luxury vacation is visiting game reserves in Rwanda and Botswana. "Such a holiday for a family of four can cost Rs. 75 lakh, or more," he says. Included in this package are luxury tents that come with butlers, helicopter transfers, and in some cases, rent for satellite phones. Every other month, Kalsi sends his clients an email with captioned pictures of exotic locales such as Patagonia, breath-taking private islands in the Mediterranean Sea and remote chalets in the Swiss Alps. These are not 'deals on offer' but ideas to inspire them to travel.

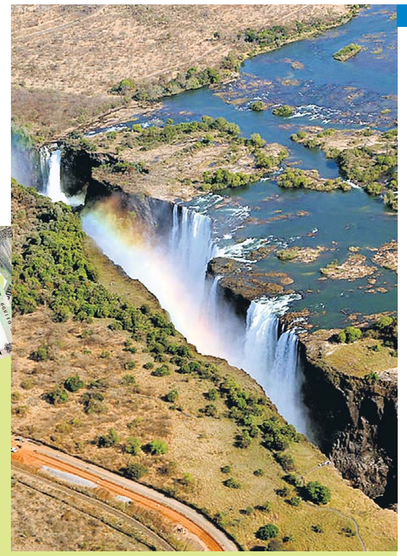

A view of the Victoria Falls during the dry season.

Anjali Sharma
Senior journalist & wildlife enthusiast

These days, vacations have moved beyond staying in luxury hotels and shopping for designer goods. One of Arti's clients wanted to visit Japan to watch the famous *cherry blossoms* in bloom. But she "didn't want to share her cherry blossoms with anyone," said Arti. She wanted it to be just she and her husband, who would savour the view. Arti tailor-made a seven-day walking trip, taking pains to find a secluded route. The holiday also involved stays in traditional Japanese homes, meeting with a soba noodle maker and a ceramic potter, to get a glimpse of the local culture.

Lina Morarka dreams of Africa. The jewellery designer takes at least six holidays every year with her family, and their current favourite destination is the beautiful continent. They have visited it five times so far, albeit not for run-of-the-mill *safaris*. Their trips have involved spending time with a family of *gorillas* in their natural habitat, seeing an *elephant* give birth and a *pride of lions* fighting over a kill. "Africa just pulls us in," said Kolkata-based Morarka.

When not admiring the wildlife of Africa, the Morarkas work towards checking off their bucket list of '50 greatest restaurants' to eat at. "We have been to 20, which include *Gaggan* in Bangkok and a 40-course meal at *El Celler de Can Roca* in Spain, (which has been) voted the best restaurant in the world twice," said Morarka. "I have even tried *baby eel*."

The Morarkas' sojourns typify the kind of holidays India's super-rich take today. From renting footballer Cristiano Ronaldo's yacht for 25,000 Euros a day to taking a microflight over the Victoria Falls or going on a gypsy music trail in Hungary, luxury holidays today are less about the been-there-done-that destinations and all about unique curated experiences. Money is no object for the ultra-rich.

"Five years ago, rich Indians were still finding their way, (but) now, their tastes have evolved," said Loveleen Arun of Panache World, a travel agency that creates handcrafted experiential trips to select places. "They are competing with the world to tell their (travel) stories." Arun says that her agency alone sends around 100 Indians every year on luxury holidays, abroad, and the number is only set to rise.

A view of the Victoria Falls during the dry season, Japan.

Offbeat luxury

One such reinvention is 'off-beat luxury' that promises the traveller all the worldly pleasures along with a never-before-seen type of experience. Sample this, Your hand-crafted tents are pitched at an altitude of 11,800 feet somewhere in Ladakh and, as you sip your morning tea served by a personal butler, you gaze at some of the highest peaks in the region.

Your day's activity could include a specially arranged polo match, rafting down the Zanskar river, lunch high in the Wari-La pass, and it could end with a visit by the village oracle. Dinner would include the finest wines, of course, and a meal prepared by acclaimed chefs. All that would come at a cost of about $1,400 a night. "The purpose of the camp was to bring the hidden resources, the far-flung places in India to the luxury traveller," said Rajnish Sabharwal, chief operating officer of The The Ultimate Travelling Camp, the company that runs the Ladakh camp.

It also runs luxury camps in the northeastern state of Nagaland and in the south at the UNESCO world heritage site, Hampi, overlooking 14th-century ruins.

"Ladakh was viewed as a backpackers' destination till 'glamping' began, five years ago. At the time, the most expensive hotel in the region was priced at $250," Shoba Mohan, founder partner of RARE India told CNBC. Her company markets 63 properties that include palaces, luxury tents and wildlife lodges.

#TRAVEL TALES

Spending No Bar

Amit Kalsi of Experiential Travel Journeys has clients whose idea of a *luxury vacation* is visiting game reserves in Rwanda and Botswana. "Such a holiday for a family of four can cost Rs. 75 lakh or more," he says. Included in this package are luxury tents that come with butlers, helicopter transfers, and in some cases, rent for satellite phones. Every other month, Kalsi sends his clients an email with captioned pictures of exotic locales such as Patagonia, breath-taking private islands in the Mediterranean Sea and remote chalets in the Swiss Alps. These are not 'deals on offer' but ideas to inspire them to travel. Industry experts say that this demand for luxury travel is set to get a further boost as India's millionaire population grows and more Indians travel abroad. According to a 2018 report by Johannesburg-based market research group New World Wealth, India's list of millionaires doubled from 2007 to 2017, and that number is expected to grow to 9,50,000 millionaires by 2027. The country's high-net-worth population is growing at more than 20% annually, as per Capgemini's financial services analysis in 2018, and is the fastest in the world. The United Nations World Tourism Organisation has predicted that India will account for 50 million outbound tourists by 2020, a sharp rise from the present figure of 25 million. The same report says that Indian tourists don't scrimp, they are among the world's highest spenders per visit, abroad and this spend is estimated to rise from the 2018 figure of $23 billion to $45 billion by 2022. Although, that was much before the pandemic, and has queered all calculations and preparations. Be that as it may, the study is an indicator of things to come.

Patagonia.

Designer Holidays

Mohan is a great proponent of experiential and outdoor luxury holidays. "To see a snow leopard in the wild is a luxury in itself," she said. The hotels that she markets are often set away from the 'repetitive and regular routes.' While the northwestern Indian state of Rajasthan continues to be a no-brainer, when it comes to selling a destination to the high-end traveller, with its palaces and forts and the concentration of some of India's highest-priced hotels, people like Mohan are looking to market little-known destinations within the state. One such property is *Chhatra Sagar*, a tented accommodation built on the banks of a dam, between the two big cities and tourist hubs of Jodhpur and Jaipur. The former royals, who own that place, personally look after the guests.

The food served is from the repertoire of their family recipes, which includes a dish made with locally grown fenugreek, which is available only 15 days in a year.

"Today, luxury is more curated and immersive. (You) hand-hold (tourists) through every stage of the experience," Karan Anand, head of relationships for travel company Cox & Kings, told CNBC.

Experiences could range from a night walk by a trained herpetologist, when on a wildlife *safari*, a classical dance performance, specially choreographed for the guest or tea tasting with a sommelier, said those in the travel business.

Sampling India's vastness

India's cultural and geographical diversity is what makes it compete with other countries also vying for the top-dollar-paying traveller, experts said. "India, as a destination, figures 8th or 9th on a well-heeled traveller's list, after he or she has done Africa," said Narayanaswamy.

rajeshsharma1049@gmail.com

Luxe Hotels are not all

Understatement wasn't the flavour for another of Shoma's clients, six people from a business family in North India, who had no qualms, spending Rs. 1.2 crore for a six-day trip to the world's party capital, Ibiza. Their extravagance included going above the usual rate of 1,000 Euros and spending 25,000 Euros to hire a yacht for a day. Their demands were explicit, the yacht had to be large and black in colour. The only one that matched these specifications on the required day belonged to footballer Cristiano Ronaldo. At their hotel in Ibiza, each family member wanted a suite. They chartered a big plane for a 30-minute flight to another European destination, no small-sized plane for their daughter, and despite the short trip, they wanted champagne served on board. All this for 30,000 Euros.

Customised Experiences

The United Nations World Tourism Organisation's latest data shows that Indians spent $18 billion on holidays abroad in 2017, an annual uptick of 9%, one of the fastest growth rates in the world. "The benchmark spend has been surging," said Kalsi. "If five years ago, high-end Indian travellers were comfortable spending $1,000 per person per night on an African *safari*, it has now gone up to $3,500, and growing." These are just some of the less stupendous spenders.

Travel designer Viswanathan Gopalakrishnan of Footprint Holidays in Chennai curated a 100-day honeymoon for a 20-something ultra high-net-worth couple from a South Indian state. Everything was monitored, right down to their laundry, and though, the couple didn't want to 'show off' their vacation, it certainly featured many bragworthy moments. Covering 36 cities, it included a Coldplay concert in Hamburg, during which the band performed the newlyweds' playlist and met them backstage.

The groom visited the Audi and Porsche factories to learn how to handle their race cars. Once he was certified, a simulated race was organised for him at the Ascari race track, where he competed with other semi-professional racers. His wife attended a three-day workshop in France on how perfumes are made, worn and shopped for. The couple also visited a watch factory in Switzerland, where a custom-made watch was gifted to them, a wedding gift from a relative, who wanted them to receive it in the Switzerland factory. While on their honeymoon, only one dedicated staff member was allowed to contact the couple. She coordinated their flights and bookings. Their entire luggage shopping and items, that they didn't want to use, was shipped to their London flat after every stop.

Their laundry was managed out of Chennai. Their clothes were washed and delivered to their next destination or to their London apartment, if they did not need them for the next stopover. It was a logistical challenge and took the travel agent three months to plan.

The choices of the ultra-rich are not very different from the lives of the characters fleshed out by Kevin Kwan in his bestseller novel *Crazy Rich Asians*. Some of them are over-the-top, some understated, but almost all of them are in search of meaning in *exclusivity*. But, as Arun says, "Some crazy rich Indians can beat crazy rich Asians any day." Closer to home, the super-rich of India choose from 'glamorous camping' in Ladakh to opulent 'palace' hotels in Rajasthan and from 'fancy train rides' across the peninsula to 'village art appreciation walks,' Indian holidays are being carefully crafted by professionals, constantly thinking up ideas about how to wow wealthy travellers. "The world doesn't really know the possibilities that India has to offer," said P. N. Narayanaswamy of Travel Scope India, who began marketing India as a luxury destination in 1999. Today, he says that everyone wants a slice of the high-end pie, which constitutes about 3 per cent of total world travellers.

"Of the 15.5 million, who visited India in 2017, less than 10 per cent were willing to spend upwards of $700 a day," said industry experts, who expect that market will double every three years. Millionaires, who typically fly in chartered planes and can afford to pay $1,000 a night for a hotel room with a view of the Taj Mahal, are not easy to lure year after year. "Therefore, India has had to continuously repackage and remodel itself," experts said.

#EVENT

A JAZZY EVENING IN JAIPUR

Jaipur's Clarks Amer came alive with the soulful sounds of *AKODA*, a French Reunionese Jazz trio on a Sunday evening. The band, touring India for '*Fête de la Musique*,' captivated the audience with their unique blend of Creole rhythms and original compositions. Highlights included the enthusiastic participation of children from the Indian Women Impact NGO, who gained valuable exposure to French music and culture.

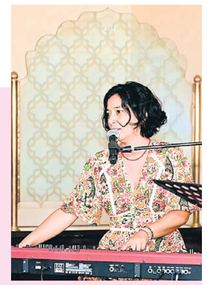

Valerie Chane Tef, Founder of the band.

AKODA performing at Clarks Amer.

Tusharika Singh
Freelancer writer and city blogger

A view of the audience.

As June bid adieu, the melodious strains of *French Reunionese Jazz* drifted through Jaipur's Clarks Amer, marking the month of World Music Day in a truly enchanting fashion. On the last Sunday evening of June, *AKODA*, a Bordeaux-based trio led by the charismatic pianist Valerie Chane Tef, mesmerized music lovers with their soulful tunes. Touring India under the banner of '*Fête de la Musique*,' the band's journey began in Delhi on June 21 and concluded in Jaipur, with stops in Bangalore, Mumbai, and Kolkata. Featuring Thomas Boude on bass and Eric Perez on percussion, AKODA's performance was a celebration of their latest album, '*Nout Souk*,' released in 2022, and their earlier work, '*Muzik pou lo ker*,' from 2019. Their infectious '*joie de vivre*' made it a night to remember for the music lovers of Pink City.

AKODA's performance drew from the rich musical traditions of Reunion, Guadeloupe, and Martinique islands, seamlessly blending these influences with their own invented language and distinctive Jazz style. Their music resonated deeply with the attendees, who could not resist shaking a leg and grooving to the foot tapping music. Despite the language barrier, the Jaipurites were swept away by the trio's vibrant rhythms and soulful melodies. From romantic ballads to energetic dance numbers, AKODA captivated the packed audience with their eclectic mix of *Creole Jazz*.

The attendees shake a leg to the jazzy tunes.

Valerie Chane Tef, pianist and composer from the Renuion island, began studying classical piano at the age of 7. However, it is Jazz and Creole music which lead her to her career. This was her third time in India and first time in Jaipur. She brought a captivating fusion of contemporary jazz infused with her rich cultural heritage.

A unique highlight of the evening was the presence of children from the Indian Women Impact NGO, who have been learning French with *Alliance Française Jaipur*. This evening provided them with an enriching exposure to French music and culture. The event was organized by The French Institute in India and the Alliance Française Jaipur in collaboration with Clarks Amer.

THE WALL

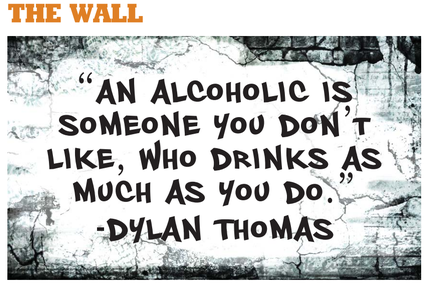

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

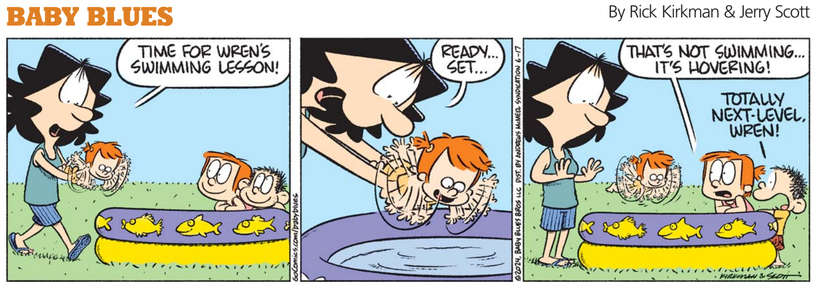

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

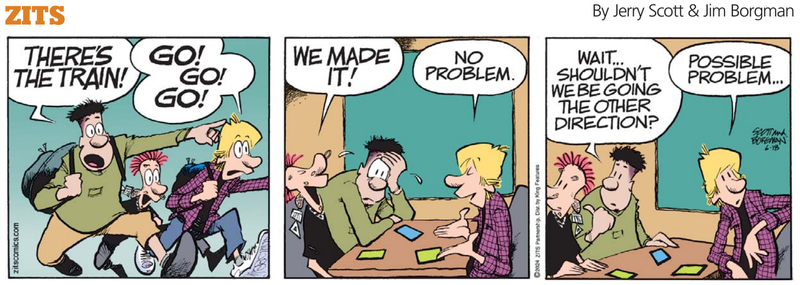

लगातार दो दिन की बारिश के बाद चूरू शहर के हालात बदतर, घर से निकलना मुश्किल

पानी निकासी के अभाव में शहर के निचले इलाके सहित मुख्य बाजार पानी से लबालब हुये

चूरू, (कासं)। चूरू में गत शाम से लेकर आज सुबह तक हुई लगातार बारिश के बाद शहर के मुख्य बाजार सहित अधिकांश इलाके पानी से लबालब भर गये। जिससे लोगों का आवागमन बाधित हो गया।

जानकारी के अनुसार सोमवार शाम को बारिश का दौर शुरु हुआ जो कि करीब एक घंटे तक चला। इसके बाद रात को करीब नौ बजे फिर से बारिश का दौर शुरु हुआ जो कि रातभर रुक रुक कर चलता रहा। रिमझिम बारिश के कारण मौसम सुहावना हो गया। लोगों को भयंकर गर्मी से निजात भी मिल गयी और किसानों के चेहरे खिल उठे। लेकिन शहरवासियों के लिए बारिश परेशानी का सबब बन गई जहां पर पानी भराव की समस्या आज से नहीं बरसों से चली आ रही है। बारिश के कारण मुख्य बाजार सुभाष चौक, झारिया मोरी, नेत्र चिकित्सालय, राजकीय भरतीया अस्पताल, डाक बंगले के पास, पंचायत समिति, चांदनी चौक आदि अनेक स्थानों पर पानी भर गया। जिससे लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

चूरू शहर में डाक बंगले के पास टाऊन हॉल की गली में बारिश के पानी ने नदी का रूप धारण कर लिया जिससे लोगों का अपने घरों से बाहर निकलना मुश्किल हो गया।

दुकानों के आगे पानी भरने से दुकानों को मजबूरन बंद रखना पड़ रहा है। इसी के साथ नेत्र चिकित्सालय के पास पानी भरने की समस्या इस कदर है कि वाहन चालकों को अस्पताल के पीछे से होकर पंखा सर्किल तक पहुंचना पड़ रहा है। जिससे गलियों में वाहन चालकों की लंबी कतार लगी हुई है। गौरतलब है कि यहां पर बिना बारिश के भी पानी भराव की समस्या बनी रहती है। अनेक बाद नालियों का पानी सड़क पर आ

■ **बाजार में दुकानदार दुकान बंद करने पर मजबूर**

जाने से मुख्य मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। बारिश आने के बाद नगर परिषद के दावों की पोल खुलकर सामने आ गई। यहां पर भाजपा व कांग्रेस दोनों का ही बोर्ड रहा लेकिन बारिश के पानी निकासी का समूचित प्रबंध आज तक नहीं हो पाया। जिसका खामियाजा आमजन का भुगतना पड़ रहा है।

जिला कलेक्टर पुष्पा सत्यानी ने मंगलवार को चूरू शहर में जल भराव समस्या को लेकर चूरू उपखण्ड अधिकारी बिजेन्द्र सिंह व चूरू नगरपरिषद आयुक्त अभिलाषा सिंह के साथ चर्चा कर समस्या के निस्तारण के लिए समुचित निर्देश दिए। इसी के साथ आज विधायक हरलाल सहारण के निर्देश पर मण्डल अध्यक्ष सुरेश सारस्वत, नगरपरिषद नेता प्रतिपक्ष विमला गढ़वाल व आयुक्त अभिलाषा सिंह ने सुभाष चौक में बरसाती पानी से भरे हुऐ इलाको का ट्रेक्टर पर दोरा किया एवम् पानी निकासी के बारे में चर्चा की।

होटल में आग लगने से दो युवक गंभीर रूप से झुलसे

घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद जिला चिकित्सालय रेफर किया

भीलवाड़ा में अज्ञात कारणों के चलते कीड़ी माल चौराहे पर स्थित एक होटल में आग लग गई।

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के करेड़ा थाना के क्षेत्र में कीड़ी माल चौराहे पर स्थित एक होटल में अज्ञात कारणों से आग लग गई। आग से दो युवक गंभीर रूप से झुलस गये जिन्हें पहले आसींद सामूदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद जिला चिकित्सालय रेफर किया गया।

करेड़ा थाना प्रभारी अर्जुन लाल गुर्जर ने बताया कि मनोहर लाल सालवी निवासी किडिमाल ने रिपोर्ट दी जिसमें उसने बताया कि भीम-गुलाबपुरा नेशनल हाईवे पर स्थित किडिमाल निवासी हरफूल सुथार की होटल पर मंगलवार की सुबह करीब 11 बजे वह चाय पी रहा था, इसी दौरान अज्ञात कारणों के चलते वहा धमाकें की आवाज के साथ आग लग गई। आग की चपेट में आने से होटल में कार्य कर रहे सलीम खान और जुनेद खान दोनों घायल हो गए। घायल को आसींद सामुदायिक स्वास्थ केंद्र लाया गया जहां से दोनो को जिला मुख्यालय स्थित एमजी हॉस्पिटल के लिए रेफर किया गया। आग के कारण मौके पर सड़क के दोनों तरफ लंबा जाम लग गया वही तीन से चार बाइक भी आग की चपेट में आ गई। मौके पर अवेध रूप से जमा किए गए बायोडीजल के ड्रम भरे हुए थे, जिनके आग की चपेट में आने से आग ने विकराल रूप ले लिया। आग इतनी विकराल थी कि कई किमी दूर से ही लपटे दिखाई दे रही थी। करेड़ा पुलिस एवं अग्नि शमन सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची और करीब 3 घण्टे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। आगजनी की जांघ के लिए एफएसएल टीम भी मौके पर पहुंची। टीम ने शॉर्ट सर्किट से आग लगने की आशंका जताई है।

विष्णु वनस्पति घी भंडार से दो बार घी का लिया सैम्पल, दोनों बार ही अनसेफ

हनुमानगढ़, (कासं) खाद्य सुरक्षा दल द्वारा पीलीबंगा के एक खाद्य विक्रेता से घी के दो बार सैम्पल लेने पर खाद्य प्रयोगशाला द्वारा दोनों बार की रिपोर्ट में सैम्पल अमानक (अनसेफ) पाए गए हैं। पहला सैम्पल 2 नवम्बर 2018 को लिया गया था जबकि दूसरा सैम्पल 13 मार्च 2023 को लिया गया। पहली बार अनसेफ सैम्पल का प्रकरण सीजेएम कोर्ट में प्रक्रियाधीन हैं। बीकानेर से संयुक्त निदेशक से अभियोजन स्वीकृति जारी होने के बाद अब 8 जुलाई को दूसरा प्रकरण सीजेएम कोर्ट में पेश किया जाएगा।

सीएमएचओ डॉ. नवनीत शर्मा ने बताया कि जिला खाद्य सुरक्षा दल नियमित रूप से खाद्य विक्रेताओं से सैम्पल एकत्र किए जा रहे हैं। इसी के तहत एक ही दुकान से घी के दो बार सैम्पल लेने पर दोनों बार ही अनसेफ सैम्पल की रिपोर्ट प्राप्त हुई है, जिससे खिलाफ कोर्ट में प्रकरण दर्ज करने की कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने बताया कि पीलीबंगा के मै. विष्णु वनस्पति घी भंडार से 2 नवम्बर 2018 को खाद्य सुरक्षा अधिकारी हरिराम वर्मा ने वनस्पति घी का सैम्पल संग्रहित किया गया, जिसे जांच के लिए जयपुर स्थित प्रयोगशाला में भेजा गया। जयपुर स्थित प्रयोगशाला से 10 जनवरी 2019 को प्राप्त हुई रिपोर्ट में वनस्पति घी अनसेफ पाया गया। मै. विष्णु वनस्पति घी भंडार के प्रोपराइटर मुकेश कुमार पुत्र सेराराम बाजीगर ने वनस्पति घी की अन्य प्रयोगशाला से पुन: जांच के लिए आवेदन किया। विभाग ने वनस्पति घी के सैम्पल की दोबारा जांच के लिए उसे मैसूर स्थित रेफरल लैब में भेजा गया। 1 अप्रेल 2019 को मैसूर स्थित रेफरल लैब से प्राप्त रिपोर्ट में भी घी अनसेफ पाया गया। इस संबंध में 14 अक्टूबर 2019 को सीजेएम कोर्ट में वाद दायर किया गया, जो प्रक्रियाधीन है। डॉ. नवनीत शर्मा ने बताया कि 13 मार्च 2023 को खाद्य सुरक्षा अधिकारी रफीक मोहम्मद ने मै. विष्णु वनस्पति घी भंडार से घी सैम्पल लिया, जिसे जांच के लिए बीकानेर स्थित जन स्वास्थ्य प्रयोगशाला में भेजा गया। जन स्वास्थ्य प्रयोगशाला से 5 अप्रेल 2023 को प्राप्त हुई रिपोर्ट में घी का सैम्पल भी अनसेफ पाया गया।

35 हजार रुपये का इनामी बदमाश पकड़ा

जोधपुर, (का.सं.)। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय की टीम ने जोधपुर के शताब्दी सर्कल से मादक पदार्थों की तस्करी में लिप्त कुख्यात तस्कर महिपाल कांवा पुत्र भागुराम बिश्नोई (32) निवासी सरनाडा थाना डांगियावास जिला जोधपुर को दस्तयाब करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार तस्कर जोधपुर ग्रामीण पुलिस एवं प्रतापगढ़ पुलिस से 35 हजार रुपए का इनामी है। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स एवं अपराध दिनेश एमएन बताया कि उप महानिरीक्षक पुलिस योगेश यादव एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एजीटीएफ विद्या प्रकाश के सुपरविजन में गठित टीम के सदस्य हैड कांस्टेबल राकेश जाखड़ को सोमवार को मादक पदार्थों की तस्करी में कुख्यात महिपाल बिश्नोई के बारे में सूचना मिली थी।

आरोपी तस्कर महिपाल विश्नोई के विरुद्ध वर्ष 2021 में 30 क्विंटल डोडा पोस्त तस्करी के मामले में प्रतापगढ़ जिले के सुहागपुर थाने में एवं साल 2023 में जोधपुर ग्रामीण जिले के कापरड़ा थाने में 28 क्विंटल डोडा पोस्त तस्करी के मामले में एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज हुआ था। दोनों मामलों में आरोपी घटना के समय से फरार था। इसकी गिरफ्तारी के लिए जोधपुर ग्रामीण एसपी द्वारा 25 हजार और प्रतापगढ़ एसपी द्वारा 10 हजार का इनाम घोषित किया गया था। दोनों टीमों ने संयुक्त कार्रवाई कर जोधपुर शहर में शताब्दी सर्किल के पास से आरोपी तस्कर महिपाल कांवा को देर रात घेराबंदी कर दबोच लिया।

जमीनी विवाद को लेकर खूनी संघर्ष

भीलवाड़ा, (निसं)। फूलियाकलां थाना क्षेत्र के पनोतिया गांव में जमीन को लेकर एक ही समाज के दो पक्षों में खूनी संघर्ष हो गया। जमीन को लेकर हुए झगड़े में दोनों पक्षों की चार महिलाओं सहित ग्यारह लोग घायल हो गए। जिनको इलाज के लिए शाहपुरा ओर भीलवाड़ा स्थित चिकित्सालय ले जाया गया है। थानाधिकारी देवराज सिंह ने बताया कि थाना क्षेत्र के पनोतिया गांव में एक पक्ष तुलसीराम कुमावत ओर दूसरे पक्ष कैलाश कुमावत के बीच जमीन को लेकर झगडा हो गया।

झगड़े में दोनों पक्षों की चार महिलाओं सहित ग्यारह लोग घायल हुए हैं। जिन्हें इलाज के लिए शाहपुरा ओर भीलवाड़ा स्थित चिकित्सालय ले जाया गया है। बताया जा रहा है उक्त जमीन को लेकर दोनों पक्षों के बीच एक मामला न्यायालय में भी विचाराधीन है।

मसूदा में कुएं में गिरने से विवाहिता की मौत

मसूदा, (निसं)। उपखंड क्षेत्र के ग्राम चावंडिया में मंगलवार को विवाहिता के कुएं में गिरने से मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करा शव पीहर पक्ष को सौंप दिया। ग्राम चावंडिया में मंगलवार को धनराज गुर्जर की पत्नी मनीषा (25) गांव के पास स्थित कुएं में गिर गई। जिसको लेकर किसी ने विवाहिता के परिजनों को जानकारी दी। जिस पर परिजन व ग्रामीण मौके पर पहुंचे एवं विवाहिता को बचाने का प्रयास शुरू किया। सूचना मिलने पर मसूदा पुलिस मौके पर पहुंची एवं कुएं पर एक साथ तीन इंजन लगाकर प्यानी को निकालकर विवाहिता को कुएं से बाहर निकाला गया। तब तक पानी में डूब जाने से विवाहिता की मौत हो गई। जिस पर पुलिस ने विवाहिता के शव को मसूदा चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया। मौके पर पहुंचे पीहर पक्ष ने मामले को लेकर विवाहिता की हत्या की आशंका व्यक्त किया एवं मामले की जांच कर आरोपियों के खिलाफ सख्त कारवाई करने की मांग की। जिस पर पुलिस ने मामला दर्ज कर शव का पोस्टमार्टम करा शव विवाहिता के पीहर पक्ष को सौंप दिया।

ग्राम चावंडिया निवासी विवाहिता मनीषा का चार माह ही गौना हुआ था। जिसके चलते वह अपने ससुराल आई थी। लेकिन मंगलवार को विवाहिता के कुएं में गिरने से मौत होने से पीहर पक्ष में हड़कम्प मच गया। मौके पर पहुंचे विवाहिता के भाई ने बताया कि मंगलवार को प्रात उसकी बहन से दूरभाष पर वार्ता हुई थी। जिसके दौरान वह परेशान थी।

दुष्कर्म पीड़िता ने कीटनाशक खाया, अस्पताल में भर्ती

जोधपुर, (कासं)। डॉ अम्बेडकर अनुसूचित जाति अधिकारी कर्मचारी एसोसियेशन (अजाक) राजस्थान और समता सैनिक दल की ओर से दुष्कर्म पीड़िता को न्याय दिलाने एवं इस घटना के दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने को लेकर अतिरिक्त जिला कलेक्टर को मुख्यमंत्री और गृहमंत्री के नाम का ज्ञापन सौंपा गया। समता सैनिक दल की राष्ट्रीय महासचिव कमला बुगालिया एवं अजाक के प्रदेश उपाध्यक्ष बसन्त रोयल के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल द्वारा मुख्यमंत्री के नाम अतिरिक्त जिला कलेक्टर जोधपुर को ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन में बताया गया कि 26 जून क अनुसूचित जाति की एक नाबालिग लड़की से सामूहिक दुष्कर्म कर उसे अलसुबह उसे घर के बाहर सड़क पर घायल अवस्था में फेंक दिया गया था।

लोकलाज के भय से पीड़िता ने कीटनाशक पी लिया जिससे उसकी हालत और बिगड़ गई। पीड़िता गंभीर अवस्था में मथुरादास माथुर

■ **दोषियों को कड़ी सजा देने की मांग पर सामाजिक संगठनों ने जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा**

चिकित्सालय में उपचाराधीन है। यह एक जघन्य अपराध है, अमानवीय कृत्य है। घटना के कारण क्षेत्र के लोगों एवं अनुसूचित जाति समाज में रोष है। दुष्कर्म के आरोप में नामजद सुनील और उसके साथियों को गिरफ्तार करने की मांग की गई है। ज्ञापन में पुलिस द्वारा आरोपियों को बचाने की बात कही गई है। ज्ञापन में पीड़ित परिवार को सुरक्षा देने और पीड़िता को नौकरी ओर उचित मुआवजे की मांग की गई है। अजाक के प्रवक्ता देवीलाल चौहान, भंवरलाल बुगालिया, बीआर जोया, किशन खुडीवाल, हंसदास कामड़ सहित कई पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

दुकानदार के आंखों में मिर्ची झौंककर चेन लूटी

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र में एक दुकान से मिर्ची खरीदने के बाद दुकानदार की आंखों में मिर्ची झौंकते हुये दो अज्ञात बदमाशों ने गले से सोने की चेन लूट की वारदात को अंजाम दिया है। आजाद नगर निवासी और जयश्री कृष्णा तेल घाणी एवं मसाला उद्योग के संचालक राहुल पुत्र रतनलाल साहू ने बताया कि एक जुलाई की शाम 5 बजे वह अपनी शॉप पर था। इसी दौरान आजाद नगर का ही कैलाश सुथार अपने एक साथी के साथ शॉप पर मिर्ची लेने आया। उसने 100 रुपये की मिर्ची खरीदी। राहुल ने मिर्ची तौल कर कैलाश को दे दी। उसने उक्त मिर्ची राहुल की ही आंखों में झौंक दी। इसके बाद ये आरोपित, उसके गले से सोने की चेन छीन कर बाइक पर सवार होकर फरार हो गया। वह, चिल्लाया तो आस-पास के लोग एकत्रित हो गये। राहुल का कहना है कि उसने वारदात की रिपोर्ट प्रताप नगर थाने में दी है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बेटे के इलाज के लिए पिता ने लगाई गुहार

एसडीएम को सौंपा ज्ञापन, अपीऑस्टिक अनैमिया नॉन सीवियर से पीड़ित है हरिराम

धौलपुर, (निसं)। धौलपुर जिले के बाड़ी उपखंड के रुंध का पुरा गांव निवासी एक 17 वर्षीय किशोर गंभीर बीमारी से पीड़ित है। किशोर के उपचार में परिवार अब तक 12 से 14 लाख रुपए की राशि खर्च कर चुका है। जिसमें सारी जमा पूंजी लगाने के साथ परिवार पर कर्ज भी चढ़ गया है। चिकित्सक अभी उपचार में ट्रांसप्लांट को लेकर 20 से 25 लाख रुपए का खर्चा बता रहे हैं। ऐसे में पुत्र की जिंदगी बचाने को लेकर गंभीर बीमारी से पीड़ित किशोर के पिता और ग्रामीणों ने मंगलवार एसडीएम राधेश्याम मीणा को एक ज्ञापन सौपा हैं। जिसमें सरकारी सहायता उपलब्ध कराने की मांग की है।

एसडीएम राधेश्याम मीणा को दिए ज्ञापन में गांव रुंध का पुरा निवासी विशंभर पुत्र नहनेराम कुशवाहा ने गुहार लगाई है कि उसका 17 वर्षीय पुत्र हरिराम पिछले एक वर्ष से गंभीर बीमारी अपीऑस्टिक अनैमिया नॉन सीवियर से

पीड़ित हरिराम के पिता ने सरकारी सहायता की मांग की।

पीड़ित है। पुत्र का उपचार वर्तमान में अपेक्स हॉस्पिटल जयपुर में चल रहा है। एक वर्ष में उपचार के दौरान चिकित्सकों की सलाह पर 6 से 7 लाख की कीमत का एटीजी इंजेक्शन भी लग चुका है। उसने बताया कि परिवार पर अब तक उपचार पर 12 से 14 लाख तक खर्च हो चुका है, जिसमें सारी जमा पूंजी लग गई है। साथ में लोगों का कर्ज चढ़ गया है। अभी भी हरिराम के स्वास्थ्य में सुधार नहीं है। चिकित्सक ट्रांसप्लांट की कह रहे हैं। जिसमें 20 से 25 लाख रुपए का खर्चा आएगा। ऐसे में परिवार सदमे में है और उपचार के लिए सरकार और प्रशासन से गुहार लगा रहा है। इसको लेकर पीड़ित विशंभर कुशवाह और रुंध का पुरा के ग्रामीणों ने बाड़ी एसडीएम को ज्ञापन सौपा है।

■ **इलाज पर 12-14 लाख हो चुके हैं खर्च, अभी जरूरत है करीब 25 लाख रुपये की**

विशंभर कुशवाहा ने बताया कि उनके बेटे की जिंदगी बचाने के लिए अब उनके पास कुछ भी नहीं है। उनके परिवार में एक पुत्री भी है, जो शादी योग्य है। उसने उच्च शिक्षा ग्रहण कर रखी है, लेकिन कोई रोजगार नहीं है। पीड़ित विशम्भर के साथ आए ग्रामीण पप्पू, लाखन, रामचरण आदि ने बताया कि विशंभर एक छोटा किसान है। जिसके पास कोई ज्यादा खेती भी नहीं है। जैसे-तैसे परिवार का पालन कर रहा है। उस पर यह पहाड़ टूट गया है। ऐसे में सहायता की जरूरत है।

बुजुर्ग की टक्कर से मौत

धौलपुर, (निसं)। धौलपुर जिले के दिहौली थाना क्षेत्र में पेट्रोल पंप के पास सोमवार शाम बाइक से घर लौट रहे एक बुजुर्ग को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। अज्ञात वाहन की चपेट में आने से बुजुर्ग की मौत हो गई। हादसे के बाद सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। जहां से मृतक के शव को जिला अस्पताल धौलपुर की मोर्चरी में रखवाया गया।

मंगलवार सुबह जिला अस्पताल धौलपुर की मोर्चरी में पहुंचे मृतक के परिजनों ने बताया कि बाइक सवार 55 वर्षीय बुजुर्ग बनवारी लाल पुत्र रामलाल जाटव अपने गांव नादौरा से त्रयोदशी संस्कार में शामिल होने के लिए बाहरीपुरा गांव गया था। त्रयोदशी संस्कार में खाना खाकर वापस लौटते वक्त इंद्रावली मोड के पास उसकी बाइक को पीछे से किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। जिस हादसे में बुजुर्ग की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। जहां से बुजुर्ग की पहचान होने पर परिजनों को सूचना दी गई।

एकादशी पर पुष्कर राज की महाआरती

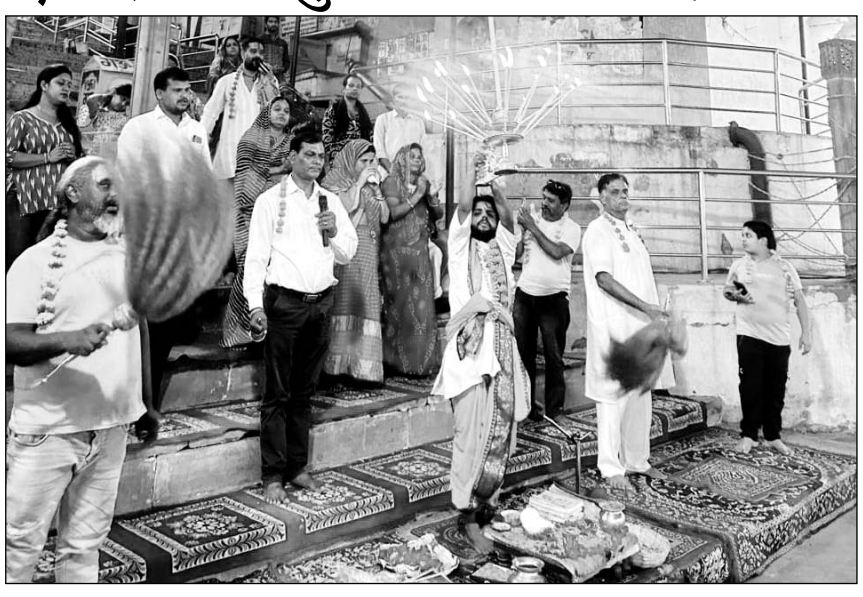

पुष्कर। एकादशी के पावन पर्व पर पुष्कर राज की महा आरती की गई। इस दौरान भजन कीर्तन का कार्यक्रम भी रखा गया। राष्ट्रवादी ब्राहमण महासंघ के प्रदेश सचिव दामोदर मुखिया ने बद्री घाट सदर बाजार पर आयोजित एकादशी के मौके पर पुष्कर सरोवर की महाआरती में भाग लिया महाआरती से पूर्व सरोवर का पूजन एवं दुग्धाभिषेक किया गया महाआरती पंडित शशांक पाराशर उर्फ बम बम द्वारा की गई भजन गायक पंडित रामपाल काला के सानिध्य मे आरती की गई इस मौके पर इन्द्र सिंह पंवार यश पाराशर, कार्तिक पाराशर, ऋषि पराशर, योगेश वैष्णव, पंकज आदि मौजूद रहे।

जे.एल.एन. अस्पताल में फिर हादसा, अधीक्षक कार्यालय के बाहर गिरा छत का प्लास्टर

काम कर रहा कारीगर गंभीर रूप से घायल हुआ

अजमेर, (कासं)। संभाग के सबसे बड़े जवाहर लाल नेहरू अस्पताल में एक बार फिर हादसा हो गया। मंगलवार को अधीक्षक कार्यालय के पास हेल्प डेस्क के निर्माण कार्य का काम कर रहे मजदूर के ऊपर धमाके के साथ छत का प्लास्टर गिर गया, जिससे मजदूर के सिर पर गंभीर चोट आई, जिसे उपचार के लिए इमरजेंसी ले जाया गया, जहां उसके सिर में दस टांके आए हैं। अचानक हुए हादसे से अफार-तफरी मच गई। अस्पताल अधीक्षक डॉ.अरविंद खरे सहित नर्सिंग स्टाफ मौके पर पहुंच कर हादसे की जानकारी ली।

प्राप्त जानकारी अनुसार जवाहरलाल नेहरू अस्पताल में अस्पताल अधीक्षक डॉ.अरविंद खरे के कार्यालय के पास हेल्प डेस्क का निर्माण कार्य चल रहा था, मजदूर चांदमल निर्माण कार्य व्यस्त था। इस दौरान धमाके के साथ अस्पताल की छत का प्लास्टर मजदूर भोपो का बाड़ा निवासी चांदमल पुत्र छोटू लाल के ऊपर गिर गया, जिससे उसके सिर में गंभीर चोट आई है। धमाके की आवाज सुनकर अस्पताल के कर्मचारी मौके पर पहुंचे और घायल को आपात कालीन वार्ड ले जाकर इलाज शुरू कराया, जहां चिकित्सकों ने उसके सिर का उपचार किया। मजदूर के सिर में दस टांके आए हैं। सूचना मिलते ही मौके पर अस्पताल अधीक्षक डॉ. अरविंद खरे स्टाफ के साथ मौके पर पहुंची और हादसे की जानकारी ली।

संभाग के सबसे बड़े जेएलएन अस्पताल में आम दिनों की तरह आपात कालीन विभाग में मरीजों की खासी भीड़ रहती है। गनीमत यह रही कि जिस स्थान पर छत का प्लास्टर गिरा, वहां पर मजदूर अकेला ही काम कर रहा था, अन्य था बड़ा हादसा घटित हो सकता था। हैरानी की बात यह है कि निर्माण कार्य के दौरान सुरक्षा के कोई इंतजाम नहीं थे।

मालूम हो कि जेएलएन अस्पताल में पूर्व में भी कई वार्डों सहित पोर्च में छत का प्लास्टर गिरने से हादसे हो चुके हैं, लेकिन इसके बावजूद भी अस्पताल प्रशासन ने अभी तक कोई सुध नहीं ली है।

घायल मजदूर का इलाज करते चिकित्सक।

संक्षिप्त

राजस्व अधिकारियों की बैठक 11 को

दौसा, (निसं)। सार्वजनिक भूमि संरक्षण प्रकोष्ठ एवं राजस्व अधिकारियों की बैठक 11 जुलाई गुरूवार को दोपहर 2 बजे कलेक्ट्रेट सभा भवन में जिला कलक्टर देवेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में आयोजित की जायेगी। अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुमित्रा पारीक ने बताया कि जिले के समस्त उपखण्ड अधिकारी, सहायक कलेक्टर दौसा, बांदीकुई, लालसोट, समस्त तहसीलदार, उप पंजीयक दौसा, समस्त उप तहसीलदार एवं सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी,समस्त राजस्व अधिकारी आवश्यक रूप से पूर्ण सूचनाऐं साथ लेकर बैठक में समय पर उपस्थित होना सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बैठक में राजस्व कार्यो के साथ-साथ विद्युत, पेयजल, जल संसाधन, सार्वजनिक निर्माण, वन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, पशुपालन, कृषि तथा नगर पालिका मण्डलों पर संबंधित कार्यो पर चर्चा की जावेगी।

गुप्त नवरात्र 6 जुलाई से

बौंली-बामनवास, (निसं)। सनातन धर्म में चार नवरात्रा आते हैं जिनमें से दो गुप्त नवरात्रों होते हैं। इस बार शनिवार 6 जुलाई से गुप्त नवरात्रा प्रारंभ होंगे जिसका समापन 15 जुलाई भडला नवमी को होगा। इस वर्ष मां दुर्गा अश्व पर सवार होकर आएगी। इस गुप्त नवरात्रा को तंत्र साधना के लिए जाना जाता है। आचार्य गौरी शंकर शर्मा बोरखेडा ने बताया कि इन नौ दिनों में 9 महाविद्याओं मां काली, तारा, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, छिनंमस्ता, त्रिपुर भैरवी, धूमावती, मां बगलामुखी एवं मातंगी देवी की साधना की जाती है। 6 जुलाई शनिवार को कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त प्रात 7:15 से 8:55 तक इसके बाद दोपहर 12:25 से शाम 5:35 तक रहेगा। गुप्त नवरात्र में आने वाली भडला नवमी को अबूझ मुहूर्त माना जाता है। इसके बाद 17 जुलाई बुधवार से देवशयनी एकादशी से चातुर्मास प्रारंभ हो जाएगा।

नकदी गिरने का मामला दर्ज

कोटपूतली, (निसं)। कस्बे के बानसूर रोड पर एक व्यक्ति की जेब से दो लाख रूपयों की नकदी सडक पर गिरने का मामला सामने आया है। इस संबंध में पीडित ने थाने में मामला दर्ज कराया है। पुलिस के अनुसार बानसूर क्षेत्र के ग्राम खेडा श्यामपुरा निवासी अजीत सिंह पुत्र हरिसिंह जाट ने स्थानीय पुलिस थाने में दर्ज करवाया कि विगत 01 जुलाई सोमवार को सायं करीब 5-5.30 बजे बानसूर कट से दो लाख रूपये की नकदी पायजामे की जेब में डालकर बाईक द्वारा खेडा श्यामपुरा के लिये रवाना हुआ था। रास्ते में कांकरिया स्टैण्ड पर पहुंचकर देखा तो उक्त नकदी जेब में नहीं थी, जो कि रास्ते में कही गिर गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही

मालपुरा (निसं)। मालपुरा उपखण्ड क्षेत्र की लावा ग्राम पंचायत के चौरूपुरा गांव में मंगलवार को राजस्व विभाग की टीम ने चरागाह पर हुये अतिक्रमणो पर पीला पंजा चलाते हुये अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही शुरू की। मंगलवार को तहसीलदार राहुल पारीक के निर्देशो पर भू अभिलेख निरीक्षक लादूलाल खंगार के नेतृत्व मे दो जेसीबी मशीनो की सहायता से अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही शुरू की। बडी संख्या मे थाना पुलिस का जाप्ता तैनात रहा। तो वही दूसरी और सिंधोलिया ग्राम पंचायत की दौराई मालियान के ग्रामीणों ने तहसीलदार को ज्ञापन सौंप चरागाह भूमि से अतिक्रमण हटाने की मांग की।

अब्दुल हमीद की जयंती मनाई

मनोहरपुर, (निसं)। जामा मस्जिद के सदर जमील ख़ान चौहान की अध्यक्षता में 1965 के भारत-पाक युद्ध के महानायक अमर वीर शहीद परमवीर चक्र सम्मानित अब्दुल हमीद की जयंती मनाई गई। इस दौरान अब्दुल हमीद को खिराजे अकीदत (श्रद्धांजलि) पेश की गई। इस दौरान जमील खान चौहान ने कहा कि परमवीर चक्र सम्मानित अब्दुल हमीद की देशभक्ति, वीरता, जीवनी के बारे में सभी को विस्तार से जानना चाहिए। उपस्थित लोगों ने उनके लिए दुआ-ए-मगफिरत की एवं देश में अमन, चैन, खुशहाली, अच्छी बारिश के लिए भी दुआ की गई।

कृषि मंडी में क्रय-विक्रय रहेगा सुचारू

निवाई, (निसं)। राजस्थान सरकार के कृषि विपणन विभाग के निर्देशानुसार कृषि उपज मंडी में व्यापार सुचारू रहेगा।

जनता के कार्यों में कोताही नहीं, शीघ्र राहत प्रदान करें : एडीएम

खैरथल, (निसं)। एडीएम सुरेंद्र सिंह यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय पर साप्ताहिक समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में बिजली पानी चिकित्सा सहित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। एडीएम यादव ने विभाग वाइज समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आमजन से जुडे कार्यों के प्रति कोताही नहीं बरतने व तत्वरित समाधान करने के निर्देश दिए।

बैठक में एडीएम यादव ने वर्षा ऋतु को देखते हुए ड्रेनेज की सफाई की समीक्षा की। उन्होंने जिले में संचालित टैंकर, जल जीवन मिशन कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसी के साथ राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं, सीएमओ, संपर्क व स्टेट के लंबित प्रकरणो की समीक्षा करते हुए समय अवधि में निस्तारित करने के निर्देश दिए। चिकित्सा विभाग के अधिकारियों को मानसून को देखते हुए क्षेत्र में संभावित मौसमी बीमारियों के लिए आवश्यक समुचित चिकित्सा प्रबंधन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। विद्युत विभाग के अधिकारियों को गर्मी के मौसम को देखते हुए क्षेत्र में सुचारू रूप से विद्युत व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जिससे लोगों को बिजली पानी व चिकित्सा को लेकर परेशानी नहीं हो। बैठक में चिकित्सा अधिकारियों से पिछले सप्ताह सरकारी अस्पतालों में हुए प्रसव की समीक्षा की और चिकित्सा अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। साप्ताहिक समीक्षा बैठक में कोषाधिकारी सुरेश कुमार बंसल, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी अरविंद गेट,अधिक्षण अभियंता बिजली विभाग मनोज गंगावत, अधिक्षण अभियंता स्वास्थ्य एवं जलदाय विभाग धर्मेंद्र यादव, नगर परिषद आयुक्त श्याम बिहारी, सहायक निदेशक समाज कल्याण विभाग महेंद्र कुमार, जिला शिक्षा अधिकारी राजकुमार जैन, उपनिदेशक डीओआईटी अजय यादव, लेबर, जलदाय विभाग सहित अन्य विभाग के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

एडीएम सुरेंद्र सिंह यादव की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट कार्यालय पर साप्ताहिक समीक्षा बैठक संपन्न हुई।

■ कलेक्ट्रेट कार्यालय पर साप्ताहिक समीक्षा बैठक संपन्न

रिक्त पदों पर आवेदन आमंत्रित

दौसा, (निसं)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग (राईस) के नियंत्रणाधीन संचालित आवासीय विद्यालय अमरपुर, महवा (दौसा) में विद्या संबल योजना के तहत अध्यापक एल-2 गणित-विज्ञान विषय के 1 तथा प्रयोगशाला सहायक-1 के रिक्त पदों पर इच्छुक सेवानिवृत (अधिकतम आयु 65 वर्ष) या निजी अभ्यर्थियों से 9 जुलाई 2024 तक दोपहर 1 बजे तक आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये हैं।

प्रधानाचार्य देवनारायण राजकीय बालिका आवासीय विद्यालय अमरपुर महवा ने बताया कि इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन व्यक्तिशःया डाक द्वारा कार्यालय समय में विद्यालय में जमा करवा सकते हैं। महिला कार्मिक उपलब्ध होने पर प्राथमिकता दी जावेगी। अधिक जानकारी के लिए विद्यालय में तथा मो.नं. 9785878500, 8952010027 व 8107788499 पर सम्पर्क कर सकते हैं साथ ही विभागीय वेबसाइट पर लॉग इन कर सकते हैं।

श्री राधा दामोदर मंदिर की 11 बीघा जमीन पर अवैध कब्जा

निवाई, (निसं)। बरोनी थाना क्षेत्र के गांव रजवास में श्री राधा दामोदर मंदिर की 11 बीघा जमीन पर बलशाली लोगों ने अवैध कब्जा कर लेने के विरोध में राधा दामोदर मंदिर समिति के सदस्यों ने जुलूस के रूप में राजस्व विभाग के खिलाफ नारे लगाते हुए तहसील कार्यालय पहुंचकर धरना प्रदर्शन किया।

मंदिर समिति के सदस्य राजबिहारी शर्मा ने बताया कि राजस्व विभाग द्वारा श्री राधा दामोदर मंदिर समिति की 11 बीघा जमीन पर पत्थर गडी करने को लेकर मंदिर समिति के 50 सदस्य उक्त खसरा भूमि पर पहुंचे तो वहां कब्जाधारी लोग अवैध हथियारों के साथ खडे थे। उन्होंने बताया कि निवाई तहसील गिरदावर द्वारा बनाई गई रिपोर्ट में इसे नहीं दर्शाया गया। जिसको लेकर मंदिर समिति के सदस्यों ने तहसील कार्यालय पर गिरदावर के खिलाफ भी जमकर नारेबाजी की। वही बाबू पंडा ने गिरदावर पर सीधा कब्जाधारियों से मिलकर गलत रिपोर्ट तैयार करने व भ्रष्टाचार करने का आरोप लगाया। मंदिर समिति के सदस्यों ने विधायक रामसहाय वर्मा द्वारा संचालित जनसुनवाई में भी पहुंचकर उक्त घटना से विधायक को अवगत करवाया। मामले को गंभीरता से लेते हुए विधायक ने तहसीलदार नरेश गुर्जर को मंदिर समिति की भूमि को कब्जा मुक्त करने के निर्देश दिए। मंदिर समिति सदस्य राजबिहारी शर्मा ने बताया कि एक तरफ तो भाजपा सरकार सनातन संस्कृति को आगे बढाने की बात करती है। वहीं सरकार द्वारा राजस्व विभाग के भ्रष्ट कर्मचारियों व अधिकारियों द्वारा मंदिर माफी जमीन पर कब्जा करवा रहे हैं। समिति सदस्यों ने अति शीघ्र ही मुख्यमंत्री भजनलाल से उक्त घटना को लेकर मिलने का समय मांगा है। इस दौरान मंदिर समिति अध्यक्ष रामलाल पंडा, कोषाध्यक्ष राजबिहारी शर्मा, मुंशी पंडा, बाबूलाल पंडा, शंकर पंडा, अभिषेक पंडा, अमित पंडा, निलेश पंडा, जय पंडा, केशव पंडा व आशीष पंडा सहित मंदिर समिति कई सदस्य मौजूद थे।

निवाई में तहसील कार्यालय के बाहर मंदिर समिति के सदस्यों ने धरना प्रदर्शन किया।

■ कब्जे के विरोध में मंदिर समिति के सदस्यों ने किया धरना प्रदर्शन

एसडीएम ने सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर निर्देश दिये

मालपुरा, (निसं)। आगामी दिनो मे आने वाले त्यौहार व कावड यात्रा को लेकर कानून व्यवस्था को मध्य नजर रखते हुये एसडीएम अमित चौधरी ने मंगलवार को ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक ले आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

एसडीएम की अध्यक्षता में हुई बैठक में मौजूद सभी विभागों के अधिकारियों से एसडीएम ने केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर फिडबैक ले आवश्यक निर्देश दिये। विभागवार अधिकारियों से फिडबैक लेने के साथ-साथ एसडीएम ने सभी अधिकारियों को अपने-अपने अधिनस्थ कर्मचारियों को कावड यात्रा सहित अन्य त्यौहारों पर क्षेत्र में हर एक गतिविधि पर निगरानी रखने व अधिकारियों को रिपोर्ट देने के निर्देश दिये। लम्बे समय बाद एसडीएम द्वारा ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की बैठक लेने के बावजूद बैठक में कई विभागों के अधिकारी अनुपस्थित रहे। जिसके चलते कई विभागों की बैठक के दौरान समीक्षा नहीं हो सकी। सोमवार को मालपुरा की प्रशासनिक व्यवस्थाऐं रामभरोसे शीर्षक से खबर प्रकाशित करने तथा जिम्मेदार अधिकारियों के पद रिक्त होने अथवा अधिकारियों के अवकाश पर होने का उल्लेख करते हुये उच्चाधिकारियों का ध्यान जनहित में आकर्षित किया गया था। खबर प्रकाशन के बाद अवकाश पर चल रहे एसडीएम अमित चौधरी तत्काल कार्यभार संभालते हुये आनन-फानन में ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली।

एसडीएम अमित चौधरी ने ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली।

प्राथमिक विद्यालय को क्रमोन्नत कराने की मांग

चाकसू, (निसं)। कस्बे में गरुडवासी रोड पर एसबीबीजे न्यू कॉलोनी वार्ड नंबर 28 के लोगों द्वारा क्षेत्रीय विधायक रामावतार बैरवा के निजी आवास पर शिष्टाचार मुलाकात कर कॉलोनी स्थित राजकीय विद्यालय को क्रमोन्नत कराने की मांग की है।

ज्ञापन में समस्त वार्ड वासियों ने बताया कि कॉलोनी में स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय वार्ड नंबर 13 डाइस कोड 08121330108 का वर्तमान में कक्षा 1 से 8 तक का नामांकन 270 से अधिक है। उपरोक्त विद्यालय के केचमेंट एरिया में एसबीबीजे न्यू कॉलोनी, श्यामपुरा वाली ढाणी, बांसा वाली ढाणी, सटवाली की ढाणी, पाट्यया वाली ढाणी, इंदिरा नगर, रिद्धि सिद्धि नगर, राघवपुरा की बैरवा की ढाणी, बडली वाली ढाणी, टिगरिया की बैरवा की ढाणी के अलावा लगभग 10 नई कॉलोनियां आती है। जिनकी आबादी लगभग 3000 है।

इतनी आबादी क्षेत्र में एकमात्र उच्च प्राथमिक विद्यालय ही स्थित है जिससे यहां के बालक बालिकाओं को चाकसू कस्बे में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चाकसू एवं राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चाकसू में 4 से 6 किलोमीटर की दूरी तय करके जाना पडता है। जिससे बच्चों को परेशानियों का सामना करना है।

बालिकाओं के लिए यह समस्या ज्यादा गंभीर है। सडक पर आते जाते समय आवारा लडकों एवं शराबियों द्वारा उन पर गंदे एवं अश्लील कमेंट किए जाते हैं हैं जिससे बालिकाएं विद्यालय जाने से भी कतराती हैं। बच्चे जब तक सुरक्षित घर नहीं पहुंच जाते तब तक परिजनों को बच्चों की चिंता रहती है। जिससे अधिकांश बालक बालिकाओं को उच्च प्राथमिक शिक्षा के बाद की पढाई को छोडना पडता है। अत: उपरोक्त परिस्थिति को मध्य नजर रखते हुए राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय वार्ड नंबर 13 डाइस कोड 08121330108 को उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत करवाया जाए।

शहीद की प्रतिमा का संतों ने किया अनावरण, देशभक्ति गीतों की दी प्रस्तुति

श्रीमाधोपुर, (निसं)। उपखंड की पंचायत सिहोडी त्रिलोकपुरा में सेना के शहीद हवलदार पप्पूराम सामोता की प्रतिमा का अनावरण साधु संतों की मौजूदगी में समारोह पूर्वक आयोजित हुआ। शहीद हवलदार पप्पूराम सामोता की प्रतिमा का अनावरण भजन सम्राट तथा संत प्रकाश दास महाराज, रैवासा धाम पीठाधीश्वर महाराज राघवाचार्य, दाऊधाम काला कोटा टोडा संत बलदेवाचार्य महाराज के सानिध्य तथा विरांगना सुमन देवी, शहीद की माता माली देवी एवं परिवार जनों की मौजूदगी में प्रतिमा का पर्दा हटाकर एवं फिता काटकर तथा माला पहनाकर किया गया।

शहीद की प्रतिमा अनावरण के साथ वीर शहीद पप्पूराम सामोता अमर रहें.....भारत माता की जय....वंदे मातरम के जयघोष से शहीद स्मारक गूंज उठा। संतों ने प्रतिमा अनावरण समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा की हमारी राजस्थान की धरती वीरों की धरती है और आन, बान और शान के लिए जानी जाती है। उन्होंने कहा कि शहीद पप्पूराम सामोता के माता-पिता को भी नमन करता हूं,जिन्होंने ऐसे सपूत को जन्म दिया, जिसने खुद को मातृभूमि के लिए न्योछावर कर दिया। इस दौरान संत तथा भजन सम्राट गायक प्रकाश दास महाराज ने तेरी मिट्टी में मिल जाएं...तलवारों पर सर वार दिएं .....जहां डाल डाल पर सोने की चिडिया.. वह भारत देश मेरा.....ऐ मेरे वतन के लोगो सहित इत्यादि देशभक्ति गीतों की एक से बढकर प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर मौके पर माहौल देशभक्ति मय कर दिया। इस दौरान नीमकाथाना जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल अजय शर्मा, भगवान सिंह शेखावत, सरपंच सुंदरलाल भावरिया, हवलदार राजवीर सिंह, हवलदार सुल्तान सिंह, भाई सुरेश कुमार, दिनेश डोडवाडिया, मुकेश कुमार विकास जीतरवाल सहित परिजन एवं सैकडो लोग उपस्थित रहें। शहीद पप्पूराम सामोता की माता माली देवी, वीरांगना सुमन देवी शहीद के पुत्र लोकेन्द्र तथा विजेन्द्र का मंचासीन संतों के द्वारा शॉल ओढाकर तथा माला पहनाकर सम्मान किया। इस दौरान विरांगना सुमन देवी भाव विभोर हो गई जिसे संतों ने ढाढस बंधाते हुए कहा कि पति की शहादत पर आंखों में आंसू नहीं होने चाहिए बल्कि उनका सीना गर्व तथा फर्क से चौडा होना चाहिए।

जानकारी के अनुसार हवलदार पप्पू राम सामोता जो कि 2005 में सेना में भर्ती हुए थे तथा लेह लद्दाख में 4 जाट रेजीमेंट बटालियन में हवलदार के पद पर तैनात थे। इनके पिता का निधन कई सालों पहले हो गया था। उसके बाद उन्होंने अपने परिवार को संभाला। उनकी शादी 2006 में सुमन देवी के साथ हुई थी। इनके लोकेंद्र 15 साल व विजेंद्र 11 साल के दो पुत्र हैं। पप्पूराम दो भाई है। जिनमें छोटा भाई सुरेश सेना से सेवानिवृत्त होकर घर आ चुका है।

शहीद हवलदार पप्पूराम सामोता की प्रतिमा का अनावरण साधु संतों की मौजूदगी में समारोह पूर्वक आयोजित हुआ।

■ विरांगना तथा परिवार जनों का किया सम्मान

सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट को अन्यत्र स्थानान्तरण की मांग

कोटपूतली, (निसं)। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम चतुर्भुज में लगाए जा रहे सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट को अन्यत्र स्थानान्तरण की मांग को लेकर ग्रामीणों द्वारा चतुर्भुज बचाओ आंदोलन के अन्तर्गत किया जा रहा धरना प्रदर्शन मंगलवार को भी निरन्तर जारी रहा।

ग्रामीणों ने सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट के निर्माण स्थल पर जाकर जबरन करवाये जा रहे निर्माण कार्य को रुकवाया तथा धरना प्रदर्शन कर अपना विरोध व्यक्त किया। ग्रामीणों ने निर्माण कार्य के बारे में नगर परिषद आयुक्त को बताया। आयुक्त ने जे.ई.एन.को कार्य रुकवाने को कहा तथा बिना आदेश के निर्माण कार्य नहीं करवाने की बात कही। इस दौरान गिरिराज भारती, प्रताप सिंह यादव, दशरथ धानका, तुलसी स्वामी, गिरिराज स्वामी, किशनलाल स्वामी, रोहित स्वामी, विक्रम सैन, लोकेश धानका, विकास यादव व आदेश धानका सहित बडी संख्या में ग्रामीण महिलायें भी मौजूद रही।

ग्रामीणों द्वारा चतुर्भुज बचाओ आंदोलन के अन्तर्गत किया जा रहा धरना प्रदर्शन निरन्तर जारी रहा।

■ ग्रामीणों ने सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट के निर्माण कार्य को फिर रुकवाया

सार-समाचार

गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाले कैडेट्स का किया सम्मान

कोटपूतली, (निसं)। स्थानीय राजकीय सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय में मंगलवार को एनएमएमएस परीक्षा में चयनित होने वाले छात्र-छात्राओं एवं एनसीसी एटीसी कैम्प में गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाले कैडेट्स का सम्मान किया गया। प्रधानाचार्य मनोरमा यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि 10 दिवसीय एटीसी कैम्प भवानी निकेतन जयपुर में विद्यालय के एनसीसी कैडेट्स द्वारा शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 5 मेडल प्राप्त किये गये हैं। जिसमें चार गोल्ड मेडल एवं एक सिल्वर मेडल है। कैडेट यशस्वी सैनी द्वारा दो गोल्ड मेडल वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं मंच संचालन में प्राप्त किया गया। कैडेट्स आंचल सोनी ने नृत्य कला में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। निखिल सैनी द्वारा गोल्ड मेडल एवं मानसी सैनी ने सिल्वर मेडल ड्रिल प्रतियोगिता में प्राप्त किया है। कैम्प में लगभग 20 स्कूल एवं कॉलेज के 600 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। जिसमें मंच संचालन एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल, इन सब मेडल के साथ विशेष रूप से विद्यालय के लिए बडे हर्ष का विषय है। इसके अतिरिक्त एनएमएमएस प्रतियोगिता में विद्यालय के कुल 13 छात्र चयनित हुये। विद्यालय स्तर पर छात्र निर्भय सैनी ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किये एवं विद्यालय स्तर पर द्वितीय स्थान छात्रा आंचल सोनी ने प्राप्त किया। इन सभी विद्यार्थियों को कक्षा 09 से 12 तक प्रतिमाह एक हजार रूपये की छात्रवृत्ति, 04 वर्ष में कुल 48 हजार रूपये छात्रवृत्ति के रूप में प्राप्त होंगे। प्रधानाचार्य ने सभी चयनित विद्यार्थियों एवं मेडल प्राप्त करने वाली एनसीसी कैडेट्स का माला पहनाकर सम्मान किया। इस मौके पर अध्यापक संदीप कुमार जांगिड, सुरेंद्र कुमार सैनी, भूमिका यादव का धन्यवाद व्यक्त किया गया, जिन्होंने इन छात्रों को तैयारी करवाकर, मार्गदर्शन कर परीक्षा में सफलता प्राप्त करवाई।

श्री कृष्ण गोशाला का किया भ्रमण

श्रीमाधोपुर, (निसं)। अजीतगढ श्री कृष्ण गोशाला में गौ धाम निवाई संत व राष्ट्रवादी भजन गायक प्रकाश दास महाराज ने भ्रमण किया। इस दौरान गोशाला में गौसेवा कार्यों को देखकर सराहना की तथा अनेक व्यवस्थाओं में सुधार के दिशा निर्देश भी दिए। गोशाला प्रबंधन ने महाराज का सम्मान करके गौ सेवा कार्य कमें सहयोग हेतु भजन संध्या का आग्रह पत्र सौंपा। जानकारी मुताबिक गौ धाम निवाई संत प्रकाश दास महाराज मंगलवार सुबह श्री कृष्ण गोशाला अजीतगढ पहुंचे। इस दौरान प्रबंधन कार्यकारिणी ने अध्यक्ष चैतन्य मीणा के नेतृत्व में गोशाला का भ्रमण करवाते हुए गौ आवास में हाल ही लगाई जा रही इंटरलॉकिंग कार्य, गौ आवासों में गौवंश के अलग अलग रखने, चारा गोदाम, बीमार गौवंश के लिए उपलब्ध प्राथमिक दवा पेटिका, बीमार गौवंश को खडे करने की मशीन, हरा चारा कटाई मशीन, गौ सवामनी हेतु पक्की भट्टी, गौवंश के हरे चारे की उपलब्धता समेत कृषि भूमि का अवलोकन करवाया गया। इस मौके पर महाराज ने कहा कि अजीतगढ शहर में आजादी से पूर्व स्थापित गोशाला और उसमें वर्तमान में हो रही गौसेवा कार्य काफी सराहनीय है, प्रबंधन कार्यकारिणी में हरेक आयुवर्ग के पदाधिकारी, कार्यकर्ता शामिल होकर अच्छा कार्य कर रहे है। उन्होंने गोशाला परिसर को पॉलीथिनमुक्त बनाए जाए का संदेश दिया। इसे बाद गौ पूजन करके गौवंश को हरा चारा खिलाया तथा गोशाला परिसर स्थित शिवालय में पूजन करके राष्ट्र की खुशहाली के लिए गौ माता की सेवा का संकल्प हरेक व्यक्ति को करने की बात कही।

इंग्लिश स्कूल में हिंदी माध्यम से भी पढ़ाई कराने की मांग

सांभरझील, (निसं)। पीएम श्री दरबार रा.उ.मा.वि (इंग्लिश मीडियम) में कक्षा 11 व 12 में अंग्रेजी माध्यम के साथ ही हिन्दी माध्यम में भी सभी संकाय संचालन प्रारंभ करवाने के लिए पूर्व विधायक निर्मल कुमावत में शिक्षा मंत्री से गुहार लगाई है। कुमावत ने पत्र भेज कर बताया कि इस विद्यालय में एमजीजीएस योजना अन्तर्गत कला, वाणिज्य, विज्ञान और कृषि संकाय अंग्रेजी में संचालन करने के आदेश पिछले सत्र 2023-24 में कर दिए गये थे। इससे कक्षा 11 व 12 के हिन्दी माध्यम के लगभग 300 से अधिक विद्यार्थियों के लिए अध्ययन का संकट खडा हो गया, क्योंकि इस विद्यालय के अतिरिक्त सांभर में उच्च माध्यमिक स्तर का विद्यालय कक्षा 11 व 12 हेतु हिन्दी माध्यम के छात्रों के लिए संचालित नहीं है। सांभर कस्बे के अभिभावकों, कस्बेवासियों व एसडीएमसी सदस्यों की पुरजोर मांग है कि हिन्दी माध्यम के गरीब, जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए भी उच्च माध्यमिक विद्यालय की नितांत आवश्यकता है। उक्त विद्यालय समस्त भौतिक संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इस विद्यालय के पास ही समाज कल्याण विभाग का छात्रावास भी है, जहां दूर-दूर से आये विद्यार्थी इसी विद्यालय में अध्ययन करते है। अंग्रेजी व हिन्दी दोनों माध्यम के लिए विद्यालय में अलग-अलग विंग उपलब्ध है, इसलिए हिंदी माध्यम से संचालन किये जाने की व्यवस्था होना जरूरी है।

बी.ए. प्रथम में प्रवेश हेतु आवेदन की अंतिम तिथि आज

कोटपूतली, (निसं)। स्थानीय राजकीय एलबीएस पी.जी. महाविधालय में स्नात्तक पार्ट प्रथम में प्रवेश हेतु आवेदन की अंतिम तिथि 3 जुलाई यानि आज है। प्राचार्य डॉ. आर.के. सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि महाविद्यालय में स्नात्तक पार्ट प्रथम कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय में प्रवेश हेतु ऑनलाईन आवेदन की अंतिम तिथि 03 जुलाई 2024 है। अंतरिम प्रवेश सूची तथा प्रतीक्षा सूची का प्रकाशन 08 जुलाई को किया जायेगा। प्रवेश सूची एवं प्रतीक्षा सूची के अभ्यर्थियों द्वारा महाविद्यालय में दस्तावेज सत्यापन एवं ई-मित्र पर शुल्क जमा करवाने की अंतिम तिथि 11 जुलाई है। प्रवेशित विद्यार्थियों की सूची का प्रकाशन 12 जुलाई को किया जायेगा। स्नात्तक पार्ट में प्रवेशित विद्यार्थियों का शिक्षण कार्य 15 जुलाई को प्रारम्भ हो जायेगा। महाविद्यालय में प्रवेश के लिए लेट फीस का प्रावधान नहीं होता है, अत: जो विद्यार्थी महाविद्यालय में प्रवेश लेना चाहते हैं वे अंतिम तिथि से पूर्व ऑनलाईन आवेदन करें। आवेदन करने के लिए बोर्ड की मार्कशीट व टीसी की आवश्यकता नहीं है। विद्यार्थी इंटरनेट की मार्कशीट या माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी सीधे ही रोल नंबरों के आधार पर आवेदन कर सकते है।

संक्षिप्त

ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार की मौत

निवाई, (निसं)। गांव जीवली मोड पर मंगलवार की सुबह एक ट्रैक्टर ने मोटरसाईकिल के टक्कर मार दी जिससे मोटरसाईकिल सवार की मौत हो गई। थानाधिकारी हरिराम वर्मा ने बताया कि शहर की सुभाष कॉलोनी निवासी

मृतक ओमप्रकाश

ओमप्रकाश पुत्र सीताराम जायसवाल उम्र 42 वर्ष मोटरसाईकिल से बौली जा रहा था। इसी दौरान जीवली मोड पर एक ट्रैक्टर चालक ने गफलत से चलाकर मोटसाईकिल के टक्कर मार दी जिससे उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पंहुची और शव को राजकीय सामुदायिक अस्पताल में लाकर पोस्ट मार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। उन्होंने बताया कि मृतक ओमप्रकाश बौली में साईकिल रिपेयरिंग का कार्य करता था।

सड़क हादसे में चार लोग घायल

दूदू, (निसं)। जिले के अधीन साखून सेपडासोली मार्ग पर मंगलवार की सुबह एक निजी बस में ट्रक में टक्कर हो जाने के बाद बस खाई में जा गिरी तथा यात्रियों को चोटे आई। चार यात्रियों के घायल हो जाने पर राजकीय चिकित्सालय में उपचार कराया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बस साखून से किशनगढ जा रही थी इसी दौरान ट्रक से टकरा गई। घटना के बाद यात्रियों ने बस के शीशे तोडकर ग्रामीणों की सहायता से बाहर निकाले। कई यात्रियों को मामूली चोटे आई तथा ज्ञानचंद राजू शाहरु रमेश को घायल होने पर राजकीय चिकित्सालय में उपचार प्रदान किया गया। मौके पर नरेना थाने की पुलिस ने पहुंचकर घटना की जानकारी ली तथा ट्रक चालक मौके से फरार हो गया।

रोटरी क्लब दूदू की कार्यकारिणी गठित

दूदू, (निसं)। जिला मुख्यालय पर रोटरी वर्ष प्रथम दिवस पर क्लब के सदस्य की बैठक विकास जैन की अध्यक्षता में आयोजित की जाकर रोटरी क्लब दूदू की कार्यकारिणी का गठन किया गया। सचिव मुकेश शर्मा ने बताया कि सह सचिव विजय जैन, उपाध्यक्ष मनोज शर्मा, राजेंद्र कोठारी कोषाध्यक्ष महेश शर्मा को चुना गया। पश्चात दूदू रोडवेज बस स्टैंड परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जाकर पेड लगाए गए। इस दौरान क्लब की कार्यकारिणी के पदाधिकारी व सदस्य मौजूद रहे।

प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

शाहपुरा, (निसं)। मिलन ग्रुप ऑफ एजुकेशन बाडीजोडी के मेधावी छात्र-छात्राओं का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ। समारोह में 10वीं बोर्ड परीक्षा में अव्वल रहने वाले संस्थान के मेधावी छात्र-छात्राओं को माला पहनाकर व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान संस्थान के निदेशक मिलन शर्मा ने कहा प्रतिभाओं का सम्मान करने से उनका हौंसला बढता है। ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। मिलन ग्रुप ऑफ एजुकेशन संस्थान बाडीजोडी के द्वारा गाँव के छात्र छात्राओं को उनके घर के पास ही बेहतरीन शिक्षा उपलब्ध करवाई गई जिससे10वीं राजस्थान बोर्ड में विधार्थीयो ने अच्छा रिजल्ट प्राप्त किया है। सम्मान समारोह के बाद डीजे के साथ कस्बे में रैली निकाली गई।

100 फल व छायादार पौधे लगाए

निवाई, (निसं)। भाजपा के एक पेड मां के नाम अभियान से प्रेरित होकर पौधारोपण कार्यक्रमों का अन्य जगहों पर भी आयोजन होने लगे हैं। इसी को लेकर चौहान एन्क्लेव में पौधरोपण किया गया। डॉ. चित्रा शर्मा के नेतृत्व में करीब 100 फल व छायादार पौधे लगाए गए हैं। इस अवसर पर डॉक्टर चित्रा शर्मा ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा व संतुलन के लिए सभी को कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। इस मौके पर एक साथ तीन बेटियों ने अपनी मां के नाम पौधे लगाए। समाजसेवी ओमप्रकाश शर्मा ने बताया कि पौधारोपण के दौरान पपीता, आम, करंज, अशोक, कण्डीर, नींबू, नीम व सहेजन सहित अनेक छायादार व फलदार पौधे लगाए गए। इस अवसर पर पूर्व उपसरपंच रामलाल शर्मा, सत्यदेव पारीक, अजयकुमार शर्मा, हरि शर्मा, सिया शर्मा व सुशीला देवी सहित कई लोग मौजूद रहे।

खेल जीवन में अनुशासित रहना सिखाते है : कलेक्टर

अलवर, (निसं)। जिला कलेक्टर आशीष गुप्ता ने मंगलवार को केन्द्रीय विद्यालय संगठन जयपुर संभाग के तत्वावधान में आयोजित 53वीं संभाग स्तरीय (योगासन, रस्सी कूद एवं मल्लखंभ) खेलकूद प्रतियोगिता का मोती डूंगरी स्थित केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 में ध्वजारोहण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारम्भ किया।

जिला कलेक्टर ने विद्यार्थियों उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन वास करता है तथा अच्छे स्वास्थ्य के लिए खेलों का विशेष महत्व है। उन्होंने कहा कि खेल ना केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी बेहद आवश्यक है। खेल जीवन में अनुशासित रहना सीखाते हैं। उन्होंने कहा कि कठोर परिश्रम व दृढ निश्चय से कोई भी मुकाम हासिल किया जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों को कडी मेहनत कर अपने माता-पिता के सपनों को पूरा करने हेतु प्रेरित किया। इस दौरान उन्होंने सत्र 2023-24 में सीबीएसई में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

कलेक्टर आशीष गुप्ता ने सीबीएसई में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

- केन्द्रीय विद्यालय में संभाग स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ

जिला कलेक्टर ने विद्यालय में पीएम श्री प्रोजेक्ट के अन्तर्गत बनाए गए खेल पुस्तकालय का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि खेल आधारित गतिविधियों पर बनाया गया पुस्तकालय से विद्यार्थियों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगा जिससे खेल के साथ-साथ विद्यार्थियों की अध्ययन में भी रूचि बढेगी। इस दौरान उन्होंने 'हरित विद्यालय कार्यक्रम 2024' के तहत विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य डॉ. एल. आर सैनी ने विद्यालय की शैक्षणिक, सह शैक्षणिक एवं खेलकूद से संबंधित उपलब्धियों की जानकारी दी।

प्राचार्य ने बताया कि संभाग स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 4 जुलाई तक आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता में जयपुर संभाग के 36 विद्यालयों के 203 प्रतिभागी एवं 47 अनुरक्षकों ने भाग लिया है। इस दौरान विद्यार्थियों द्वारा योगासन की विभिन्न मुद्राओं के माध्यम से स्वस्थ जीवन शैली का संदेश दिया। कार्यक्रम में को सद्भावना एवं भाईचारे की शपथ दिलाई गई तथा विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम व लोक नृत्य की प्रस्तुति दी। मंच संचालन नरेन्द्र कुमार ने किया। इस दौरान प्रतियोगिता संयोजक आर. एल मीणा सहित विद्यालय स्टाफ एवं प्रतिभागी मौजूद रहे।

आधुनिक मशीन से जांच सुविधा शुरू

टोंक, (निसं)। टीबी मरीजो की आधुनिक मशीन द्वारा जांच सुविधा हेतु जिले में 2 सीबीनॉट मशीनों का और संचालन शुरू हो गया है। जिसमें से एक सीबीनॉट मशीन जिला सआदत चिकित्सालय, टोंक एंव दूसरी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, देवली में स्थापित की गई है।

मुख्य चिकित्सा एंव स्वास्थ्य अधिकारी, डॉ. अशोक कुमार यादव ने बताया कि जिले में इससे पूर्व क्षय रोगियों की जांच हेतु आधुनिक सीबीनॉट मशीन जिला क्षय निवारण केन्द्र, टोंक व सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, मालपुरा पर ही स्थापित थी, जिससे की अब क्षय रोगियों को अपने नजदीक ही आधुनिक जांच सुविधा उपलब्ध हो सकेगी जिससे रोगी का समय व धन बच सकेगा। जिला क्षय रोग अधिकारी, डॉ. हिमांशु मित्तल द्वारा बताया गया कि इसी सप्ताह जिले में दो और सीबीनॉट मशीन सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, उनियारा व पीपलू में स्थापित हो जायेगी, जिससे की मरीजो की अपने नजदीक ही गुणवत्ता पूर्ण जांच हो सकेगी एंव जिले में 1 जुलाई से शुरू हुये टीबी मुक्त ग्राम पंचायत अभियान में अधिक से अधिक संभावित टीबी रोगियो की जांच करवाई जा सकेगी। जिससे की जिले में लक्ष्य अनुरूप प्रतिलाख जनसंख्या पर न्यूनतम 3000 जांचे किया जाना भी संभव हो सकेगा।

ज्वैलर्स की दुकान में चोरी करने आए दो चोर

मनोहरपुर, (निसं)। थाना क्षेत्र के मुख्य बस स्टैंड के पास स्थित आरके ज्वेलर्स की दुकान पर मंगलवार को दिनदहाडे दो शातिर चोर चोरी करने के इरादे से आए जिनको दुकान मालिक ने दबोच कर पुलिस के हवाले किया।

- दुकान मालिक ने एक को दबोचा, दूसरा फरार

शातिर चोर कोटा का निवासी है। मौके पर ही ग्रामीणों की भीड एकत्रित हो गई। दुकान मालिक रामकिशन सोनी ने बताया कि वह दुकान पर बैठे थे और उनके बेटा कमलेश सोनी दुकान से कार्य कर नजदीक ही बैंक में किसी आवश्यक कार्य को लेकर गया हुआ था। इस दौरान करीब 12 बजे दो शातिर चोर दुकान पर आकर पहले तो तोहफे में देने के लिए चांदी की अंगूठी दिखाने के लिए कहा उसके बाद इयरिंग देखने के लिए कहा। इसी प्रकार सोने व चांदी का सामान बारी बारी से दिखाया गया तो भी वह संतुष्ट नहीं हो सके। इसी बीच उन्होने सामान देखने की बात कही वही दुकान पर बैठे रामकिशन सोनी को सोने के पेंडल में उलझाए रखा जैसे ही दुकान मालिक का ध्यान भटका।

उसी दौरान एक चोर ने दुकान मालिक के हाथ से झपट्टा मार सोने का पैंडल लेकर भागने लगा तो रामकिशन सोनी ने दुकान पर ही एक को पकड लिया और दूसरा हाथ छुडाकर मौके से फरार हो गया। रामकिशन सोनी ने बताया कि गनीमत रही की कोई नुकसान नहीं हुआ। उक्त मामले की जानकारी थाना पुलिस को दी। सूचना पाकर मौके पर थाना पुलिस के हेड कांस्टेबल सुरेंद्र राठौर पहुंचे और चोर को थाने ले जाया गया।

पावटा में भाजपा द्वारा चलाए जा रहे एक पेड मां के नाम अभियान के तहत भाजपा जिला उपाध्यक्ष देहात उत्तर रत्ना कुमारी शाहपुरा ने शाहपुरा शहर में 151 पौधे लगाए। रत्ना कुमारी ने बताया की मोदी जी के आवाहन पर एक पेड मां के नाम के तहत मंगलवार को शहर के नरसिंह मंदिर, बाबा गंगादास महिला महाविद्यालय, दीवान बालिका विद्यालय, हनुमान मंदिर सहित विभिन्न जगहों पर पेड़ लगाए। उन्होंने कहा कि 23 जून से शुरू यह अभियान 6 जुलाई तक चलेगा और इसके तहत प्रदेश में लाखों पौधे लगाए जाएंगे। उन्होंने आम लोगों और कार्यकर्ताओं से भी पौधरोपण करने की अपील की।

ब्लाइंड मर्डर का फर्दाफाश, चार बाल अपचारी निरूद्ध

मालपुरा (निसं)। जयपुर भीलवाडा स्टेट हाईवे के केकडी रोड ईदगाह के पास 7 मई 2024 को हुये युवक के ब्लांईड मर्डर में लिप्त चार बाल अपचारियों को निरूद्ध करते हुये मालपुरा थाना पुलिस ने ब्लांईड मर्डर का खुलासा किया।

- मौज मस्ती व शोक पूरे करने के लिये राहगीरों से मारपीट व लूटपाट करते थे बाल अपचारी

चारो बाल अपचारियों को न्यायालय ने भेज बाल सुधार गृह भेजा गया। थानाधिकारी चेनाराम बेडा ने बताया कि सात मई की देर शाम को दो युवक अस्पताल मे गंभीर घायलवस्था में भर्ति हुये थे। एक घायल युवक ने बिना अस्पताल प्रशासन को बताये व थाना पुलिस को सूचना दिये बगैर ही युवक के शव को निजी एम्बूलेंस से लेकर अस्पताल से निकल गया। पुलिस ने अस्पताल पहुंच एम्बूलेंस चालक के मोबाईल पर सम्पर्क कर गोपनीय ढंग से एम्बूलेंस को वापस मालपुरा अस्पताल मंगवा शव को पुलिस सुरक्षा में ले मोर्चरी में रखवाया गया। जहां उसकी शिनाख्त होने पर परिजनों को सूचना दे मालपुरा बुलाया गया। मांगलियावास थाना क्षेत्र के डुमाडा निवासी राजवीर सिंह की और से 8 मई 2024 को दी गई रिपोर्ट में बताया कि 4 मई को मेरा भाई नन्द भंवर उर्फ नयांस अपने दोस्त चन्द्रमोहन मीणा के साथ रणथम्भोर घुमने गया था। आठ मई की सवेरे चार बजे मेरे भाई के मोबाईल से ही उसके दोस्त चन्द्रमोहन ने बताया कि हमारा एक्सीडेन्ट हो गया है। हम दोनो मालपुरा अस्पताल मे भर्ति है। चन्द्रमोहन की सूचना पर मैं मेरे दोस्त के साथ मालपुरा पहुंचे तो अस्पताल मे मेरे भाई नन्द भंवर की मुझे लाश मिली। जिसे देखकर उसकी सडक हादसे मे नही बल्कि हत्या की गई है। राजवीर द्वारा दी रिपोर्ट पर अनुसंधान शुरू किया गया। ब्लांईड मर्डर का खुलासा करने के लिये विशेष टीम का गठन किया गया। जिसमे हैडकांस्टेबल सीताराम, कांस्टेबल कपिल, देवीशंकर, राजेन्द्र, हरिराम, गंगदेव व सोमपाल को शामिल किया गया। विशेष टीम ने मामले की गंभीरता देखते हुये घटनास्थल के आसपास के सभी रास्तों से आने-जाने वाले लोगों से घटना को लेकर गोपनीय पूछताछ करते हुये साक्ष्य जुटाये।

आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज व अन्य सबूत जुटाये। जिनमे एक बजाज मोटरसाईकिल के संदिग्ध सामने आने पर जिला परिवहन कार्यालय से मालपुरा क्षेत्र में बिकने वाली सभी बजाज प्लेटिना गाडी के मालिकों से पूछताछ की गई। पुलिस टीम की कडी मेहनत से घटना में शामिल चार बालकों की पहचान होने पर उन्हे निरूद्ध किया गया। जिनसे की गई पूछताछ मे चारों ने बताया कि वो रोजाना सडकों पर मोटरसाईकिल से घुमते थे तथा मौज मस्ती व अपने शोक पूरे करने के लिये अकेले जाने वाले व्यक्तियों से मारपीट व छीना छपटी की वारदाते कारित करते थे। सात मई की रात्री को कब्रिस्तान लिंक रोड के पास बैठे तीन व्यक्तियों को अकेला देखकर उनके साथ मारपीट कर फरार हो गये। निरूद्ध किये गये चारों बाल अपचारियों को मंगलवार को टोंक न्यायालय के समक्ष पेश किया गया जहां से चारों को बाल सम्प्रेक्षण गृह टोंक भेजा गया।

पेयजल, चिकित्सा, स्वास्थ्य समस्याओं पर किया विचार विमर्श

पावटा, (निसं)। पंचायत समिति पावटा सभागार में साधारण सभा की बैठक विधायक कुलदीप धनकड के मुख्य आतिथ्य व प्रधान पूजा चौधरी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। विधायक कुलदीप धनकड ने मीटिंग में अधिकारियों से अनुरोध किया कि हमें जन भावनाओं का सम्मान करते हुए जनता के कार्यो व मांगों को प्राथमिकता से संपादित करें। इसमे किसी प्रकार के व्यक्तिगत या राजनीतिक हित आढे नहीं आना चाहिए। राज्य सरकार द्वारा जो भी सुविधाएं एवं योजनाएं जनकल्याण के लिए चलाई जा रही हैं उनका लाभ उपयुक्त, पात्र परिवार को मिले, इसकी पूर्णतया समीक्षा की जाए।

- साधारण सभा की बैठक आयोजित, विधायक ने दिए निर्देश

गर्मी में लोगों को पेयजल आपूर्ति व लाइट की व्यवस्था पूरी तरह से उपलब्ध हो इसके लिए अधिकारियों को तैयार रहने के लिए कहा। वही पेयजल, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, विद्युत व अन्य विभागों के क्रियाकलापों व बाल सुरक्षा एवं बाल संरक्षण, किसानो संबंधित समस्याओं, पशुओं से संबंधित समस्याओं पर विचार विमर्श किया गया। विधायक कुलदीप धनकड ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र में विकास के कार्यों के लिए पैसे की कोई कमी नहीं है लेकिन उन कार्यो की समीक्षा ढंग से की जाए। वही उपखंड क्षेत्र के सभी अधिकारियों से किए गए कार्यो की समीक्षा ली गई। चिकित्सा विभाग के अधिकारियों से स्वास्थ्य संबंधित जानकारी ली। इस दौरान बैठक मे मौजूद जनप्रतिनिधियों ने पानी की समस्या को देखते हुए बंद हुई टैंकर व्यवस्था को सुचारु करने, ढीले व लटके हुए तारों को सही करने, सिंगल व थ्री फेस की डी पी कनेक्शनों को सिटी लाईट से जोडने, बडी डीपीयो के टुकडे करने, बिजली कटौती व ट्रिपिंग समस्या से अवगत करवाते हुए समस्याओ के समाधान की मांग की। वही प्रत्येक ग्राम पंचायत पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर भाजपा द्वारा आयोजित एक पेड मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया जाए। इस दौरान उनके साथ पावटा एसडीएम कपिल उपाध्याय, नायब तहसीलदार शिवानी शर्मा, विकास अधिकारी सुरेश, प्रधान पूजा चौधरी, उपप्रधान राजेंद्र सिंह, सरपंच, जिला पार्षद, प्रागपुरा थाना पुलिस से विभागों के कर्मचारी व धिकारियों सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

चोरी हुआ 22 चक्का ट्रेलर 12 घंटे से भी कम समय में बरामद

कोटपूतली, (निसं)। स्थानीय थाना पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता 2023 के तहत कोटपूतली थाने में दर्ज प्रथम प्रकरण में प्रभावी कार्यवाही करते हुये कस्बे से चोरी हुये 22 चक्का ट्रेलर को महज 12 घण्टे से भी कम वक्त में बरामद किये जाने में सफलता हांसिल की है।

- ट्रेलर की अनुमानित कीमत 60 लाख रूपये आंकी गई
- राजमार्ग व टोल नाकों पर सीसीटीवी फुटेज व तकनीकी सहायता से बरामद किया

एसएचओ राजेश शर्मा ने जानकारी देते हुये बताया कि सोमवार 1 जुलाई को परिवादी जयदेव शर्मा निवासी ग्राम कालूहेडा ने थाने पर उपस्थित होकर रिपोर्ट दर्ज करवाई कि वह त्रिवेणी ग्रीप मैन्युफैक्चिरिंग कम्पनी, बेरी में मुनीम का कार्य करता है। विगत 30 जून की रात 9 बजे कम्पनी के 22 चक्का ट्रेलर को उसका चालक योगेश पुत्र उमराव निवासी टोडावाली, अमाई राजमार्ग स्थित आरटीएम होटल के सामने सर्विस लेन पर खडा करके अपने घर चला गया था। अगले दिन 1 जुलाई की सुबह 5.15 बजे वापस आकर देखा तो ट्रेलर मौके पर नहीं मिला, जिसे अज्ञात चोर चुराकर ले गये।

इस पर पुलिस ने मामले में तुरन्त प्रभाव से कार्यवाही करते हुये राजमार्ग व टोल नाकों पर सीसीटीवी फुटेज से तकनीक की सहायता द्वारा उक्त ट्रेलर को 12 घण्टे से भी कम समय में भिवाडी फेज 3 के ग्राम सहडोद के पास स्थित जंगल से बरामद किया। उक्त ट्रेलर की किमत करीब 60 लाख रूपये आंकी गई है। ट्रेलर चुराने वाले आरोपीयों की पुलिस सरगर्मी से तलाश कर रही है।

ट्रेलर चुराने वाले आरोपियों की पुलिस सरगर्मी से तलाश कर रही है।

डी.आर.एम. विकास पुरवाल का सम्मान

फुलेरा, (निसं)। दैनिक रेल यात्री संघ एकीकृत फुलेरा के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा रेल प्रबन्धक विकास पुरवाल का स्वागत सम्मान किया गया। जानकारी देते हुए दैनिक रेल यात्री संघ एकीकृत के अध्यक्ष अशोक वासदेव ने बताया कि संघ की ओर से फुलेरा जंक्शन पर रेल यात्रीयों के लिए 12 मई से 23 जून तक जलसेवा का आयोजन किया गया। इसके चलते जयपुर मण्डल रेल प्रबंधक विकास पुरवाल को समापन समारोह का प्रतीक चिन्ह देखकर सम्मान किया गया। इसके साथ ही दैनिक रेल यात्रियों की विभिन्न समस्याओं को लेकर लगभग 20 मिनट तक विस्तार से चर्चा की गई। सभी समस्याओं को लेकर संबन्धित अधिकारी को बुलाकर मण्डल रेल प्रबंधक द्वारा विस्तार से चर्चा की गई। उक्त सभी समस्याओं का जल्दी ही समाधान करवाने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष अशोक वासदेव, डीआरयूसीसी एवं जेडआरयूसीसी मेम्बर भरत भूषण शर्मा सहित अन्य कई लोग उपस्थित रहे।

सार-समाचार

श्रीमाधोपुर आगार को मिली पांच नई बसें

श्रीमाधोपुर, (निसं)। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के आगार श्रीमाधोपुर को रोडवेज बस डिपो को नई सौगात मिली है। यूडीएच मंत्री तथा क्षेत्रीय विधायक झाबर सिंह खर्रा ने यात्रियों की समस्या को ध्यान में रखते हुए रोडवेज बस डिपो को पांच नई बसें दिलवाने की सौगात दी है। श्रीमाधोपुर मुख्य आगार प्रबंधक दीपक कुमावत ने बताया कि मंत्री खर्रा के समक्ष बसों की कमी को लेकर समस्या से अवगत करवाया गया था। जिस पर उन्होंने श्रीमाधोपुर डिपो को पांच नई बसें दिलवाई है। बताया गया है की नई बसों का संचालन श्रीमाधोपुर-जयपुर-झुंझुनू सडक मार्ग पर होगा। यूडीएच मंत्री पुत्र दुर्गा सिंह खर्रा ने नई बसों का मंगलवार को फीता काटकर तथा एक बस को हरी झंडी दिखाकर जयपुर के लिए रवाना किया। रोडवेज बस डिपो कार्मिकों की ओर से दुर्गा सिंह खर्रा का साफा माला पहनाकर स्वागत सत्कार किया गया वहीं चालक व परिचालक को साफा माला पहनाकर हरी झंडी दिखाकर बस को रवाना किया। इस दौरान काफी संख्या में प्रबुद्धजन एवं बस डिपो के कार्मिक मौजूद रहे।

बैठक में 49 प्रस्ताव पारित हुए

राजगढ, (निसं)। कस्बे के राजकीय महाविद्यालय में विकास समिति की बैठक प्राचार्य प्रोफेसर के एल मीणा की अध्यक्षता एवं क्षेत्रीय विधायक मांगीलाल मीणा की मौजूदगी में आयोजित हुई। बैठक में वाकिंग ट्रेक सहित 49 प्रस्ताव पारित किए गए। विधायक मीणा ने महाविद्यालय में बडे वॉटर टैंक का प्रस्ताव बनाकर भिजवाने के निर्देश दिए। सांसद प्रतिनिधि राहुल दीक्षित,पूर्व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी आरडी मीना, शिक्षाविद मदन लाल शर्मा, लल्लू राम मीणा, सुखराम मीणा, गौरव कसेरा एवं देवी सहाय सहित अन्य की मौजूदगी में विकास के महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। सदस्य सचिव पीएम मीणा ने प्रमुख प्रस्ताव सदन के समक्ष रखे जिनमें अधिकांश सदस्यों ने सहमति प्रदान की। बैठक मैं एजेंसी से कार्मिक लगाने, वाकिंग ट्रेक, पानी का ओवरहेड टैंक एवं संविधान पार्क सहित प्रमुख मार्ग में टाइल लगाने, वाटर कूलर सहित 49 प्रस्ताव पारित किए गए। बैठक के बाद समिति सदस्यों ने परिसर में वृक्षारोपण किया। बैठक में प्रोफेसर डॉक्टर देशराज वर्मा, अशोक मीणा सुश्री आयुषी गुप्ता ने विचार व्यक्त किया।संचालन अशोक मीणा ने किया एवं देशराज वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

विधायक ने सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

टोंक, (निसं)। निवाई उपखण्ड के ग्राम पंचायत सिरोही में मंगलवार को विधायक रामसहाय वर्मा की उपस्थिति में उपखण्ड स्तरीय जनसुनवाई की गई। जनसुनवाई में सिरोही, बडागांव, ललवाडी, श्रीरामपुरा, मेदारकला, भरथला, बहड, जामडोली, जीवली, गोपालपुरा व अरनिया रामनगर धतूरी सिरोही के ग्रामीणों ने विधायक को पीने के पानी की समस्या, रात्रि में बिजली कटौती सिरोही से बडागांव जाने वाली सडक मार्ग पर बारिश के दिनों में पानी भरे रहने की समस्या व गांव में हो रहे सरकारी जमीन पर अतिक्रमण एवं शिक्षा विभाग आदि मूलभूत समस्याओं के बारे में अवगत कराया अपनी समस्याएं बताई। विधायक ने उपस्थित उपखण्ड स्तरीय अधिकारियों को जनसुनवाई में आए परीवादों का निस्तारण समयबद्ध तरीके से करने के निर्देश दिए। जनसुनवाई के दौरान ग्रामीणों ने विधायक व प्रधान रामअवतार लांगडी को साफा व माला पहनकर स्वागत किया।

जैम जागरूकता सत्र आयोजित

दौसा, (निसं)। वित्त विभाग के निर्देशानुसार जिला स्तर पर जैम (गर्वनमेंट ई-मार्केट प्लेस) जागरूकता सत्र का आयोजन मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष में किया गया। जागरूकता सत्र में जिला कोषाधिकारी जगदीश प्रसाद मीणा ने कहा कि जैम विभिन्न सरकारी विभागों और संगठनों द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं की खरीद की सुविधा के लिये वर्ष 2016 में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक ऑनलाइन मंच है। उन्होंने कहा कि जैम पोर्टल सभी सरकारी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, स्वायत्त निकायों और अन्य संगठनों के लिये खुला है। जिला कोषाधिकारी ने कहा कि गर्वनमेंट ई-मार्केट प्लेस भ्रष्टाचार और मानवीय त्रुटि की गुंजाइश को कम करके प्रक्रियाओं को मानकीकृत एवं स्वचालित कर खरीद प्रक्रियाओं की पारदर्शिता तथा दक्षता में सुधार करता है। जैम सत्र में प्रशिक्षण जैम व्यवसायी सुविधादाता विक्रांत त्रिपाठी द्वारा दिया गया। प्रशिक्षणदाता ने सभी डीडीओ एवं उनके लेखाकर्मी प्रतिनिधियों को जैम की प्रक्रियाओं, उपयोग, लाभों और नवीनतम सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। जैम जागरूकता सत्र में आहरण एवं वितरण अधिकारी, प्रतिनिधि (लेखाकर्मी) उपस्थित रहे।

भाजपाई मनायेंगे काला दिवस

टोंक, (निसं)। भारतीय जनता पार्टी जिलाध्यक्ष अजित सिंह मेहता के नेतृत्व में विधानसभा स्तर पर आपातकाल को लेकर काला दिवस मनाया जाएगा। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विधानसभा स्तर पर संगोष्टी आयोजित की जायेगी, जिसमे पार्टी के वरिष्ठ नेता कार्यकर्ताओ को सम्बोधित कर देश के लोकतंत्र पर हुए इस हमले पर जागरूकता प्रदान करेंगे। इस काले दिवस के कार्यक्रमों को लेकर भारतीय जनता पार्टी जिलाध्यक्ष ने विधानसभा संयोजकों की नियुक्ति किये, जिसमें टोंक विधानसभा के लिए रमेश गढवाल, उनियारा विधानसभा के लिए नमोनारायण गौतम, टोडारायसिंह विधानसभा के लिए संत कुमार जैन, निवाई विधानसभा के लिए अंकुर गुप्ता और मालपुरा मंडल के लिए त्रिलोकचंद जैन प्रभारी होंगे।

पेड़ों की सुरक्षा हम सबकी जिम्मेदारी : बालकिशन

सांभर में हरियाली को बढ़ावा देने के लिये पौधे वितरित किये।

सांभरझील, (निसं)। क्षेत्र में अधिक से अधिक पौधारोपण कर हरियाली को बढावा देने के उद्देश्य से सेवा भारती की तरफ से राजकीय उप जिला अस्पताल में स्थानीय जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में पौधों का वितरण किया गया।

इस मौके पर अध्यक्ष बाल किशन जांगिड ने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हम सबको मिलकर हरियाली को बढावा देना चाहिए, पेड़ों की सुरक्षा हमारा नैतिक धर्म है। भाजपा मंडल अध्यक्ष जितेंद्र डांगरा ने कहा कि हमें संकल्प लेना होगा कि क्षेत्र को संपूर्ण हरा भरा बनाने के लिए सभी समुक्त के साथ मिलकर इस पुनीत कार्य में आगे आए। इस मौके पर वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर रेनू अठावाल, पूर्व चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉक्टर महेश वर्मा, रामवतार मालाकार, पार्षद भारत भूषण सैनी, पार्षद प्रेमचंद माली, समाजसेवी निरंजन लाल सूत्रकर, सेवा भारती के विजय प्रजापति राम सिंह बन्ना, वकील सुनील शर्मा सहित अनेक ने पौधारोपण कार्यक्रम में भाग लिया।

आप जानते हैं... मैं उस पल को महसूस कर रहा था। जब मैं पिच पर गया क्योंकि उस पिच ने हमें ये दिया। हमने उस विशेष पिच पर खेला और हमने गेम जीता, वह विशेष मैदान भी। मैं अपने डीवन में उस मैदान और उस पिच को हमेशा याद रखूंगा। - **रोहित शर्मा**

भारतीय कप्तान, टी-20 वर्ल्ड कप जीतने की खुशी में भावुक होने पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

मनु भाकर

हरियाणा की रहने वाली युवा निशानेबाज मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक गेम्स में क्वालीफाई करने में सफलता प्राप्त की है। युवा अवस्था में ही मनु भाकर रैंकिंग के माध्यम से भारत की शूटिंग स्टार बन गई। मनु भाकर की, हरियाणा के झज्जर में जन्मीं मनु भाकर ने स्कूल के दिनों में टेनिस, स्केटिंग और मुक्केबाजी मुकाबलों में हिस्सा लिया। इसके अलावा उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाली थान टा नामक एक मार्शल आर्ट में भी भाग लिया। भाकर पिछले 7 साल से शूटिंग कर रही हैं। वह ओलिंपिक 2020 का हिस्सा रह चुकी हैं।

क्या आप जानते हैं ?... टेस्ट क्रिकेट के इतिहास का पहला टेस्ट इंग्लैंड व ऑस्ट्रेयिा के मध्य 1877 में मेलोबर्न में खेला गया। इसे ऑस्ट्रेलिया ने 45 रन से जीता।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो फूट-फूटकर रोने लगे

नई दिल्ली, 2 जुलाई। पुर्तगाल के कप्तान क्रिस्टियानो रविवार को जर्मनी में यूरो कप 2024 राउंड ऑफ 16 मैच के पुर्तगाल और स्लोवेनिया मैच में पेनल्टी से गोल दागने में चूक गए, जिसके

बाद वह रोहित हुए दिखाई दिए। रोनाल्डो अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पाए और रोने लगे। उनकी मां, मारिया को भी स्टैंड में रोते हुए देखागया था क्योंकि वह असहाय रूप से अपने सुपरस्टार बेटे की कोई मदद करने में असमर्थ थीं। हालांकि, इस दौरान रोनाल्डो की टीम ने उन्हें सपोर्ट किया। बता दें कि, रोनाल्डो अगर ये पेनल्टी गोल करने में कामयाब हो जाते तो पुर्तगाल मैच जीतने के लिए एक मजबूत स्थिति में आ जाती। उन्होंने खेल के आखिरी मिनटों में बढ़त दिलाने की कोशिश की जिसमें वह असफल रहे। दोनों टीमें एक्स्ट्रा टाइम में भी गोल करने में असफल रही थीं जिसके बाद नतीजा निकालने के लिए मैच पेनल्टी शूट आउट में गया। यहां पर रोनाल्डो का आत्मविश्वास झलका क्योंकि एक बार पेनल्टी मिस करने के बाद वह पेनल्टी शूट आउट के दौरान पुर्तगाल की तरफ से पेनल्टी लेने वाले पहले खिलाड़ी के रूप में आए और इस बार उन्होंने बॉल को गोल में डाल दिया। पुर्तगाल ने 3-0 से पेनल्टी शूट आउट अपने नाम कर ली। इसी के साथ उन्होंने क्वार्टर फाइनल के लिए भी पुर्तगाल ने 3-0 से पेनल्टी शूट आउट अपने नाम कर ली। इसी के साथ उन्होंने क्वार्टर फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया। अब 6 जुलाई को क्वार्टर फाइनल में पुर्तगाल का सामना फ्रांस से होने वाला है।

टीम इंडिया टी-20 सीरीज के लिए जिम्बाब्वे रवाना

नई दिल्ली, 2 जुलाई। जिम्बाब्वे के खिलाफ पांच मैचों की टी-20 सीरीज के लिए टीम इंडिया मंगलवार की सुबह मुंबई से रवाना हुई। भारत को जिम्बाब्वे दौरे पर पांच मैचों की टी-20 सीरीज खेलनी है। सीरीज का पहला मुकाबला 6 जुलाई को हरारे में खेला जाएगा। टी-20 वर्ल्ड कप के बीच जिम्बाब्वे सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान किया था। टीम का कप्तान शुभमन गिल को बनाया गया है। टी-20 वर्ल्ड कप खेलने गई टीम के कुछ खिलाडी भी इस टीम में शामिल हैं। हालांकि, वह इस वक्त बारबाडोस में तूफान की वजह से फंसे हैं, लेकिन बाकी जो खिलाडी भारत में ही थे वह हेड कोच वीवीएस लक्ष्मण (सिर्फ इस टूर के लिए) के साथ जिम्बाब्वे के लिए रवाना हो गए। अपने ऑफिशियल ट्विटर अकाउंट पर टीम की रवाना होने की कुछ फोटोज भी शेयर की हैं। बारबाडोस में फंसे खिलाड़ियों में यशस्वी जायसवाल, शिवम दुबे और संजू सैमसन शामिल हैं। ये खिलाडी भारत आने के बाद जिम्बाब्वे जाएंगे ।

राजस्थान की टीम कराटे प्रतियोगिता में देश में तीसरे स्थान पर

उदयपुर, 2 जुलाई। राजस्थान के उदयपुर में वीएसकेएफ एकेडमी की ओर से आयोजित हुई दूसरी महाराणा प्रताप नेशनल कराटे चैंपियनशिप में राजस्थान की टीम ने 17 स्वर्ण सहित 33 पदक प्राप्त कर देश में तीसरे स्थान पर रही। राजस्थान के निदेशक संजू सिंह ने बताया कि राजस्थान के खिलाड़ियों ने 17 स्वर्ण पदक के साथ 33 पदक अर्जित किये। पदक विजेताओं में सीनीयर वर्ग में .राजकुमार सेन ने कुमिते में स्वर्ण, कमलेश सेन ने कुमिते में रजत,क्रेडिट वर्ग आदित्य सिंह ने कुमिते में स्वर्ण,दक्ष चांडालिया ने कुमिते में रजत, अक्षय लोगनथन ने कुमिते में रजत पदक प्राप्त किया। इसी प्रकार सब जूनियर वर्ग में समिष्टा गहलोत ने कुमिते में स्वर्ण, काता में स्वर्ण, हिया चंडालिया ने कुमिते में स्वर्ण, संभवी लोगनथन ने कुमिते में स्वर्ण, हितांशी धरावत ने स्वर्ण, दिवित ने कांस्य, सोहित ने स्वर्ण, अरांश असावा ने स्वर्ण, मितांश दांगी ने स्वर्ण, परमदेव एस. चुंडावत एवं तुषांक ने रजत, अक्षित सोमानी ने रजत व काता में कांस्य, परी चतुर्वेदी ने सोना, देवांश टाटावत ने रजत, प्रिंस साहू ने कूमिते व काता में, कशिश टाटावत ने कुमिते स्वर्ण व काता में कांस्य, मनन ने कुमिते मे स्वर्ण व काता में कांस्य पदक प्राप्त किया।

मरे ने विंबलडन में एकल स्पर्धा से नाम लिया वापस

लंदन, 2 जुलाई। तीन बार के ठौंड स्लैम चैंपियन और ब्रिटेन के दिग्गज टेनिस खिलाडी एंडी मरे ने मंगलवार को विंबलडन चैंपियनशिप में पुरुष एकल स्पर्धा से अपना नाम वापस ले लिया है। मरे आज यहां विंबलडन में पुरुष एकल स्पर्धा से अपने नाम वापस लेने की पुष्टि की। ऑल इंग्लैंड क्लब में चेक खिलाडी टॉमस मचैक के खिलाफ खेलने के लिए बेल्जियम के डेविड गोफिन मरे की जगह लेंगे। मरे की टीम यहां जारी एक बयान में कहा, दुर्भाग्य से, एक सप्ताह पहले अपने ऑपरेशन के बाद से अपनी रिकवरी पर अविश्वसनीय रूप से कडी मेहनत करने के बावजूद एंडी ने इस वर्ष एकल नहीं खेलने का बहुत कठिन निर्णय लिया है।

तूफान के कारण बारबाडोस में फंसी टीम इंडिया के वतन वापसी की राह खुली

चार्टर्ड फ्लाइट से आज लौटने के आसार

बारबाडोस, 2 जुलाई टीम इंडिया तूफान बेरिल की वजह से बारबाडोस में फंसी हुई है। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 में रोमांचक जीत के अगले दिन टीम इंडिया को वापसी करनी थी, लेकिन तूफान के कारण टीम इंडिया भारत के लिए रवाना नहीं हो सकी। रिपोर्ट के मुताबिक, टीम इंडिया को चार्टर्ड फ्लाइट से वापस लाएगी।

सूत्रों के अनुसार टीम के ब्रिजटाउन से शाम 6 बजे स्थानीय समयानुसार (3 जुलाई, 3:30 भारतीय समयानुसार) रवाना होने और बुधवार को शाम 7.45 बजे (भारतीय समयानुसार) दिल्ली पहुंचने की उम्मीद है। यहां पहुंचने के बाद खिलाड़ियों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सम्मानित किया जाएगा, लेकिन उस कार्यक्रम की अभी तक कोई

पुष्टि नहीं हुई है। हालांकि, बीसीसीआई की ओर से अब तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है।

बारबाडोस की प्रधानमंत्री मिया मोटली ने बताया कि मैं वास्तव में एयरपोर्ट के स्टाफ के संपर्क में हूं और वे अब अपनी अंतिम जांच कर रहे हैं। और हम जल्द सामान्य फ्लाइट्स फिर से शुरू करना चाहते हैं।

शतरंज के आखिरी चार दौर में प्रज्ञानानंदा और गुकेश लगायेंगे शीर्ष पर पहुंचने का जोर

नई दिल्ली, 2 जुलाई। ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा और डी गुकेश सुपरबेट क्लासिक शतरंज टूर्नामेंट में एक दिन के विश्राम के बाद जब छठे दौर के अपने-अपने मुकाबल में उतरेंगे तो तालिका में शीर्ष पर पहुंचने के लिए उन्हें आखिरी के चार दौर में अपने खेल के स्तर को और ऊंचा उठाना होगा। नौ दौर के टूर्नामेंट में पांच दौर के बाद दोनों भारतीय तीन-तीन अंकों के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं। अमेरिका के फैबियानो कारूआना उनसे आधा अंक आगे तालिका में शीर्ष पर है। फ्रांस के अलिरेजा फिरोजा और मैक्सिम वाचिएर-लाठोव, रूस के इयान नेपोम्नियाचची और अमेरिक के वेस्ले सो 2.5 अंकों के साथ चौथे स्थान पर हैं। यह चारों खिलाड़ी नीदरलैंड के अनीश गिरी और उजबेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसात्तोरोव से आधा अंक आगे हैं। स्थानीय खिलाड़ी डीक बोगदान-डेनियल 1.5 अंकों के साथ तालिका में सबसे नीचे हैं। प्रज्ञानानंदा टूर्नामेंट में अब तक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में नाकाम रहे है और बेहतर स्थिति में होने के बावजूद उन्होंने कुछ मुकाबलों को ड्रॉ खेला है। छठे दौर में उनके सामने रोमानिया के बोगदान-डेनियल की चुनौती होगी। प्रज्ञानानंदा को इस मुकाबले में जीत का दावेदार माना जा रहा है क्योंकि वह सफेद मोहरों के साथ खेलेंगे। विश्व चैंपियनशिप के चैलेंजर गुकेश के सामने छठे दौर में वाचिएर-लाठोव की चुनौती होगी। इस दौर में गुकेश काले मोहरों से खेलेंगे।

सुमित नागल पहले दौर से हुए बाहर, सर्बिया के खिलाड़ी ने दी मात

नई दिल्ली, 2 जुलाई। टेनिस के सबसे पुराने टूर्नामेंट के 137वें एडिशन का आगाज हो चुका है। इस बार भारत की तरफ से पुरुषों के सिंगल इवेंट में स्टार खिलाड़ी सुमित नागल को भी खेलने का मौका मिला। मेन ड्रॉ में जगह बनाने वाले नागल को पहले ही राउंड में हार का सामना करना पड़ा, जिसमें उन्हें सर्बिया के खिलाड़ी मिओमिर केकेमनोविक ने मात दी। 48 मिनट तक चले इस मुकाबले में कुल 4 सेट का खेल हुआ जिसमें नागल को तीन सेटों में हार का सामना करना पड़ा। सुमित नागल जिन्होंने पिछले महीने ही पेरिस ओलंपिक 2024 के लिए क्वालीफाई किया था उनके खेल में इस मैच में बिलकुल भी निरंतरता देखने को नहीं मिली।

इस मुकाबले को लेकर बात की जाए तो सुमित नागल को सर्बिया के खिलाड़ी मिओमिर केकेमनोविक से पहले सेट में

2-6 से हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद नागल ने दूसरे सेट में शानदार तरीके से वापसी करने के साथ उसे 6-3 से अपने नाम किया और मुकाबले को 1-1 की बराबरी पर ला दिया। तीसरे सेट में सुमित नागल ने बेहतर खेल तो दिखाया लेकिन उन्हें 3-6 से मात मिली तो अंतिम सेट भी काफी रोमांचक रहा हालांकि नागल इसे 4-6 से गंवा बैठे और उन्हें विम्बलडन 2023 में पुरुषों के सिंगल इवेंट के पहले राउंड से ही बाहर होना पड़ा।

चीन के बैडमिंटन खिलाड़ी की कोर्ट में मौत

जकार्ता, 2 जुलाई। चीन के किशोर बैडमिंटन खिलाडी झांग झिजी की खेल के दौरान अचानक हृदयाघात से मौत हो गई। बीबीसी की आज जारी रिपोर्ट के अनुसार झांग झिजी की बैडमिंटन एशिया जूनियर चैंपियनशिप में खेल के दौरान गिर गये, बाद में खिलाडी को अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सको ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। रिपोर्ट के अनुसार इंडोनेशिया के बैडमिंटन एसोसिएशन अखिल इंडोनेशिया बैडमिंटन संघ ने कहा कि खिलाडी को खेलते समय दिल का दौरा पडा। देरी उपचार को लेकर अधिकारियों ने तीखी आलोचना हो रही है। पीबीएसआई के प्रवक्ता ने बाद में संवाददाताओं से कहा कि मेडिकल टीमों को खेल के नियम के अनुसार कोर्ट में प्रवेश करने से पहले रेफरी की अनुमति की आवश्यकता होती है इसलिए मेडिकल टीम तुरन्त कोर्ट में नहीं पहुँच सकी। उन्होंने कहा कि पीबीएसआई अब महासंघ से इस नियम का पुनर्मूल्यांकन करेगा ताकि इस तरह की परिस्थिति तुरंत कार्रवाई जा सके।

वॉन और फ्लिंटॉफ के बेटे अंडर-19 में इंग्लैंड के लिए एक साथ कर सकते हैं डेब्यू

नई दिल्ली, 2 जुलाई। इंग्लैंड के माइकल वॉन और एंड्रयू फ्लिंटॉफ की जोड़ी के अपने टेस्ट करियर को समाप्त करने के पंद्रह साल बाद उनके बेटों के श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों से आयु वर्ग स्तर पर पारंपरिक प्रारूप में अपनी यात्रा शुरू करने की उम्मीद है। पूर्व एशेज विजेता इंग्लैंड के कप्तान वॉन के बेटे आर्ची वॉन को मंगलवार को 14 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया जिसमें 16 वर्षीय रॉकी फ्लिंटॉफ भी शामिल हैं जिन्होंने पहले ही युवा एकदिवसीय मुकाबलों में अंतरराष्ट्रीय पदार्पण कर लिया है। टीम में पारिवारिक संबंध साफ नजर आते हैं।

इंग्लैंड के मौजूदा लेग स्पिनर रेहान के भाई फरहान अहमद और इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज जो डेनली के 17 वर्षीय भतीजे जेडन डेनली को भी टीम में जगह मिली है। शीर्ष क्रम के बल्लेबाज और ऑफ स्पिनर 18 वर्षीय आर्ची ने इस सत्र की शुरुआत में अपने पहले पेशेवर अनुबंध में समरसेट का प्रतिनिधित्व किया। वह 2020 से टॉनटन में

काउंटी के अकादमी ढांचे का हिस्सा रहे हैं। आर्ची को हालांकि अब तक समरसेट की शीर्ष टीम से खेलने का मौका नहीं मिला है।

पिछले हफ्ते आयु वर्ग स्तर पर उन्होंने इंग्लैंड अंडर-19 एकदिवसय टीम के खिलाफ अभ्यास मैच में यंग लायंस आमंत्रण एकादश के लिए 83 गेंदों में 85 रन बनाकर सबका ध्यान अपनी ओर खींचा। दाएं हाथ के ऑलराउंडर रॉकी इंग्लैंड की टीम के लिए 106 रन बनाकर शीर्ष स्कोरर रहे।

वनडे वर्ल्ड कप 2023 में हार के बाद पद छोड़ना चाहते थे राहुल द्रविड़

नई दिल्ली, 2 जुलाई। भारत ने साउथ अफ्रीका को हराकर टी20 वर्ल्ड कप 2024 का खिताब 29 जून को अपने नाम र दिया है। लेकिन अभी तक इसकी खुशी टीम इंडिया के साथ-साथ पूरे देशवासियों के चेहरे पर नजर आ रही है। टीम इंडिया के हेड कोच राहुल द्रविड़ का कार्यकाल भी इस टूर्नामेंट के साथ खत्म हो गया है। अब वह भारतीय टीम के हेड कोच नहीं रहे हैं। बीसीसीआई ने राहुल द्रविड़ का एक वीडियो शेयर किया है। जिसमें उन्होंने खुलासा करते हुए कहा कि, पिछले साल ऑस्ट्रेलिया से वनडे वर्ल्ड कप 2023 हारने के बाद वो अपना पद छोड़ना चाहते थे, लेकिन रोहित शर्मा की एक कॉल ने सबकुछ बदल दिया। बीसीसीआई टीवी पर राहुल द्रविड़ ने रोहित शर्मा को लेकर कहा कि, थैंकू यू रो, मुझे नवंबर में वो कॉल करने के लिए और मुझे रुकने के लिए कहने के लिए। मुझे लगता है कि टीम इंडिया में हर एक शख्स के साथ काम करना गर्व की बात है, मैं हर एक शख्स के लिए शुक्रगुजार हूं लेकिन रो तुमको शुक्रिया अपना इतना समय देने के लिए एक कप्तान के तौर पर। कई बार हमने बात की, हमनें कई चीजों पर चर्चा की, कई बातों पर हम सहमत थे, कई बातों पर हम एक- दूसरे से सहमत नहीं थे, लेकिन इन सबके बाद तुमको बहुत-बहुत शुक्रिया।

भारतीय सेना से रोवर बलराज पंवार ने रचा इतिहास

चुंगजू, 2 जुलाई । बलराज पंवार ने पेरिस ओलंपिक के लिए नौकायन में भारत का पहला कोटा हासिल कर लिया है। 25 वर्षीय भारतीय सेना के नौकायन खिलाड़ी ने दक्षिण कोरिया के चुंगजू में आयोजित 2024 विश्व एशियाई और महासागरीय ओलंपिक और पैरालंपिक क्वालीफिकेशन रेगाटा में पुरुषों की एकल स्कल स्पर्धा में तीसरा स्थान हासिल करके यह उपलब्धि हासिल की। पंवार, जो पिछले वर्ष चीन में एशियाई खेलों में अपने पहले प्रयास में कांस्य पदक से चूक गए थे, ने 2000 मीटर की दौड़ 7 मिनट और 1.27 सेकंड के सराहनीय समय में पूरी करके अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जिससे उन्होंने ओलंपिक कोटा हासिल कर लिया है।

हरियाणा के कैमला गांव के रहने वाले बलराज पंवार हमेशा से ही खेलों के प्रति आकर्षित रहे हैं, लेकिन रोइंग में उनका सफर अप्रत्याशित रूप से शुरू हुआ। गुरुवार को भारतीय ओलंपिक संघ और रोइंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के साथ मिलकर भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा आयोजित एक मीडिया इंटरेक्शन में उन्होंने कहा, "मैं 2018 में भारतीय सेना में शामिल हुआ और वहीं रोइंग से मेरा परिचय हुआ।"

सैमसन, जायसवाल और शिवम दुबे की जगह अन्य 3 खिलाड़ियों को मिला मौका

नई दिल्ली, 2 जुलाई। भारतीय टीम के जिम्बाब्वे दौरे के लिए पुरुष चयन समिति ने पहले दो टी20आई के लिए संजू सैमसन, शिवम दुबे और यशस्वी जायसवाल को टीम से बाहर कर दिया है। अब इन तीन खिलाड़ियों की जगह साई सुदर्शन, जितेश शर्मा और हर्षित राणा को टीम में पहले दो टी20 मैच के लिए शामिल किया गया है।

दरअसल, मौजूदा समय में सैमसन, जायसवाल और दुबे वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम के साथ बारबाडोस में ही हैं। मौसम खराब होने के कारण ये खिलाड़ी स्वदेश नहीं लौट पाए, जिस कारण इन तीनों की जगह बोर्ड ने साई सुदर्शन, जितेश शर्मा और हर्षित राणा को मौका दिया है। 22 वर्षीय बल्लेबाज सुदर्शन भारत के लिए तीन वनडे खेल चुके हैं, जिसमें 63.50 की औसत से 127 रन बनाए। उन्होंने दिसंबर 2023 में इंटरनेशनल डेब्यू किया था। वहीं 30 वर्षीय जितेश शर्मा ने 9 टी20 इंटरनेशनल मैचों में 100 रन बनाए हैं। उन्होंने पिछले साल अक्टूबर में डेब्यू किया था। वहीं, 22 वर्षीय हर्षित राणा पहली बार भारतीय टीम में चुने गए हैं।

लगातार दूसरी बार ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाले भारतीय नाविक बने विष्णु सरवनन

नई दिल्ली, 2 जुलाई। भारत के प्रतिभाशाली नाविक विष्णु सरवनन ने लगातार दूसरी बार ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने के साथ ही इतिहास रच दिया है। विश्व चैंपियनशिप में पेरिस खेलों के लिए कट बनाने के बाद उन्होंने यह उपलब्धि हासिल की। विश्व चैंपियनशिपस्थित आर्मी यॉटिंग नोड के 24 वर्षीय खिलाड़ी ने ऑस्ट्रेलिया में -7 विश्व चैंपियनशिप में 152 प्रतिभागियों में से 26वां स्थान हासिल करके आगामी पेरिस खेलों के लिए क्वालीफिकेशन हासिल किया। विष्णु ने प्रतियोगिता 174 के स्कोर के साथ समाप्त की और मानक नियम के अनुसार, एक दौड़ में उनका सबसे कम स्कोर 49 घटा दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप उनका शुद्ध स्कोर 125 रहा। उनकी कई अन्य उपलब्धियों में से विष्णु 2019 अंडर-21 विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता हैं।

24 फरवरी, 1999 को तमिलनाडु के वेल्लोर शहर में जन्मे, विष्णु सरवनन कम उम्र में ही नौकायन से रूबरू हो गए थे। उनके सेवानिवृत्त सैनिक पिता रामचंद्रन सरवनन

ने उन्हें इस खेल से परिचित कराया था, जो एक पूर्व नाविक थे और इस खेल को पेशेवर रूप से आगे बढ़ाने में असमर्थ थे। हालांकि, उन्होंने अपने दोनों बच्चों विष्णु और राम्या में कुछ हुनर देखा और उनको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। विष्णु ने नौ साल की उम्र में आर्मी यॉटिंग नोड, मुंबई में अपने पिता के मार्गदर्शन में नौकायन सीखा। जब विष्णु 17 वर्ष के थे, तब उन्हें 2015 में मद्रास इंजीनियर्स ग्रुप (एमईजी) ब्वॉयज स्पोर्ट्स कंपनी द्वारा एक कैडेट के रूप में चुना गया था।

ओलंपिक खेलों के इतिहास में घुड़सवारी में पहली बार उतरेगा भारत

नई दिल्ली, 2 जुलाई। भारत ने पेरिस ओलंपिक के लिए घुड़सवारी में अपना पहला कोटा हासिल कर लिया है। भारत को यह कोटा अनुश अग्रवाल ने ड्रेसेज स्पर्धा में दिलाया है। अनुश ने एफईआई के चार स्पर्धाओं ब्रोकला, पोलैंड (73.485), क्रोनेनबर्ग, नीदरलैंड्स (74.4), फ्रैंकफर्ट जर्मनी (72.9) और मेकलेन, बेल्जियम (74.2) में अपने प्रदर्शन के आधार पर यह कोटा हासिल किया। घुड़सवारी में कोटा देश का होता है और पेरिस ओलंपिक में भारतीय खिलाड़ी का चयन ईएफआई करेगा। 24 साल के अनुश अग्रवाल एशियाई खेलों के पदक विजेता घुड़सवार हैं। उन्होंने पिछले साल हांगझोउ एशियाई खेलों में ऐतिहासिक व्यक्तिगत ड्रेसेज में कांस्य पदक जीते थे।

23 नवंबर 1999 को कोलकाता, भारत में जन्मे अनुश अग्रवाल अब घुड़सवारी खेलों की दुनिया में एक उल्लेखनीय व्यक्ति बन गए हैं। एशियाई खेलों में उनकी हालिया जीत ने इस युवा और प्रतिभाशाली सवार को सुर्खियों में ला दिया है,

जिससे वह अंतरराष्ट्रीय घुड़सवारी परिदृश्य में एक उभरता हुआ सितारा बन गया है। अनुष अग्रवाल का एक साधारण वीकेंड राइडर से लेकर एक अंतरराष्ट्रीय घुड़सवारी स्टार बनने का सफ़र किसी प्रेरणा से कम नहीं है। उनके माता-पिता ने उन्हें कोलकाता के टॉलीगंज क्लब में 3 साल की छोटी सी उम्र में घुड़सवारी से परिचित कराया था। उन्हें शायद ही पता था कि यह परिचय उनके बेटे में ऐसा जुनून जगाएगा जो उन्हें विश्व मंच पर ले जाएगा।

8 साल की उम्र में, उन्होंने औपचारिक घुड़सवारी की शिक्षा लेनी शुरू की और जल्दी ही स्थानीय बच्चों के कार्यक्रमों में भाग लेने लगे। उनके सपने स्थानीय प्रतियोगिताओं से आगे बढ़ गए; वह एशियाई खेलों और ओलंपिक जैसे प्रतिष्ठित खेल आयोजनों में भारत का प्रतिनिधित्व करना चाहते थे। इस सपने को पूरा करने के लिए, वह 11 साल की उम्र में नई दिल्ली चले गए, साथ ही उन्होंने ला मार्टिनियर फॉर बॉयज़ में अपनी शिक्षा का प्रबंधन भी किया। उनकी कड़ी मेहनत का फल उन्हें 2014 में प्रतिष्ठित दिल्ली हॉर्स शो में रजत और स्वर्ण पदक के रूप में मिला। 16 साल की उम्र में, उन्हें उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के लिए अरावली के श्री राम स्कूल में दाखिला मिल गया।

मास्टर्स कप की मेजबानी करेगा हॉकी इंडिया

नयी दिल्ली, 2 जुलाई। हॉकी इंडिया ने मंगलवार को पहली बार पुरुष और महिला वर्ग के 40 वर्ष से अधिक आयु वाले अनुभवी हॉकी खिलाड़ियों के आयोजित होने वाले मास्टर्स कप टूर्नामेंट की मेजबानी करने की घोषणा की। हॉकी इंडिया मास्टर्स कप अनुभवी हॉकी खिलाड़ियों के जुनून और कौशल के जश्न मनाने का जरिया है। इस टूर्नामेंट का उद्देश्य पूर्व खिलाड़ियों को एक साथ अपने पसंदीदा खेल से फिर से जोड़ा है। हॉकी इंडिया से संबद्ध सभी राज्य सदस्य इकाइयां इस ऐतिहासिक आयोजन में भाग लेने के लिए पात्र हैं और टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए सभी पात्र अनुभवी खिलाड़ियों अपनी संबंधित सदस्य इकाइयों से संपर्क करना होगा।

'बालकबुद्धि सवार हो जाये तो किसी के भी गले पड़ जाती है, किसी बात-व्यवहार का कोई ठिकाना नहीं रहता'

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान नाम लिये बिना राहुल गांधी के भाषण को ''बालकबुद्धि की बचकाना हरकत'' करार दिया है

- **मोदी ने कहा कि, कल सदन में जो कुछ भी देखा वो एक बालकबुद्धि का विलाप चल रहा था। बालकबुद्धि ने खुद को पीड़ित दिखा कर सहानुभूति बटोरने की खूब कोशिश की है।**
- **प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि, कांग्रेस का पूरा ईकोसिस्टम राहुल गांधी को बहलाने का प्रयास में जुटा है। उन्होंने कहा, राहुल गांधी जी आप फेल हुये हो आपके सौ में से 99 नहीं 543 में से 99 आये हैं।**

नयी दिल्ली, 2 जुलाई (वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के सोमवार को सदन में भाषण को 'बालकबुद्धि की बचकाना हरकत' करार दिया है और कहा है कि कांग्रेस ''झूठ को राजनीतिक हथियार' बना कर देश को अराजकता एवं गंभीर संकट की ओर धकेल रही है जिसे रोकने के लिए कठोर कार्रवाई की जरूरत है।

मोदी ने यहां सदन में राष्ट्रपति अभिभाषण पर 18 घंटे तक चली चर्चा का लंबा जवाब देते हुए यह बात कही। मोदी ने कहा कि, कल सदन में जो कुछ भी देखा वो एक बालकबुद्धि का विलाप चल रहा था। बालकबुद्धि ने खुद को पीड़ित दिखा कर सहानुभूति बटोरने की खूब कोशिश की है लेकिन अपने अपराध और अपने दोष के बारे में कोई बात नहीं की। प्रधानमंत्री ने एक छोटे बच्चे की कहानियां सुना कर कहा कि कांग्रेस का ईकोसिस्टम बालक का मन बहलाने का काम कर रहा है।

उन्होंने कटाक्षपूर्ण लहजे में कहा, बालक बुद्धि में ना तो बोलने का कोई ठिकाना, ना ही कोई व्यवहार का ठिकाना है। जब बालकबुद्धि पूरी तरह से सवार हो जाये तो किसी के भी गले पड़ जाती है। बालक बुद्धि सीमा पार कर जाये तो किसी को आंख भी मारती है। उन्होंने कहा कि उनकी सच्चाई देश समझ चुका है। देश कह रहा है कि इनसे ना हो पायेगा।

प्रधानमंत्री ने गोस्वामी तुलसीदास को उद्धत करते हुए कहा, झूठ ही लेना, झूठ ही देना, झूठ ही भोजन, झूठ चबैना। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने झूठ को राजनीतिक हथियार बना लिया है। कांग्रेस के मुंह में झूठ ऐसे लग गया है जैसे किसी आदमखोर जानवर के दांत में इन्सान का खून।

मोदी ने कहा कि ऐसे समय जब देश विकास के रास्ते पर है, देश के विकसित भारत के सपने को पूरा करने के लिए सबको एकजुट होकर समृद्धि का नया सफर शुरू करना है, उस समय यह हमारा दुर्भाग्य है कि देश में छह दशक तक राज करने वाली पार्टी अराजकता फैलाने में लगी है। उत्तर में दक्षिण के खिलाफ, पूर्व में पश्चिम के खिलाफ, भाषा, धर्म, जाति के आधार पर बांटने के बात कर रही है। एक जाति को दूसरी से लड़वाने के लिए नये नैरेटिव नयी अफवाहें फैलायी जा रहीं हैं। देश के एक हिस्से के लोगों को हीन बताने के कुत्सित प्रयास हो रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि चुनाव में जो वादे किये हैं और कांग्रेस शासित राज्यों में जिस प्रकार के फैसले किये जा रहे हैं, वह देश को आर्थिक अराजकता में घसीटने का काम किया जा रहा है। यदि चुनाव में इनके मन का परिणाम नहीं आता तो देश में आग लगाने की तैयारी थी। भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर उंगली उठाना, सीएए को लेकर अराजकता फैलाना, पूरे ईकोसिस्टम इसके लिए काम कर रहा है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने चुनाव में माताओं बहनों को झूठ बोला। ईवीएम को लेकर, संविधान को लेकर, आरक्षण को लेकर, राफेल को लेकर, एचएएल को लेकर एलआईसी को लेकर बैंकों को लेकर और तो और इनका हौसला इतना बढ़ गया कि कर्मचारियों को भड़काने का प्रयास किया और कल सदन को भी गुमराह करने की कोशिश की। किसानों को एमएसपी नहीं मिल रही है, यह झूठ बोला, संविधान की गरिमा से खिलवाड़ किया।

मोदी ने कहा कि अनेक बार जीत चुके अनुभवी नेता को संविधान एवं सदन की गरिमा से खिलवाड़ करना शोभा नहीं देता। उन्होंने कहा कि वे अराजकता और झूठ के सहारे देश को गंभीर संकट की ओर ले जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन हरकतों को बालकबुद्धि मान कर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया मेवाड़ दौरे पर

राजसमंद/जयपुर, 2 जुलाई। राजस्थान में भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने नाथद्वारा में कार्यकर्ताओं के साथ श्रीनाथजी के दर्शन कर प्रदेश की खुशहाली एवं उन्नित की कामना की। डॉ. पूनिया ने कुंभलगढ़ से विधायक सुरेंद्र सिंह राठौड़ की

- **डॉ. पूनिया नाथद्वारा भी गए और श्रीनाथ जी के दर्शन किए**
- **डॉ. पूनिया ने कुंभलगढ़ विधायक सुरेन्द्र सिंह राठौड़ की दिवंगत माता जी को श्रृद्धांजलि अर्पित की।**

माताजी पारस कँवर के निधन पर आमेट में परिजनों को ढांढस बंधाया तथा माताजी को श्रद्धांजलि दी। पाली के मारवाड़ जंक्शन से पूर्व विधायक खुशवीर सिंह की भाभीजी गजेंद्र कंवर के निधन पर जोजावर पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित कर परिवारजनों को ढाँढस बंधाया एवं दुख की घड़ी में ईश्वर से सम्बल प्रदान करने की कामना की।

दिल्ली बार काउन्सिल ने नए आपराधिक कानूनों को वापस लेने का अनुरोध किया

नयी दिल्ली, 2 जुलाई (वार्ता)। दिल्ली बार काउंसिल ने एक जुलाई से लागू तीन नए आपराधिक कानूनों को वापस लेने का अनुरोध मंगलवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से किया।

दिल्ली बार काउंसिल के उपाध्यक्ष संजीव नसियार ने कहा कि नए कानून

- **दिल्ली बार काउन्सिल के उपाध्यक्ष संजीव नसियार ने कहा कि, नए कानून लागू होने के समय पिछली सरकार का कार्यकाल समाप्त हो चुका था।**
- **बार काउन्सिल ने उदाहरण देते हुये कहा है कि, नये कानूनों में '' धारा 187(3) के तहत पुलिस हिरासत की अवधि को 15 दिनों से बढ़ाकर 60/90 दिन किया जाना एक प्रकार से अत्याचारी और दमनकारी है।''**

लागू होने के समय पूर्ववर्ती सरकार का कार्यकाल समाप्त हो चुका था।

नसियार ने देते हुए कहा, ''संवैधानिक औचित्य के रूप में इन कानूनों को नई निर्वाचित संस्थाओं की मंजूरी और अनुमोदन के बिना बदली हुई परिस्थितियों में लोगों पर नहीं थोपा जा सकता।इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये संशोधन संवैधानिक सिद्धांतों और उच्चतम न्यायालय के फैसले की पूरी तरह से अवहेलना करते हैं।''

उन्होंने कहा,'' धारा 187(3) के तहत पुलिस हिरासत की अवधि को 15 दिनों से बढ़ाकर 60/90 दिन करने को कम से कम कहने के लिए तो अत्याचारी और दमनकारी है।''

उन्होंने कहा कि नए कानूनों के तहत अदालत की अनुमति के बिना हथकड़ी लगाने की शक्ति जनता के बीच राज्य (सरकार) के आतंक का संकेत देती है। इसलिए इन कानूनों को खत्म कर देना चाहिए। नसियार ने कहा कि अदालत की बिना अनुमति हथकड़ी लगाने की शक्ति न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर के फैसले के खिलाफ है। शीर्ष अदालत ने एकांत कारावास को मानवाधिकारों के लिए अस्थिर माना था।

राहुल ने ओम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने आगे यह भी कहा कि उनकी टिप्पणियों को सदन की कार्यवाही के रिकॉर्ड से हटाना संसदीय लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है।

अपने पत्र में गांधी ने प्रक्रिया से टिप्पणी हटाने के नियम में दोहरे मापदंड प्रयोग करने की तरफ आसन का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर के भाषण का उल्लेख किया जिसमें अनेक आरोप लगाए गए थे उसमें से सिर्फ एक शब्द हटाया गया है।

ससम्मान अनुरोध है कि ''यह चुनिंदा निरस्तीकरण तर्क विरूद्ध है ''उन्होंने जोर देकर कहा कि संसदीय भाषणों के कार्य में पक्षपात तरीके अपनाना तर्क विरूद्ध है।

उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष ने अनुरोध किया कि वे सदन की कार्यवाही के रिकॉर्ड से हटाई गई टिप्पणियों को पुन: बहाल

करें। यह बात उन्होंने सांसदों के अभिव्यक्ति के अधिकारों को बरकरार रखने व निष्पक्षता की जरूरत पर जोर देते हुए पत्र में लिखी।

पिछले फरवरी 2023 में भी अध्यक्ष बिड़ला ने लोकसभा में राहुल गांधी के भाषण का एक बड़ा भाग इसी प्रकार कार्यवाही से काट दिया था।

एयरपोर्ट पर लैंडिंग के वक्त प्लेन के पहिये में लगी आग

- **लैंडिंग के वक्त प्लेन में 490 यात्री सवार थे, हालांकि प्लेन नियंत्रित तरीके से दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरने में सफल रहा।**

नई दिल्ली, 2 जुलाई। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सोमवार रात को म्यूनिख से आए लुफ्थांसा एयरलाइन के ए-380 विमान के एक पहिये में उतरते समय अचानक आग लग गई। सूत्रों ने बताया कि लैंडिंग के वक्त विमान में करीब 490 यात्री सवार थे। हालांकि विमान हवाई अड्डे पर नियंत्रित तरीके से उतरने में सफल रहा और सभी यात्री सुरक्षित रूप से बाहर आने में सफल रहे।

सूत्रों ने बताया कि उड़ान संख्या एल.एच-762 वाला विमान इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतर गया। सूत्रों के मुताबिक, चूंकि विमान की जांच की जानी थी और कलपुर्जे तुरंत उपलब्ध नहीं होने के कारण विमान की म्यूनिख की वापसी वाली उड़ान रद्द कर दी गई।

विमानन कंपनी के एक प्रवक्ता ने मंगलवार को बयान जारी कर कहा, उड़ान संख्या एल.एच-762 दिल्ली के एयरपोर्ट पर सुरक्षित तरीके से उतर गई। नियंत्रित तरीके से एयरपोर्ट पर उतरने के बाद जांच की आवश्यकता और स्पेयर पाट्‌र्स की अनुपलब्धता के कारण विमान को कुछ समय के लिए आगे की उड़ान के लिये ''नोट अवेलेबल'' की श्रेणी में रखा गया है।

सूत्रों ने बताया कि विमान के उतरते समय एक पहिये में आग की सूचना मिली थी। सूत्रों के मुताबिक, घटना के कारण वापसी की उड़ान संख्या एल.एच-763 रद्द कर दी गई, जबकि यात्रियों को बोर्डिंग पास जारी कर दिये गए थे।

कांस्टेबल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

याचिकाकर्ता सहित अन्य कॉन्स्टेबलों के खिलाफ राधेश्याम दर्जी की हिरासत में मौत का मामला दर्ज हुआ था। निचली अदालत से आजीवन कारावास की सजा मिलने के बाद सुप्रीम कोर्ट में उसकी अपील गई। सुप्रीम कोर्ट ने अप्रैल, 2016 को याचिकाकर्ता को बरी कर दिया। इससे पहले बिना बताए ड्यूटी पर अनुपस्थित रहने के आरोप में झालावाड़ एसपी ने अक्टूबर 2000 में याचिकाकर्ता कॉन्स्टेबल को बर्खास्त कर दिया और बाद में उप गृह सचिव ने भी याचिकाकर्ता की अपील खारिज कर दी। याचिका में कहा गया है कि याचिकाकर्ता को न तो कारण बताओ नोटिस दिया गया और न विभागीय चार्जशीट ही दी गई। वहीं ठीक ऐसे ही एक अन्य मामले में निचली अदालत से बरी हुए तेज सिंह को पूर्व में पुलिस सेवा में ही बहाल किया जा चुका है। याचिका में कोर्ट के इस फैसले का हवाला देते हुये ही कॉन्स्टेबल को वापस सेवा में लिये जाने की अपील की गई थी, जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाकर्ता को पुन: सेवा में लेने के आदेश देते हुए उसे समस्त परिलाभ देने के लिए कहा है।

'सेबी निवेशकों की रक्षा करने के बजाय धोखेबाजों को बचाने की ज्यादा कोशिश कर रही है'

अमेरिकी इन्वैस्टमैंट रिसर्च कंपनी हिंडनबर्ग ने कहा है कि, हमारी कंपनी ने अडानी ग्रुप पर खुलासे किये थे लेकिन सेबी ने उस पर एक्शन लेने की बजाय उल्टा हमें ही नोटिस भेज दिया है

नई दिल्ली, 2 जुलाई। सेबी ने अडानी मामले में अमेरिकी कंपनी हिंडनबर्ग को नोटिस भेजा था, जिसके जवाब में हिंडनबर्ग ने कहा है कि सेबी निवेशकों को धोखाधड़ी से बचाने की जगह धोखेबाजों को बचाने की ज्यादा कोशिश कर रही है। अमेरिकी इन्वेस्टमेंट रिसर्च कंपनी हिंडनबर्ग रिसर्च की वेबसाइट पर छपे एक लेख में दावा किया गया है कि कंपनी ने जनवरी 2023 में अडानी समूह को लेकर जो खुलासे किए थे, उनके जवाब में भारत में शेयर बाजार की नियामक संस्था सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने उसे ही एक नोटिस भेज दिया है. हिंडनबर्ग के मुताबिक, सेबी ने 27 जून 2024 को ईमेल के जरिए उसे 39;कारण-बताओ39; नोटिस भेजा, जिसमें नियामक ने हिंडनबर्ग पर भारतीय नियमों के उल्लंघन का आरोप लगाया है। क्या हैं सेबी के आरोप नोटिस के मुताबिक, सेबी का आरोप है कि हिंडेनबर्ग और उसके एकमात्र मालिक नेथन एंडरसन ने अडानी समूह के खिलाफ अपनी रिपोर्ट जारी कर जानबूझ कर समूह का नुकसान कराया और अपने एक क्लायंट मार्क किंग्डन और उनकी कंपनी का मुनाफा करवाया। आरोप यह भी है कि खुद हिंडनबर्ग ने भी इस मुनाफे में से 25 प्रतिशत हिस्सा लिया। सेबी की जांच के मुताबिक, हिंडनबर्ग ने अडानी पर अपनी रिपोर्ट जारी करने से पहले किंग्डन को दिखाई, जिसके बाद किंग्डन ने अडानी के शेयरों में शॉर्ट-सेलिंग की तैयारी कर ली। रिपोर्ट जारी होने के बाद शॉर्ट-सेलिंग हुई और शेयर का मूल्य 59 प्रतिशत गिर गया।

क्या था अडानी के खिलाफ हिंडनबर्ग रिपोर्ट में रिपोर्ट ऐसे समय पर जारी की गई थी, जब अडानी समूह एक फॉलो-ऑन पब्लिक ऑफर (एफपीओ) के बीच में था. बाद में समूह को एफपीओ वापस लेना पड़ा था. सेबी के नोटिस के मुताबिक, रिपोर्ट छपने से कुछ ही दिन पहले 39;के. इंडिया अपॉरच्यूनिटीज फंड लिमिटेड - क्लास एफ39; नाम की एक विदेशी पोर्टफोलियो निवेश कंपनी (एफपीआई) ने भारत में ट्रेडिंग के लिए खाता खोला और अडानी के शेयरों में ट्रेडिंग शुरू की। एक भारतीय कंपनी की भी है भूमिका फिर इसी एफपीआई ने रिपोर्ट छपने के बाद अपने सारे शेयर बेच दिए और 183.24 करोड़ का मुनाफा कमाया।

सेबी ने अपने नोटिस में इस एफपीआई का पूरा नाम नहीं बताया है, लेकिन हिंडनबर्ग ने अपने जवाब में बताया कि यह कोटक बैंक का एफपीआई था जिसका किंग्डन ने अडानी के खिलाफ दांव लगाने के लिए इस्तेमाल किया। सेबी ने हिंडनबर्ग को 21 दिनों के अंदर जवाब देने के लिए कहा है। कारण-बताओ नोटिस जारी करने के बाद अगर सेबी आरोपी को दोषी पाता है, तो उसपर जुर्माना लगा सकता है और भारतीय शेयर बाजार में भाग लेने से प्रतिबंधित कर सकता है। हिंडनबर्ग ने अपनी वेबसाइट पर छपे लेख में सेबी के सभी आरोपों से इनकार किया है और सेबी पर ही सवाल उठाए हैं. कंपनी ने कहा है कि उसने पहले ही बताया था कि वह अडानी के शेयरों में शॉर्ट-सेलिंग कर रही है।

धार्मिक आयोजन में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मालूम था कि इस स्थान पर इतनी बड़ी तादाद में लोग एकत्रित हो रहे हैं तो उन्होंने उनकी सुरक्षा के लिए क्या इंतजाम किये। उन्होंने आरोप लगाया कि इस घटना के लिए प्रदेश सरकार जिम्मेदार है। बसपा अध्यक्ष मायावती ने कहा कि हाथरस जिले में हुई इस भगदड़ की दुखांतिका में बड़ी संख्या में लोगों की जान चली गई। आगरा में एक बौद्ध भीम कथा के दौरान एक युवक की हत्या कर दी गई। ये अति दुर्भाग्यपूर्ण व दु:खद घटनाएं हैं। सरकार को इन घटनाओं की जांच करनी चाहिए और उचित कार्यवाही करनी चाहिए।

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कहा कि वे यह जानना चाहते हैं कि राज्य प्रशासन इस प्रकार की आपात परिस्थिति के लिए तैयार क्यों नहीं था? उन्होंने यह भी कहा कि इस बारे में सूचित किया गया है कि अस्पतालों में पर्याप्त मात्रा में डॉक्टर्स व उचित सुविधाएं घायलों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। हम मृतकों के लिए न्याय की मांग करते हैं।

दुर्घटना के बाद घायलों को इलाज के लिए आसपास के अस्पतालों में भर्ती करवाया गया है। अन्य जिलों से भी डॉक्टर बुलाए गए हैं। दवा, ग्लूकोज का स्टाक मंगाया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार हाथरस के सिकंदराराऊ कोतवाली क्षेत्र के गांव फुलराई में भोले बाबा का प्रवचन का कार्यक्रम चल रहा था। इसी दौरान उम्मीद से ज्यादा भीड़ आ गई थी। एक अनुमान के अनुसार सवा लाख लोग पहुंच गए थे। इसी दौरान लोग भीड़ के कारण परेशान होने लगे। भीड़ और गर्मी के कारण लोग बेहोश होने लगे तो भगदड़ मच गई। इसमें लोग जमीन पर गिरे तो उन्हें कुचलते हुए अन्य लोग निकलने लगे। सूचना पर पहुंचे पुलिस और प्रशासन के अफसरों ने सैकड़ों गंभीर लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा में हादसे पर दुख जताया है।

'नेहरु ने पूरा जोर लगाकर अंबेडकर को चुनाव हरवाया था'

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस का इतिहास ऐसी दलित विरोधी घटनाओं से अटा पड़ा है

- **मोदी ने कहा कि देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की कैबिनेट से, तत्कालीन कानून मंत्री बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के इस्तीफे की चर्चा करते हुए कहा कि, अंबेडकर ने दलितों की उपेक्षा की वजह से उनकी कैबिनेट से इस्तीफा दिया था**

नई दिल्ली, 2 जुलाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा का जवाब देते हुए मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी दलित और पिछड़ा विरोधी है। उसका इतिहास ऐसी दलित विरोधी घटनाओं से अटा पड़ा है। प्रधानमंत्र मोदी ने देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की कैबिनेट से तत्कालीन कानून मंत्री बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के इस्तीफे की चर्चा करते हुए कहा कि अंबेडकर ने दलितों की उपेक्षा की वजह से उनकी कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, ''बाबासाहब ने नेहरू कैबिनेट से इस्तीफा देते समय जो कारण बताए थे, वह इनकी मानसिकता को दर्शाते हैं। बाबासाहब ने कहा था कि अनुसूचित जातियों की उपेक्षा के कारण अपने आक्रोश को रोक नहीं सका। नेहरूजी ने बाबासाहब का राजनीतिक जीवन खत्म करने के लिए पूरी ताकत लगा दी थी। पहले षड़यंत्र पूर्वक चुनाव में हरवाया गया। इतना ही नहीं, इस पराजय का जश्न मनाया गया।''

पीएम मोदी ने आरोप लगाया कि पंडित नेहरू ने पूरा जोर लगा दिया था कि अंबेडकर चुनाव नहीं जीत सकें। उन्होंने कहा कि पंडित नेहरू की दलित विरोधी मानसिकता की वजह से ही अंबेडकर ने उनके मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया था। पीएम इतने पर ही नहीं रुके। उन्होंने नेहरू के बाद लंबे समय तक सत्ता में रहीं उनकी बेटी और भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पर भी हमला बोला और कहा कि इंदिरा गांधी भी दलित विरोधी थीं।

पीएम मोदी ने कहा कि आपातकाल के समय बिहार के बड़े दलित नेता जगजीवन राम के पीएम बनने की संभावना थी लेकिन इंदिरा गांधी ने उन्हें किसी भी कीमत पर पीएम नहीं बनने देने का संकल्प लिया था। पीएम ने कहा, ''इमरजेंसी के बाद जगजीवन राम के पीएम बनने की संभावना थी। इंदिरा गांधी ने ये पक्का किया कि जगजीवन राम किसी भी कीमत पर पीएम न बन पाएं।

एक किताब में लिखा है कि अगर जगजीवन राम पीएम बन गए तो वे हटेंगे नहीं।'' उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने चौधरी चरण सिंह के साथ भी यही व्यवहार किया था। पीएम ने कहा कि बिहार के ही पिछड़े समुदाय के नेता रहे सीताराम केसरी के साथ भी कांग्रेस ने अपमानजनक व्यवहार किया था, जबकि केसरी कांग्रेस के अध्यक्ष थे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस आरक्षण विरोधी रही है। उसनें मंडल कमीशन की रिपोर्ट लंबे समय तक दबा रखी थी लेकिन वीपी सिंह की सरकार ने उसे लागू किया।

ए.सी.बी. ने हाई ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एसीबी की रिपोर्ट में अदालत को बताया गया कि उन्होंने प्रारंभिक जांच में हेरिटेज मेयर मुनेश गुर्जर व उनके पति सहित अन्य के खिलाफ जुर्म प्रमाणित मान लिया है। वहीं मेयर मुनेश के खिलाफ अभियोजन मंजूरी की फाइल प्रमुख यूडीएच सचिव के पास भेज रखी है, लेकिन वहां से अभी तक अभियोजन की मंजूरी नहीं मिली है। इस संबंध में आगामी दिनों में मीटिंग भी होने वाली है।

याचिका में अधिवक्ता अनुराग शर्मा ने कहा कि रिश्वत मामले में एसीबी ने मेयर के पति व मेयर सहित अन्य के खिलाफ जांच पूरी कर उसे दोषी माना है। एसीबी ने मुनेश के खिलाफ अभियोजन मंजूरी की फाइल राज्य सरकार के पास भेज रखी है। लेकिन राज्य सरकार के पास अभियोजन की यह फाइल पेंडिंग चल रही है। इसलिए राज्य सरकार को निर्देश दिया जाए कि वह अभियोजन मंजूरी से जुड़े मामले को जल्द निस्तारित करे, ताकि एसीबी अपना अंतिम नतीजा संबंधित कोर्ट में पेश कर सके। ज्ञातव्य है कि हेरिटेज मेयर के पति सुशील गुर्जर की ओर से नगर निगम के पट्टे जारी करने की एवज में रिश्वत मांगने से जुड़े मामले में एसीबी की कार्रवाई के बाद राज्य सरकार ने मुनेश को निलंबित कर दिया था। इस निलंबन आदेश पर हाईकोर्ट ने रोक लगा दी थी। इसके बाद राज्य सरकार ने निलंबन आदेश वापस ले लिया था। बाद में राज्य सरकार ने जांच के बाद मुनेश गुर्जर को 22 सितंबर के आदेश से दुबारा निलंबिन कर दिया था, लेकिन हाईकोर्ट ने दिसंबर 2023 के आदेश से मुनेश का निलंबन रद्द कर दिया था।

दो हजार के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नोट चलन में रह गए थे। रिजर्व बैंक ने कहा है कि 2000 रुपये के बैंकनोट वैध मुद्रा बने रहेंगे।

केंद्रीय बैंक ने दिनांक पिछले वर्ष 19 मई को 2000 रुपये मूल्यवर्ग के बैंकनोट चलन से वापस लेने की घोषणा की घोषणा की थी और लोगों ने नोट बैंकों और रिजर्व बैंक की शाखाओं में नियमानुसार वापस जमा करने या बदलवाने का अवसर दिया है।

2000 रुपये के बैंकनोटों को जमा करने और/ या बदलने की सुविधा 7 अक्तूबर 2023 तक देश की सभी बैंक शाखाओं में उपलब्ध थी।

गत नौ अक्टूबर 2023 से, भारतीय रिज़र्व बैंक के निर्गम कार्यालय, व्यक्तियों/ संस्थाओं से उनके बैंक खातों में जमा करने के लिए भी 2000 रुपये के बैंकनोट स्वीकार कर रहे हैं। इसके अलावा, जन सामान्य अपने बैंक खातों में जमा करने हेतु देश के किसी भी डाकघर से भारतीय डाक के माध्यम से भारतीय रिज़र्व बैंक के किसी भी निर्गम कार्यालय को 2000 रुपये के बैंक नोट भेज रहे हैं।

'वर्ल्ड बैंक की कुल ''पेडअप'' रकम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सभी समृद्ध उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं सहित सभी विकसित देशों में ऐसी विशालकाय धन सम्पदा बढ़ती जा रही है। स्टॉक मार्केट जैसे-जैसे बढ़ रहे हैं, अति धनाढ्य लोग बिना कोई मेहनत किए और ज्यादा अमीर बनते जा रहे हैं।

विचार कीजिए! भारत में क्या हो रहा है। स्टॉक मार्केट्स की चाल ऐसी है जैसे कि तेजी का कोई अंत ही ना हो। वे ऊपर और ऊपर चढ़ते जा रहे हैं, और तेजड़िए अपनी पूरी लय में हैं, जिसका मतलब है कि भारत के अति धनाढ्य और अधिक धनाढ्य होते जा रहे हैं।

एक उदाहरण लीजिए। इन्फोसिस के संस्थापक एवं प्रधान नीति निर्माता एन.आर. नारायणमूर्ति ने अपने नवजात नाती को 293 मिलीयन डॉलर के स्टॉक गिफ्ट किए। यह छोटा बच्चा घुटनों के बल चलने से पहले ही बेहद अमीर है। लेकिन इस राशि पर टैक्स नहीं लगाया जा सकता क्योंकि यह बच्चा अपने शेयर्स को बेचने की जल्दबाजी में नहीं है।

अम्बानी और अडानी दिनों दिन अमीर होते जा रहे है। उन्हें अपनी धन-सम्पदा पर गर्व है जो पूरी दुनिया में उनके समकक्षों को भी हतप्रभ कर रही है। अंबानी परिवार के पुत्र की शादी से पूर्व आलीशान पार्टियां आयोजित की गईं, जिसमें बिल गेट्स और बैजोस तक उपस्थित थे। अनंत अंबानी ने 66 करोड़ रुपये मूल्य की घड़ी पहन रखी थी, जिसने अमेरिका के एक सबसे अमीर आदमी का ध्यान आकृष्ट किया।

तथापि इनमें से कोई भी परिवार ऐसी चकाचौंध करने वाली सम्पत्ति पर कोई टैक्स नहीं दे रहा है। ये लोग बिना टैक्स दिए ही समृद्ध बनते जा रहे है, जबकि सामान्य आदमी अपना पेट काटकर टैक्स चुका रहा है।

एक बार फिर से विचार कीजिए सरकार इस बात की डींग हांक रही है कि उसे माह दर माह जी.एस.टी. का विशालकाय कलैक्शन प्राप्त हो रहा है। केन्द्र सरकार वित्तीय घाटा आरामदायक स्थिति में रख सकती थी। राज्य सरकारें जी.एस.टी. में अपना हिस्सा वसूल रही हैं, लेकिन जी.एस.टी. दे कौन रहा है। गरीब से गरीब व्यक्ति भी अपनी प्रत्येक खरीदारी पर जी.एस.टी. का भुगतान कर रहा है।

मामूली से बिस्कीट पर भी टैक्स लगता है। टैंट वाला किसी निर्धन व्यक्ति के घर हो रही शादी में लगाए गए झीने से शामियाने के लिए भी सर्विस टैक्स वसूल रहा है और यदि आप अपने पुत्र या पुत्री के अच्छे रिजल्ट की खुशी मनाने के लिए किसी रेस्त्रां में जाते हैं तो बिल चुकाते ही केन्द्र और राज्य सरकार भी उसमें एक गैर आमंत्रित अतिथि बन जाती है।

अति धनाढ्य लोगों के टैक्स के मुद्दे ने सोचने पर मजबूर कर दिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा अरबपतियों पर टैक्स लगाने की बात किए जाने के बाद ''द इकोनॉमिस्ट'' ने इस वित्तीय पहेली का मुद्दा उठाया। बाइडन सामाजिक योजनाओं के लिए धन उगाहने की बात कह रहे थे।

द इकोनॉमिस्ट ने कुछ खबरों का हवाला दिया है, जिनसे संकेत मिलता हैं कि सुपर रिच लोगों के पास स्टॉक मार्केट वैल्यूएशन के हिसाब से पूंजी की ऐसी बढ़त है, जिसे अनुभव नहीं किया जा सका, जिसका मूल्य 6 से 11 ट्रिलीयन डॉलर तक है। आज की तारीख में दुनिया की सबसे अधिक मूल्यवान कम्पनी ''एनविडिया'' के मालिक की सम्पत्ति में ऑर्टिफिशल इन्टैलीजैंस (ए.आई.) का क्रेज बढ़ने के साथ ही 100 बिलियन डॉलर का इजाफा हुआ। एनविडिया निर्मित चिप्स ए.आई. ऑपरेशन्स का एक अहम हिस्सा होती हैं।

टैक्स के कानूनों में वर्णित है कि शेयर मूल्यों में आई वृद्धि को जब तक प्रदत्त आय में ना बदला जाए, उस पर टैक्स नहीं लगाया जा सकता।

लेकिन इस प्रकार के टैक्स पर कोई गंभीर बहस छिड़वाने के उद्देश्य से हमें पहले इसका विरोध करना होगा। स्टॉक बाजार में मूल्यवृद्धि होती है, लेकिन मूल्यों में तेजी से गिरावट भी हो सकती है।

राज्यपाल ने मु.मंत्री ममता...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राजभवन की असामान्य घटनाओं से संबंधित खबरों पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक चुनाव प्रचार मीटिंग के दौरान राजभवन जाने को लेकर टिप्पणियां की थीं। उन टिप्पणियों से पूरे राज्य में हैरानी के साथ-साथ अफवाहों का बाज़ार गर्म हो गया था।

उसके बाद, संदेशखाली प्रकरण का विरोध करन वाले एक प्रमुख पैरोकार ने ममता बनर्जी विरोधी टिप्पणी करते हुए कहा था कि ''ममता बनर्जी जैसी एक बुजुर्ग महिला को यदि राजभवन में अस्मिता खोने का डर है तो आप उन जवान महिलाओं की प्रतिष्ठा के बारे में क्या कहेंगे जिनका संदेशखाली में यौन शोषण किया गया।

राज्यपाल द्वारा आज उठाए गए कदम के बारे में पूछने पर तृणमूल के कुणाल घोष ने अपेक्षाकृत एक मेल-मिलाप वाले अंदाज में कहा कि बेहतर होता यदि राज्यपाल मुख्यमंत्री के विरूद्ध मानहानि का केस दायर करने से परहेज करते। उन्होंने दावा किया कि मुख्यमंत्री ने तो प्राप्त खबरों के आधार पर ही टिप्पणियां की थीं।

उन्होंने स्पष्ट किया कि मुख्यमंत्री राज्य की पुलिस मंत्री भी है, इस नाते राज्य पुलिस को प्राप्त विभिन्न खबरों से उन्हें भी अवगत करवाया जाता है। उन्होंने पुलिस द्वारा दिए गए तथ्यों के आधार पर ही राज्यपाल और राजभवन के बारे में टिप्पणियां की थीं।

तृणमूल कांग्रेस के बहुत से नेताओं ने भी प्रदेश के राज्यपाल के बारे में आरोप लगाये थे। ममता बनर्जी ने राज्यपाल के विषय में उन रिपोर्टों को भी सार्वजनिक करने की धमकी दी थी, जो उन्होंने सुनी हैं तथा दिल्ली से प्राप्त हुई हैं।

यह धमकी राज्यपाल के मन में इस बात को बिठाने का एक अप्रत्यक्ष तरीका है कि उनके बारे में कुछ अज्ञात तथ्य उजागर कर दिये जायेंगे।

इस प्रकार, राज्यपाल को एक तरह से उकसाया गया कि वे मानहानि का मुकदमा दायर करें क्योंकि तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी सहित, पूरी पार्टी उनके खिलाफ बार-बार आरोप लगा रही है।

अभी यह अनिश्चित है कि इन कार्यवाहियों का अंतिम परिणाम क्या होगा।

लेकिन यह जरूर है कि राज्य की मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल के बीच के संबंधों में इस प्रकार का मोड़, बंगाल तो क्या, देश के किसी भी राज्य में, कभी नहीं देखा गया है।

6 आई.ए.एस....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जबकि रोहित गुप्ता को उद्योग वाणिज्य एवं कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी एवं आयुक्त निवेश संवर्धन ब्यूरो में आयुक्त लगाया है। आई.ए.एस. अधिकारी प्रकाश चंद्र शर्मा को मुख्यमंत्री का विशेष अधिकारी और हिमांशु गुप्ता को ग्रामीण अकृषि क्षेत्र विकास अभिकरण में प्रबंध निदेशक के पद पर लगाया गया है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908